फ़ौजी लड़कियाँ तथा अन्य कहानियाँ



चिनुआ अचेबे

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, जिसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है । भारत में लेखन-कला का संभवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख ।

नागार्जुनकोण्डा : दूसरी सदी ईसवी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

फ़ौजी लड़कियाँ

तथा

अन्य कहानियाँ

लेखक

चिनुआ अचेबे

अनुवादक

हरीश नारंग



साहित्य अकादेमी

Fauji Ladkian Tatha Anya Kahaniyan : Hindi translation by Harish Narang of Chinua Achebe's short stories in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1991), Rs. 40.

प्रथम संस्करण : 1991

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053

304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास 600 018

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,
दादर, बम्बई 400 014

109, जे. सी. मार्ग, बंगलौर 560 002

मूल्य : 40 रुपये

ISBN- 81-7201-171-7

लेज़र सैटिंग : **वैलविश पब्लिशर्स,**
पीतमपुरा, दिल्ली 110 034

प्रिंटर्स : संजय प्रिन्टर्स,
दिल्ली 110 032

क्रम

वोटर

रूफ़ुस ओकेके-संक्षेप में, रूफ़-अपने गाँव में बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति था। हालाँकि गाँव वाले साफ़ शब्दों में कहते नहीं थे लेकिन रूफ़ की लोकप्रियता उनकी उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक थी, जिसने आजकल के अधिकतर लोगों के विपरीत, शहर में काम के लिए, किसी भी तरह के काम के लिए, अपने गाँव को नहीं छोड़ा था। और रूफ़ गाँव का कोई लफ़ंगा भी तो नहीं था। हर एक को पता था कि उसने पोर्ट हारकोर्ट में एक साईकिल मरम्मत करने वाले के यहां दो साल शागिर्दी की थी और फिर स्वेच्छा से उसने एक उज्ज्वल भविष्य का त्याग करके अपने गाँव लौट कर उन्हें इस राजनैतिक माहौल में मार्ग दर्शन देने का फ़ैसला किया था। बात यह नहीं कि उमुओफ़िया को मार्गदर्शन की अधिक आवश्यकता रही हो। सारा गाँव पहले से ही समूचे रूप में पीपल्स अलायंस पार्टी के साथ था और उनके सुविख्यात सुपत्रों में से एक, माननीय मुखिया मारकस इबे पिछली सरकार में (और जो निश्चित रूप से नई बनने वाली सरकार भी थी) संस्कृति मंत्री भी थे। इसमें किसी को भी कोई सन्देह नहीं था कि माननीय मंत्री महोदय अपने चुनाव क्षेत्र से दुबारा चुने जायेंगे। उनका विरोध उस कहावती मक्खी के प्रयास की तरह था जो गोबर के ढेर को सरकाने का यत्न कर रही थी। कोई छुटभैया ही ऐसी हास्यास्पद हरकत कर सकता था जैसा कि इस बार हो रहा था।

जैसी कि आशा थी, रूफ़ आगामी चुनाव में माननीय मंत्री महोदय की सेवा में था। वह सभी स्तर के चुनावों— गाँव, स्थानीय सरकार या राष्ट्रीय—का सचमुच में विशेषज्ञ बन गया था— वह मतदाताओं के मूड को किसी भी समय परख सकता था। उदाहरण के लिए,

उसने महीनों पहले मिनिस्टर को उमुओफ़िया की सोच में पिछले चुनावों से लेकर अब आये मूल परिवर्तन के बारे में आगाह कर दिया था ।

गाँव वालों ने इन पाँच वर्षों में देखा-भाला था कि कितनी जल्दी और कितनी प्रचुरता में राजनीति से मंत्री महोदय को धन-संपदा, मुखिया का खिताब, डॉक्टरेट की उपाधियाँ तथा अन्य सम्मान प्राप्त हुए थे जिनमें से कुछ का कारण गाँव वालों को अभी स्पष्ट नहीं हुआ था; वे अभी अपेक्षा करते थे कि डॉक्टर का कर्त्तव्य मरीज़ को ठीक करना है । खैर, यह सम्मान उस व्यक्ति को जिसे उन्होंने अपने वोट पाँच वर्ष पूर्व स्वेच्छा से दिये थे इतनी आसानी से प्राप्त हुए थे कि वे अब इस मामले को अलग कोण से देखने के लिए तैयार थे ।

उनका तर्क था कि अभी कुछ ही समय पहले तक मारकस इबे एक मिशन स्कूल का अध्यापक था और वह भी कोई अधिक सफल अध्यापक नहीं । फिर गाँव में राजनीति का प्रवेश हुआ था और समझदारी दिखाते हुए उसने उसमें प्रवेश पा लिया था । कुछ का कहना था कि यह ठीक उस समय हुआ जब उनके यहां एक अध्यापिका के गर्भवती हो जाने के कारण वे नौकरी से निकाले जाने वाले थे । आज वह माननीय मुखिया थे । उनके पास दो बड़ी कारें थीं और उन्होंने अभी इस इलाके के सबसे भव्य भवन का निर्माण समाप्त किया था । लेकिन यह भी स्पष्ट कर दिया जाना चाहिये कि इन सब सफलताओं से मारकस का दिमाग चढ़ नहीं गया था जैसा कि हो सकता था । वह जनता के आदमी ही बने रहे । जब भी संभव होता वह राजधानी के अच्छे जीवन को छोड़कर गाँव लौट आते जहाँ न तो नल से बहता पानी था और न ही बिजली । हालाँकि उन्होंने हाल ही में एक निजी संयंत्र लगाया था जिससे उनके घर को बिजली मिलती थी । उस पक्षी के विपरीत जो खा-पीकर अपनी निजी समता को चुनौती देने निकल पड़ता था, मारकस को अपने सौभाग्य के उद्गम के बारे में खूब पता था । मारकस ने अपने गाँव के सम्मान में अपने भवन का नाम

उमओफ़िया मैंशन्स रख छोड़ा था तथा जिस दिन आर्कबिशप ने उसका गृह प्रवेश कराया था उस दिन उन्होंने गाँव वालों के अतिथि-सत्कार के लिए पांच भैंसे और अनगिनत बकरे कटवाये थे ।

हर व्यक्ति उनका गुणगान कर रहा था । एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा , "हमारा सुपुत्र अच्छा आदमी है । वह उस ओखली की तरह नहीं है जो खाद्य-पदार्थ आते ही पीठ के बल लेट जाता है"। लेकिन जब प्रीति भोज समाप्त हो गया तो गाँव वालों ने कहा कि वे अब तक मत-पत्र की ताकत का सही मूल्यांकन नहीं कर पाये थे लेकिन अब वे ऐसा नहीं करेंगे । माननीय मुखिया मारकस इबे भी असावधान नहीं थे । उन्होंने पाँच महीने का वेतन अग्रिम ले लिया था, कुछ सौ पाऊंडों को चमकदार शिलिंगों में परिवर्तित करा लिया था और अपने चुनाव-अभियान वाले लड़कों को जूट की छोटी-छोटी सुन्दर थैलियों से लैस कर दिया था । दिन में वह स्वयं भाषण देते, रात को उनके समर्थक कानाफूसी का अभियान चलाते । रूफ इन समर्थकों में सबसे विश्वसनीय था ।

"हमारे गाँव से एक मिनिस्टर हैं, हमारा ही एक सुपुत्र", उसने ओगबुएफ़ी एज़ैनवा—जो एक उच्च पारम्परिक ख़िताब से सम्मानित थे—के घर में गाँव के बुज़ुर्गों के एक समूह को सम्बोधित करते हुए कहा, "एक गाँव को इससे अधिक और क्या सम्मान मिल सकता है, ? क्या आपने कभी पूछा है कि हमें ही इस विशेष सम्मान के लिए क्यों चुना गया है ? मैं बताता हूँ : ऐसा इसलिए है क्योंकि पी ए पी के नेता हमारी तरफ़दारी करते हैं । हम अपना मत-पत्र मारकस की पेटी में डालें या न डालें, पी ए पी सत्ता में बनी रहेगी । ज़रा पानी के नल का तो ध्यान करो जिसका उन्होंने वादा कर रखा है...." । रूफ़ और उसके सहयोगी के अलावा कमरे में पाँच बुज़ुर्ग मौजूद थे । बीच में रखी एक पुरानी लालटेन अपनी टूटी, कालिख-भरी शीशे की चिमनी में से पीली-सी रोशनी फैला रही थी । बुज़ुर्ग लोग काफ़ी नीचे स्टूलों पर बैठे थे । नीचे फ़र्श पर, ठीक उनके सामने, दो- दो शिलिंग पड़े हुए थे । बाहर चाँद गम्भीरता से चमक रहा था ।

"हमें तुम्हारी बात पर पूरा विश्वास है", एज़ैनवा ने कहा । "हम सब, हर एक, अपना पत्र मारकस के लिए डालेंगे । मारकस से कह दो कि हमारा वोट उसके लिए है, और हमारी पत्नियों का भी । लेकिन हम कहना चाहते हैं कि दो शिलिंग तो शर्म की बात है" । उसने लैम्प नज़दीक लाकर सिक्कों की ओर झुकाया यह देखने के लिए कि कहीं वह पैसों के मूल्य के बारे में ग़लती तो नहीं कर रहा है । "हाँ, दो शिलिंग तो बहुत ही शर्म की बात है । अगर मारकस ग़रीब होता—भगवान न करे—तो मैं सबसे पहले अपना वोट उसे मुफ़्त ही दे देता, जैसा कि मैंने पहले किया था । लेकिन आज मारकस बड़ा आदमी है और अपने काम बड़े आदमियों जैसे करता है । हमने कल उससे पैसा नहीं माँगा था ; हम कल उससे पैसा नहीं माँगेंगे । लेकिन ज़रूरत की सारी लकड़ी काटे बिना नीचे उतरने की बेवकूफ़ी नहीं करेंगे"।

रूफ़ को मानना पड़ा । पिछले कुछ दिनों से वह स्वयं ज़रूरत की काफ़ी लकड़ी जुटा रहा था । अभी कल ही उसने मारकस से उनके महँगे वस्त्रों में से एक की माँग की थी और ले भी लिया था । पिछले इतवार को जब उसने मिट्टी के तेल से चलनेवाले रैफ़्रिजरेटर में से बीयर की पाँचवी बोतल निकाली थी तो मारकस की पत्नी ने (वही अध्यापिका जिसके कारण वह मुसीबत में फँसने वाले थे) ऐतराज़ किया था (जैसी कि उसकी आदत थी); उनके पति ने उन्हें तुरन्त सबके सामने अच्छी तरह झाड़ा था । और इस सब के अलावा, इन्हीं दिनों रूफ़ ने एक ज़मीन का केस भी जीता था क्योंकि वह झगड़े के स्थल पर ड्राईवर-चलित गाड़ी में बैठ कर पहुँचा था । इसीलिए वह गाँव के बुज़ुर्गों की लकड़ी जुटाने की बात को समझ सकता था ।

"ऑल राइट", उसने अंग्रेज़ी में कहा और फिर ईबो में बात कहने लगा, "हमें छोटी-छोटी बातों पर तक़रार नहीं करनी चाहिए" । वह खड़ा हुआ और अपने वस्त्र ठीक किये । फिर प्रसाद-बाँटते पुजारी की तरह झुका और हर आदमी को एक-एक शिलिंग और दे दिया; फ़र्क़ सिर्फ़ यह था कि उसने वह उनकी हथेलियों

पर रखने की बजाय उनके सामने फ़र्श पर रख दिया । आदमियों ने, जिन्होंने अब तक अपने सामने रखी चीज़ों को छुआ तक नहीं था, अपने सिर 'न' में हिला दिये । रूफ़ फिर उठा और हर एक आदमी को एक-एक शिलिंग और दिया ।

"बस अब मेरे पास और नहीं है," उसने चुनौती देते हुए कहा, जिसका सफ़ेद झूठ होते हुए भी असर हुआ । बुज़ुर्ग भी जानते थे कि बिना शालीनता खोये वे कितनी दूर तक जा सकते थे । इसलिए जब रूफ़ ने जोड़ा, "जाइये, अब आप चाहें तो अपना वोट विरोधी के पक्ष में डालें !" तो उनमें से हर एक ने भाषण झाड़ कर उसे शान्त कर दिया । आख़िरी आदमी के बोलने तक यह संभव हो गया था कि बिना आत्म-सम्मान खोये वे फ़र्श पर अपने सामने रखे पैसों को उठा सकें ।

रूफ़ ने जिस विरोधी का ज़िक्र किया था वह थी प्रोग्रेसिव ऑर्ग्रेनाइज़ेशन पार्टी (पी ओ पी) जिसका गठन समुद्र के किनारे वाले आदिवासियों ने, उन्हीं के शब्दों में, "स्वयं को राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक सर्वनाश से बचाने के लिये किया था"। हालाँकि यह स्पष्ट था कि यहाँ पार्टी का बिल्कुल भी 'चान्स' नहीं था लेकिन फिर भी, मूर्खतावश, वह पी ए पी के विरुद्ध सीधे संघर्ष में कूद पड़ी थी; कुछ स्थानीय ठगों को गाड़ियाँ तथा लाउडस्पीकर लगाकर इधर-उधर जाकर शोर मचाने को कहा था । ठीक से तो कोई नहीं जानता था कि पी ओ पी ने उमुओफ़िया में कितना पैसा झोंक दिया है लेकिन कहा जा रहा था कि बहुत अधिक है । इस-में कोई शक नहीं था कि उनके स्थानीय अभियान चलानेवाले मालामाल हो जायेंगे ।

रूफ़ के शब्दों में, कल रात तक "सब कुछ योजनानुसार चल रहा था ।" फिर पी ओ पी अभियान दल के नेता ने उससे आश्चर्यजनक रूप से भेंट की । हालाँकि वह और रूफ़ एक दूसरे को खूब जानते थे, यहाँ तक कि उन्हें दोस्त भी कहा जा सकता था । उसकी भेंट औपचारिक तथा व्यावहारिक थी । शब्द बिल्कुल भी बर्बाद नहीं किये गये । उसने रूफ़ के सामने फ़र्श पर पाँच

पाऊंड रखे और कहा, "हमें तुम्हारा वोट चाहिए" । रूफ़ अपनी कुर्सी से उठा, बाहर के दरवाज़े तक गया, उसे ध्यान से बन्द किया और अपनी कुर्सी पर वापस लौट आया । इस छोटे-से काम के दौरान उसे इस सुझाव को तौलने का काफ़ी वक्त मिल गया था । बोलते समय उसकी आँखें फ़र्श पर पड़े नोटों पर से हटीं ही नहीं । कोकोआ की फ़सल काटते किसान की तस्वीर ने उस पर जादू-सा कर दिया लगता था ।

"तुम तो जानते हो मैं मारकस के लिए काम कर रहा हूँ", उसने हल्के से कहा । "यह बहुत ही बुरी बात होगी ।"

"जब तुम वोट डालोगे तो मारकस वहाँ नहीं होगा । हमें आज रात और भी बहुत सा काम करना है । तुम यह ले रहे हो या नहीं ?"

"यह बात इस कमरे से बाहर तो नहीं जायेगी ?" रूफ़ ने पूछा ।

"हमें वोटों की ज़रूरत है, गप-शप की नहीं ।"

"ऑल राइट", रूफ़ ने अंग्रेज़ी में कहा ।

उस आदमी ने अपने सहयोगी को इशारा किया और उसने लाल कपड़े से ढकी एक चीज़ निकाली और उस पर से कपड़ा हटाने लगा । वह मिट्टी के बर्तन में रखी एक छोटी-सी, भयावह-सी शक्ल थी, जिस पर पंख खुँसे थे ।

"यह टोना म्बान्ता से आया है । समझते ही हो इसका मतलब क्या है । कसम खाओ कि तुम अपना वोट मादूका को दोगे । वर्ना यह टोना तुम्हारी ख़बर लेगा ।"

रूफ़ ने जब टोने को देखा तो उसका दिल बैठ गया । वह सचमुच म्बान्ता की ऐसी चीज़ों की शोहरत जानता था । लेकिन वह जल्दी से फ़ैसला लेने में भी विश्वास करता था । अकेले में, मादूका के पत्र में डाले गये उसके इकलौते वोट का मारकस की निश्चित जीत पर क्या असर पड़ सकता था ? कुछ नहीं ।

"मैं अपना वोट मादूका के पक्ष में दूँगा । अन्यथा यह टोना मेरी खबर ले ।"

"बस, काफ़ी है", आदमी ने अपने साथी के साथ उठते हुए कहा,

जो चीज़ को फिर से ढक कर कार में ले जा रहा था । "तुम्हें पता है मारकस के विरुद्ध उसका कोई चांस नहीं है", रूफ़ ने दरवाजे पर कहा ।

"यही काफ़ी है कि इस बार उसे कुछ वोट मिलें । अगली बार अधिक मिलेंगे । लोग जानेंगे कि वह शिलिंग नहीं पाउंड देता है तो वे सुनेंगे ।" चुनाव का दिन । हर पाँच वर्ष में आने वाला वह महान दिन जब लोग अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं या सोचते हैं कि करते हैं । घरों की दीवारों, पेड़ों के तनों और टेलीग्राफ़ के खम्भों पर लगे मौसम से बदरंग हुए वे पोस्टर जो अभी भी साबुत बचे थे, पढ़ सकनेवालों को संदेश दे रहे थे । पीपल्स अलायंस पार्टी को वोट दो ! प्रोग्रेसिव ऑर्गेनाइज़ेशन पार्टी को वोट दो ! पी ए पी को वोट दो । पी ओ पी को वोट दो ! फटे हुए पोस्टर जितना भी संदेश दे सकते थे दे रहे थे ।

हमेशा की तरह माननीय मुखिया मारकस ईबे हर चीज़ शानदार ढंग से कर रहे थे । उन्होंने उमूरु से एक बढ़िया बैंड किराये पर लेकर वोटिंग बूथों से इतनी दूरी पर खड़ा कर रखा था कि सिर्फ़ कानून का उल्लंघन न हो । बहुत से गाँव वाले बूथों में जाने से पहले, अपने वोट-पत्र हाथ में लिए संगीत की लय पर नाच रहे थे । माननीय मुखिया मारकस ईबे अपनी लम्बी हरी गाड़ी के 'मालिक की सीट' वाले कोने में बैठे मुस्करा रहे थे और सिर हिला रहे थे ! एक जागरूक गाँव वाला उनके पास आया, बड़े आदमी से हाथ मिलाया और पहले ही कह दिया "मुबारक हो !" फ़ौरन ही यह तरीक़ा बन गया । सैकड़ों प्रंशसकों ने मारकस से हाथ मिलाया और कहा, "मुबारक !"

रूफ़ और दूसरे संयोजक आगे-पीछे चहल कदमी कर रहे थे, वोटरों को आख़िरी मिनट तक सलाह दे रहे थे, पसीना बहा रहे थे ।

"भूलना मत", उसने गाँव की अनपढ़ औरतों के एक समूह से जो कि उत्साह और हँसी-ठट्ठे से उमड़ा पड़ रहा था कहा,

"हमारा निशान मोटर-कार है....।"

"वैसी ही जैसी में मारकस बैठे हैं ।"

"शुक्रिया, अम्मा", रूफ़ ने कहा । "यह वही कार है । जिस बक्से पर कार का निशान बना है वही आपका बक्सा है । आदमी के सिर वाले दूसरे बक्से की ओर देखना भी नहीं । वह तो उनके लिए है जिनका सिर फिर गया हो ।"

इस बात का जैसे ठहाके से स्वागत हुआ । रूफ़ ने तुरन्त एक छोटी सी व्यस्तता -पूर्ण नज़र मिनिस्टर की ओर डाली तथा शाबाशी की मुस्कराहट हासिल की ।

"कार को वोट दो", वह चिल्लाया; उसकी गर्दन की सभी नसें फूल उठीं । "कार को वोट दो और तुम्हें उसमें सवारी मिलेगी !"

"हमें नहीं तो हमारे बच्चों को तो ज़रूर मिलेगी", उसी तेज़ बूढ़ी ने कहा ।

बैंड ने एक नई धुन छेड़ी ! "सवारी कर सको तो पैदल क्यों चलो...!"

सतही शान्ति और विश्वास के बावजूद माननीय मुखिया मारकस चीज़ों के विस्तार में जाने के आदी थे । उन्हें पता था कि उनकी विजय, जैसा कि अख़बार भी कह रहे थे, महाविजय होगी, लेकिन फिर भी वह एक भी वोट नहीं खोना चाहते थे । इसलिए जैसे ही वोटरों की पहली भीड़ ख़त्म हुई उन्होंने तुरन्त अपने अभियान चलानेवाले लड़कों से कहा कि वे एक-एक करके जायें और अपने वोट डाल आयें ।

"रूफ़ तुम ही सबसे पहले जाओ", उन्होंने कहा ।

रूफ़ का दिल बैठ गया, लेकिन उसने किसी को अहसास नहीं होने दिया । सारी सुबह वह अपनी गहरी चिन्ता को एक सतही दौड़-धूप के मुखौटे में छुपाये रहा था जो कि उसके लिये असामान्य-सी थी । अब वह उछल-कूद वाली चाल में बूथों की ओर गया । प्रवेश द्वार पर एक पुलिस वाले ने ग़ैर-कानूनी चुनाव-पत्रों के लिए उसकी तलाशी लेकर उसे अन्दर जाने दिया । फिर चुनाव-अधिकारी ने उसे दोनों बक्सों के बारे में बताया । अब तक उसकी चाल में से उछल-कूद साफ़ ग़ायब हो चुकी थी । वह दबे

पाँव अन्दर घुसा और उसका सामना कार तथा सिर से हुआ । उसने जेब से अपना चुनाव-पत्र निकाला और उसे देखा । वह अकेले में भी मारकस को कैसे धोखा दे सकता था ? उसने वापिस जाकर उस आदमी के पाँच पाउंड लौटा देने का इरादा किया... पाँच पाउंड ! उसे तुरन्त लगा कि यह तो असंभव था । उसने उस टोने की क़सम खाई थी । नोट लाल-लाल थे और कोकोआ-किसान अपने काम में रत था ।

उस समय उसे पुलिस वाले की दबी आवाज़ सुनाई दी जो चुनाव-अधिकारी से पूछ रहा था कि वह आदमी अन्दर क्या कर रहा है । "ऊ का बच्चा देत रहिन ?"

बिजली की तरह एक विचार रूफ़ के दिमाग़ में कौंध गया । उसने चुनाव-पत्र को मोड़ा तथा मोड़ के निशान के साथ-साथ दो टुकड़ों में फाड़ कर, एक-एक आधा दोनों बक्सों में डाल दिया । उसने ध्यान से पहला आधा हिस्सा मादूका के बक्से में डाला और साथ ही कहा ? "मैं मादूका को वोट देता हूँ ।"

उन्होंने उसके अंगूठे पर न मिटनेवाली बैंगनी स्याही से निशान लगा दिया ताकि वह दुबारा न आ सके और वह बूथ से इतने ही उत्साह से बाहर गया जितने उत्साह से वह आया था ।

पागलपन

"मैडम, इस तरफ़," ऊँचा विग पहने, सतर्क सेल्ज़गर्ल ने जो सुपर-मार्केट में कैश मशीनों की क़तार में से एक सँभाले हुए थी, मधुर आवाज़ में कहा ।

मिसेज़ ऐमनिके ने अपनी भरी-हुई ट्रॉली धीरे-से उसकी ओर मोड़ ली ।

"मैडम, आप तो मेरी तरफ़ आ रही थीं", दूसरी मशीन पर लड़की ने शिकायत की । उसे लगा कि उसके साथ धोखा हुआ है ।

"ओह, सॉरी माई डियर । अगली बार ।"

"गुड ऑफ़्टरनून मैडम", लड़की ने उनकी ख़रीद को काउंटर पर उतारते हुए मीठी आवाज़ में कहा ।

"कैश या अकाउंट में, मैडम ?"

"कैश ।"

उसने बिजली की फ़ुर्ती से कीमतों के बटन दबा कर तुरन्त फ़ैसला सुना दिया । नौ पाउंड, पन्द्रह और छह । मिसेज़ ऐमनिके ने अपना हैंडबैग खोला, उसमें से एक पर्स निकाला, ज़िप खोली और दो साफ़ कड़कते हुए पाँच पाऊंड के नोट निकाले । लड़की ने फिर बटन दबाये और मशीन से एक कैश-ट्रे बाहर निकाली । लड़की ने मैडम के नोट रख लिए और उन्हे खुले पैसे पकड़ाते हुए एक फुट लम्बी रसीद दे दी । मिसेज़ ऐमनिके ने लम्बे पर्चे के निचले हिस्से पर नज़र डाली जहाँ पर मशीन ने उनके ख़र्च के कुल योग के साथ "धन्यवाद, फिर आइये" के शब्द छाप दिये थे । उन्होंने सिर हिलाया ।

अब पहली मुश्किल पेश आई । मैडम की ख़रीद को कार्टन में रख कर बाहर खड़ी उनकी गाड़ी तक ले जाने के लिये कोई भी नहीं था ।

"कहाँ हैं ये लड़के सब ?" लड़की ने मुसीबत-भरी आवाज़ में कहा ।

"माफ़ कीजिए, मैडम, हमारे बहुत-से सामान ढोनेवाले चले गये हैं । इस मुफ़्त प्राइमरी पढ़ाई के नाते...जॉन !" जैसे ही उसकी नज़र बचे हुओं में से एक पर पड़ी वह ज़ोर से चिल्लाई । "आकर मैडम का सामान पैक करो ।"

जॉन चालीस वर्षीय 'लड़का' था जो लँगड़ा कर चलता था और जिसे सुपर मार्केट के एयरकन्डीशन्ड वातावरण में भी पसीना आ रहा था । चीजें ख़ाली कार्टन में डालते हुए वह ज़ोर-ज़ोर से शिकायत करने लगा ।

"हम मैनेजर से जाकर कह देंगे कि ऐसे घटिया काम के लिए किसी दूसरे आदमी को रख लें ।"

"तुम कहते क्यों नही कि मुफ़्त प्राइमरी में मत पढ़ने जाओ", विगवाली लड़की ने मज़ाक किया ।

"ठीक है लेकिन फोकट में पिराइमरी के लिए हम कोई मर थोड़े न रहे हैं ।"

बाहर कार-पार्क में उसने मिसेज़ ऐमनिके की स्लेटी रंग की मर्सडीज़ के बूट में कार्टन को रख दिया । फिर सीधे खड़े होकर इन्तज़ार किया । उन्होंने अपना हैंडबैग खोला, फिर पर्स । एक उँगली से बहुत-से सिक्कों को इधर-उधर किया । एक तीन-पैनी का सिक्का ढूँढ़ निकाला, दो उँगलियों में पकड़कर उसे बाहर खींच निकाला और सामान ढोने वाले की हथेली पर गिरा दिया । वह कुछ देर तक हिचकिचाया और फिर बिना कुछ कहे लँगड़ाता हुआ चला गया ।

मिसेज़ ऐमनिके ने छोटे लड़कों की जगह काम करनेवाले इन बूढ़ों की कभी परवाह नहीं की । चाहे आप इन्हें कुछ भी दे दो, ये कभी सन्तुष्ट नहीं होते । इस शिकायती लूले को ही लो । एक छोटे-से कार्टन को कुछेक गज़ लाने के लिए इसे क्या चाहिए ? यही तो किया है मुफ़्त प्राइमरी शिक्षा ने । घरों के लिए इसने और भी बुरा किया है । स्कूल-वर्ष की शुरूआत से अब तक मिसेज

ऐमनिके तीन नौकर गँवा चुकी थीं जिनमें उनकी बेबी-नर्स भी थी । बेबी-नर्स की समस्या सबसे कठिन थी । एक काम काजी महिला अपने सात महीने के बच्चे का क्या करे ?

लेकिन समस्या ज़्यादा देर तक नहीं बनी रही । दिवालिया हो जाने के डर से सरकार ने एक ही सत्र के बाद स्कीम वापिस ले ली । लगता था सरकार ने विशेषज्ञों की सलाह पर शुरू में आठ सौ हज़ार बच्चों के लिए योजना बनाई थी । लेकिन स्कूल के पहले दिन ही पन्द्रह सौ हज़ार बच्चे स्कूलों में हाज़िर हो गये । बाकी कहाँ से आये ? क्या विशेषज्ञों ने सरकार को गुमराह किया था ? रेडियो पर अपने इंटरव्यू में मुख्य स्टेटिसशियन ने ग़लत हिसाब के आरोप को बकवास बतलाया । गड़बड़ यह थी कि कुछ बेईमान लोगों ने आस-पास के राज्यों से हज़ारों की तादाद में बच्चे लाकर उन्हें अवैध रूप से दाखिल करा दिया था जो साफ़ तौर पर तोड़-फोड़ का केस था ।

कारण जो भी रहा हो, सरकार ने सारी योजना रद्द कर दी थी । 'न्यू एज' ने अपने सम्पादकीय में प्रधानमंत्री की सूझ-बूझ तथा हौसले की तारीफ़ की लेकिन साथ ही कहा कि अगर सरकार ने पहले ही कुछ जानकार और ज़िम्मेदार लोगों की बात मान ली होती तो इस सारे शर्मनाक वाक़ये से बचा जा सकता था । और यह सच भी था क्योंकि 'न्यू एज' के ही पन्नों पर इन महानुभावों ने मुफ़्त शिक्षा के बारे में अपने शक और शुबहे का इज़हार किया था । अपने पन्नों में इस मामले पर साफ़-साफ़ बहस के दौरान अख़बार ने कहा था कि ऐसा वे लोगों के, राष्ट्र के हित में कर रहे थे । अपने प्रिय कठ-घोड़े पर सवार होकर अख़बार ने विदेशी पूँजी के स्वामित्व वाले अख़बार में किसी प्रकार की योग्यता न देखनेवाले अपने उन सब आलोचकों को चुनौती दी थी कि वे राष्ट्रीय प्रतिज्ञा तथा देश-प्रेम की इस प्रकार की एक भी, या इससे बेहतर कोई मिसाल दिखायें । लेकिन उनके किसी भी आलोचक ने इस चुनौती को स्वीकार नहीं किया था । 'न्यू एज' के प्रस्ताव को लोगों ने उत्साह से लिया और दस दिन के भीतर ही, प्रतिदिन दो या कभी-कभी

तो तीन लेख के हिसाब से बहुत-से ज़िम्मेदार लोगों —वकील, डॉक्टर, व्यापारी, इंजीनियर, सेल्ज़मैन, इंश्योरेंस-दलाल, यूनिवर्सिटी लेक्चरर आदि ने इस योजना की आलोचना की । उन्होंने कहा कि बच्चों की शिक्षा के ख़िलाफ़ कोई भी नहीं है लेकिन मुफ़्त शिक्षा का समय अभी नहीं आया है । किसी ने दलील दी कि अपनी सारी दौलत और ताकत के बावजूद अमेरिका ने भी अभी तक इसे शुरू नहीं किया है, हम तो और भी कम...।

मिस्टर ऐमनिके ने बच्चों जैसे उत्साह से इन लेखों को पढ़ा । "काश सरकारी अफ़सर भी अख़बारों में लिखने के लिए स्वतंत्र होते ", उन्होंने इन दस दिनों के दौरान अपनी बीवी से कम-से-कम तीन बार ऐसा कहा ।

"यह बुरा नहीं है लेकिन उसे बतलाना चाहिए था कि इस देश ने आज़ादी के बाद शिक्षा के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है क्योंकि माँ-बाप शिक्षा का महत्त्व समझते हैं और अपने बच्चों की स्कूल की फ़ीस प्राप्त करने के लिए वे हर प्रकार का बलिदान करने के लिए तैयार हैं । हम ऑलिवर ट्विस्टों का देश नहीं हैं ।"

लेकिन इस परिस्थिति में उनकी पत्नी इस सब बहस के लिए तैयार नहीं थी क्योंकि सभी कुछ अस्थायी था । मुफ़्त शिक्षा के प्रति उसके मन में कुछ अस्पष्ट, वैयक्तिक सन्देह था, बस इतना ही ।

"तुमने अख़बार देखा है ? माइक ने इस विषय पर क्या लिखा है ?" उनके पति ने एक दूसरे मौक़े पर कहा ।

"माइक कौन है ?"

"माइक ओगुडु ।"

"ओह, क्या कहता है वह ?"

"मैंने अभी पढ़ा नहीं है... ओ हाँ, सच को सच कहने में माइक पर पूरा भरोसा किया जा सकता है । देखो, कैसे शुरुआत की है : "मुफ़्त शिक्षा का मतलब है नंगा कम्युनिज़्म ।" यह तो सच नहीं है लेकिन माइक की विशिष्ट छाप सारे लेख में है । उसका विचार है कि कोई उसकी जहाज़-कम्पनी का राष्ट्रीयकरण कर

लेगा । वह भी कम्युनिज़्म से डरा हुआ है ।"

"लेकिन यहाँ कम्युनिज़्म चाहता कौन है ?"

"कोई नहीं । यही तो मैंने उस दिन क्लब में भी कहा था । लेकिन वह तो बहुत डरा हुआ है । एक बात जानती हो ? ज़्यादा पैसा होना भी बुरी बात है ।"

ऐमनिके परिवार में यह बहस उस दिन तक बौद्धिक स्तर पर ही रही जब तक एक दिन उनके 'छोटे छोकरे' ने, जो कि खानसामा की मदद करता था और स्टीवर्ड से काम सीख रहा था, ऐलान नहीं कर दिया कि, "उसे अपने बीमार बाप को देखने जाना है ।"

"तुम्हें कैसे पता चला कि तुम्हारा बाप बीमार है ?" मैडम ने पूछा ।

"मेरा भाई आकर मुझे बोला ।"

"तुम्हारा भाई कब आया ।"

"कल की शाम को ।"

"तुम उसे मुझसे मिलवाने क्यों नहीं लाये ?"

"मुझे कैसे मालूम मैडम उसके साथ मिलने को माँगता ?"

"तुम कल से क्यों नहीं बोले ?" मिस्टर ऐमनिके ने अख़बार से सिर उठाते हुए पूछा ।

"पहले हम सोचा घर नहीं जाऊँगा । लेकिन आज एक दिल बोला तुम उसे देखने घर जाओ । शायद वह काफ़ी ज़्यादा बीमार है...इसी के लिए बस..."

"ठीक है । जाओ । लेकिन कल दोपहर तक वापस आ जाना वर्ना..."

"मुझे कल तक तो ज़रूर वापस लौटना है ।"

वह लौट कर नहीं आया । मिसेज़ ऐमनिके बहुत नाराज़ हुईं । विशेषकर झूठ से । उन्हें नौकरों द्वारा बेवकूफ़ बनाया जाना अच्छा नहीं लगता था । "खुद को चालाक समझनेवाले इसी छुटके चूहे को ही देखो न । उसके पिछले दिनों के हाव-भाव से उन्हें शक़ हो जाना चाहिए था । अब वह ग़ायब हो गया था एक महीने की तनख़्वाह लेकर जिसे उसे नोटिस के बदले खो देना चाहिए

था । इससे यही साबित होता था कि इन लोगों पर दया दिखाने का कोई फ़ायदा नहीं ।

एक हफ़्ते बाद माली ने भी नोटिस दे दिया । उसने कुछ भी छुपाने की कोई कोशिश नहीं की । उसके बड़े भाई ने उसे संदेश भेजा था कि वह गाँव लौट आये और मुफ़्त शिक्षा के लिए खुद को रजिस्टर करा ले । मिस्टर ऐमनिके ने हँस कर उसे गाँव की इस बेवकूफ़ी-भरी अज्ञानता के बारे में समझाने की कोशिश की :

"मुफ़्त प्राइमरी शिक्षा बच्चों के लिए है । तुम जैसे बूढ़े को कौन स्कूल में दाखिल करेगा । कितनी उम्र है तुम्हारी ?"

"सर मैं पन्द्रह साल का हूँ ।"

"तुम तो तीन के हो", मिसेज़ ऐमनिके ने मजाक उड़ाया, "आओ चूची पियो ।"

"तुम पन्द्रह के नहीं हो", मिस्टर ऐमनिके ने कहा । "तुम कम-से-कम बीस के हो और कोई हेडमास्टर तुम्हें प्राइमरी स्कूल में भरती नहीं करेगा । अगर तुम कोशिश करना चाहते हो तो ज़रूर करो । लेकिन जाकर असफल होने के बाद वापस मत आना ।"

"सर मैं असफल नहीं होऊँगा", माली ने कहा । "हमारे गाँव के एक बुढ़वा मुझके बापू से भी बूढ़ा वह रजिस्टर को कर चुका है । वह मैजिस्ट्रेट कोर्ट को गया और उनसे पाँच शिलिंग दिया और कोर्ट उससे कसम उठवाई, जैसे जूजू में क़त्ल के ख़िलाफ़ में उठवाते हैं । वह तो चूहा को भी नहीं मार सकता है ।"

"खैर, तुम्हारी मर्ज़ी । तुम्हारा काम तो अच्छा रहा है लेकिन....."

"मार्क, यह सब लम्बी बहस किसलिए ? वह जाना चाहता है, उसे जाने दो ।"

"मैडम मैं नहीं कहता कि मैं ऐसे जाना चाहता है । लेकिन मेरा बड़ा भाई....."

"हम यह सुन चुके हैं । तुम अब जा सकते हो ।"

"लेकिन मैं आज को नहीं जाना माँगता। मैं एक हफ़्ते को नोटिस देता हूँ । और मैं मैडम के खातिर दूसरा माली ढूँढ़ता हूँ ।"

"नोटिस या दूसरे माली की चिन्ता मत करो । बस चले जाओ ।"

"मुझे तनख़्वाह अभी को मिलेगा या मैं दोपहर समय आऊँ ?"

"कौन-सी तनख़्वाह ?"

"मैडम, इस महीने को यह दस दिन जो काम किया हूँ ।"

"मुझे और गुस्सा मत दिलाओ । बस चले जाओ ।"

लेकिन मिसेज़ ऐमनिके के लिए असली सिरदर्द आना अभी बाकी था । दो दिन बाद जब वह सुबह तैयार हो रही थीं, अबीगेल, बेबी नर्स, आई, बच्चे को उनकी गोद में पटका और चली गयी । अबीगेल भी ! जो कुछ भी उसके लिए किया उसके बावजूद । अबीगेल जिसे कुछ भी नहीं आता था और जो सैनिटरी नैपकिन की जगह फटे-पुराने कपड़े इस्तेमाल करती थी, जो इतनी मूर्ख थी कि एक दिन उसने बच्चे को चुप कराने के लिए पानी का पूरा कटोरा पिला दिया था और उसमें थोड़ा-सा नमक भी डाल दिया था । अब वही अबीगेल लेडी बन गयी थी । वह सिलाई कर सकती थी, बेक कर सकती थी, ब्रा और साफ़ पैन्ट पहनती थी, पाउडर और सैन्ट लगाती थी और अपने बाल सीधे कर सकती थी । और अब वह जाने के लिए तैयार थी ।

उस दिन से ऐमनिके को 'मुफ़्त प्राइमरी' शब्दों से ही चिढ़ हो गयी, शब्द जो अब रोज़मर्रा की ज़बान का हिस्सा बन गये थे, ख़ासकर गाँवों में जहाँ उन्हें 'मुफ़्त प्राइमडू' कहा जाता था । उन्हें गुस्सा ख़ास तौर पर उस समय आता था जब लोग इसके बारे में मज़ाक करते थे । उनका जी चाहता था कि भावनाओं और सुरुचि की कमी के लिए इन लोगों के सिर पर मारा जाये । उन्हें अमेरिकियों तथा दूतावासों (विशेषकर अमेरिकी) से नफ़रत थी क्योंकि वे अपने पैसे के ज़ोर से बचे हुए अफ़्रीकी नौकरों को फुसला रहे थे । यह तब शुरू हुआ जब पता चला कि उनका माली स्कूल नहीं गया था लेकिन फ़ोर्ड-फ़ाउंडेशन के एक आदमी के यहाँ चला गया था जिसने सात पाउंड के अलावा उसे एक साईकिल भी ख़रीद दी थी और उसकी पत्नी के लिए सिलाई की मशीन ।

"वे क्यों ऐसा करते हैं ?" उन्होंने पूछा । उन्हें किसी जवाब की उम्मीद या ज़रूरत नहीं थी लेकिन फिर भी उनके पति ने उत्तर दिया ।

"क्योंकि", उन्होंने उत्तर दिया, "पीछे अमेरिका में वे नौकर नहीं रख सकते । और जब वे यहाँ आते हैं और देखते हैं कि नौकर कितने सस्ते हैं तो वे पागल हो जाते हैं । इसीलिए ।" तीन महीने बाद मुफ़्त प्राइमरी समाप्त कर दी गयी और स्कूलों में फ़ीस लौट आई । तब तक सरकार को समझ आ गई थी कि उसका बेवकूफ़ी भरा समाजवाद—यह नाम 'न्यू एज' ने दिया था—अफ़्रीकी परिस्थितियों में काम नहीं कर सकता था । यह शिक्षा मंत्री पर छींटा- कशी थी जो वाम-पन्थियों के प्रति अपनी सहानुभूति के लिए बदनाम थे और जो प्रभावशाली वित्तमंत्री के साथ सदा रस्साकशी में लगे रहते थे ।

"हम इस स्कीम को उस समय तक लागू नहीं कर सकते जब तक कि हम नये कर लगाने को तैयार न हों", वित्त मंत्री ने एक कैबिनेट मीटिंग में कहा ।

"तो ठीक है लगाओ टैक्स", शिक्षा मंत्री ने कहा, जिसका उनके साथियों ने मज़ाक उड़ाया, यहाँ तक कि स्थायी सचिवों ने भी, हालाँकि प्रोटोकोल के अनुसार उन्हें बहस या मज़ाक में हिस्सा नहीं लेना चाहिए था ।

"नहीं लगा सकते", वित्त मंत्री ने हँसी दबाते हुए प्यार से कहा । "मैं जानता हूँ कि मेरे माननीय मित्र को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि यह सरकार अपनी टर्म पूरी कर पाये या नहीं । लेकिन हम में से कुछ को इसकी परवाह है । मैं स्वयं कम-से-कम उस समय तक यहाँ बना रहना चाहूँगा जब तक कि अपना चुनाव-उधार न चुका लूँ..."

इसका ज़ोरदार ठहाकों और 'हियर, हियर' की आवाज़ों से स्वागत किया गया । बहस करने की क्षमता में शिक्षा-मंत्री वित्त मंत्री का मुक़ाबला क़तई नहीं कर सकते थे । सच तो यह है कि सारी कैबिनेट में प्रधानमंत्री समेत कोई भी वित्त मंत्री का मुक़ाबला नहीं कर सकता था ।

"हमें इस बारे में कोई ग़लतफ़हमी नहीं होनी चाहिए", उसने

अपने चेहरे और आवाज़ को गम्भीर बनाते हुए कहा, "कि अगर कोई हमारी मुसीबत की मारी जनता पर नये कर थोपने की बेवकूफ़ी करेगा..."

"मेरा ख्याल था कि अफ़्रीका में जनता होती ही नहीं है", शिक्षा मंत्री ने टोकते हुए कहा, जिसके कारण थोड़ी-सी, हल्की-सी हँसी हुई और एक-दो अन्य लोगों ने इसे मज़ाक के तौर पर लिया ।

"मुझे अपने माननीय मित्र के क्षेत्र में घुसपैठ करने पर दुख है; कम्युनिस्ट नारे होते ही हैं महामारी फैलानेवाले । लेकिन जैसा कि मैं कह रहा था, हमें नये करों के बारे में इतने हल्के-फुल्के ढंग से बात नहीं करनी चाहिए, जब तक कि हम सेना द्वारा कर-दंगों को दबवाने के लिए तैयार न हों । जीवन का एक सादा सच जो हमने काफ़ी कष्ट और अनिच्छा से सीखा है—और मुझे विश्वास नहीं है कि हम सभी ने इसे सीख लिया है—वह है कि लोग कर के विरुद्ध दंगे करते हैं लेकिन स्कूल की फ़ीस के विरुद्ध नहीं । कारण साफ़ है । हर एक, यहाँ तक कि कार-पार्क का दलाल भी जानता है कि स्कूल की फ़ीस किसलिए होती है । वह सुबह अपने बच्चों को स्कूल जाते हुए तथा दोपहर बाद वापस लौटते हुए देख सकता है । लेकिन आप उसे सामान्य करों के बारे में समझाइये तो वह तुरन्त सोचने लगता है कि सरकार उसका पैसा चुरा रही है । एक बात और : अगर कोई स्कूल की फ़ीस नहीं देना चाहता तो उस पर कोई बाध्यता नहीं है । आख़िर हमारे देश में लोकतांत्रिक समाज है । ज़्यादा-से-ज़्यादा यही होगा न कि उसका बच्चा घर पर ही रहेगा, जिस परिस्थिति पर उसे कोई ऐतराज़ नहीं है । लेकिन टैक्स की बात अलग है । चाहे कोई चाहता है या नहीं, कर उसे अदा करने ही होंगे । फ़र्क एकदम साफ़ है । इसीलिए भीड़ उपद्रव करती है ।"

कुछ लोगों ने 'हियर, हियर' कहा । कुछ अन्य ने राहत की साँस ली या सम्मति की । मिस्टर ऐमनिके जो वित्त मंत्री के प्रगाढ़ प्रशंसक थे और जो पालतू गधे की तरह सिर हिला रहे थे, ज़ोर से 'हियर, हियर' चिल्ला उठे जिस पर प्रधानमंत्री ने उन्हें आँखें तरेर कर देखा ।

फिर कुछ और बोर करनेवाले भाषण हुए तथा सरकार ने फ़ैसला किया कि मुफ़्त प्राइमरी शिक्षा को समाप्त न किया जाये, लेकिन जब तक सभी सम्बद्ध कारणों की जाँच न कर ली जाये उसे स्थगित कर दिया जाये ।

दस वर्षीय वैरोनिसा का तो दिल ही टूट गया । उसे तो स्कूल से लगाव हो गया था क्योंकि उसी के माध्यम से वह घर की नीरसता तथा दुष्कर कार्यों से भाग सकती थी । उसकी माँ जो लगभग निराश्रित विधवा थी सारा दिन खेत पर रहती थी और हाट के दिन हाट पर रहती थी तथा छोटे बच्चों की देख-रेख का काम उसने वैरो पर छोड़ रखा था । वास्तव में देख-रेख की ज़रूरत सबसे छोटे बच्चे को थी, जिसकी उम्र सिर्फ़ एक साल थी, बाकी दो जिनकी उम्र क्रमशः सात और चार साल थी, अपनी देख-भाल स्वयं कर सकते थे । पाम की गिरियाँ निकालने और खाने के लिए टिड्डियाँ पकड़ने की प्रक्रिया में व्यस्त वे वैरो के लिए कोई समस्या नहीं थे । लेकिन मेरी की बात कुछ और थी । वह दोपहर को फ़ो-फ़ो खिलाये जाने और सूप पिलाये जाने के बावजूद रोती रहती थी । यह सूप (जिसमें पानी मिलाया गया था) नाश्ते से बचा हुआ होता था । और नाश्ता पिछली रात के खाने का बचा हुआ हिस्सा होता था । चूँकि मेरी अभी पाम की गिरियाँ अपने आप नहीं चबा सकती थी, वैरो उन्हें आधा चबा कर उसे देती थी । लेकिन खाने, गिरियों तथा टिड्डियों और पानी के कटोरों के बावजूद मेरी सन्तुष्ट नहीं होती थी हालाँकि उसका पेट ड्रम की तरह मोटा और सख़्त हो जाता था और आईने की तरह चमकता रहता था ।

उनकी माँ मार्था अभागी थी । बहुत दिन पहले उसने सेंट मोनिका स्कूल में प्रारम्भिक विद्यार्थी के रूप में अच्छी शुरुआत की थी । स्कूल गोरी मिशनरी महिलाओं द्वारा अफ़्रीकी इवैंजलिस्टों की होने-वाली बीवियों की ट्रेनिंग के लिए खोला गया था । उन दिनों उसकी क्लास की अधिकतर छात्राओं ने अपने अध्यापकों के साथ ही ब्याह रचा लिए थे और आज वे पादरियों की बीवियाँ थीं, एक-दो तो बिशपों की भी । लेकिन अपनी टीचर मिस रॉबिन्सन के उत्साहित

करने पर उसने एक युवा बढ़ई से शादी कर ली थी जिसने ओनित्शा इंडस्ट्रियल मिशन में गोरे शिल्पी मिशनरियों के हाथों ट्रेनिंग पाई थी । इस ट्रेनिंग स्कूल को इस आशा से खोला गया था कि अगर काले लोगों को बचाया जाना है तो उन्हें दस्तकारी के साथ-साथ बाईबल भी जाननी होगी । (मिस रॉबिन्सन इस इंडस्ट्रियल मिशन के बारे में काफ़ी उत्साहित थीं और बाद में उन्होंने उसके प्रिंसिपल से शादी भी की) । लेकिन उन दिनों के इवैंजलिक्ल प्रोत्साहन के बावजूद बढ़ईगीरी उस तरह से सफल नहीं हुई थी जितना कि पादरी और अध्यापक का धन्धा । इसीलिए जब मार्था के पति की मृत्यु हुई (या जैसा कि उन मिशनरी दस्तकारों का कहना था, जब उसे उस भगवान द्वारा जो स्वयं धरती पर बढ़ई बना था, स्वर्ग प्रासादों में सेवा के लिए बुला लिया गया) तो उसे पूरी तरह बर्बादी की हालत में छोड़ गया । यह शादी तो शुरू से ही अशुभ थी । शादी के बाद उसे पूरे बीस साल इन्तज़ार करना पड़ा था अपनी पहली सन्तान का मुँह देखने के लिए । इसी कारण अब जब वह लगभग बूढ़ी हो चुकी थी, उसके बच्चे छोटे-छोटे ही थे और उसमें उनकी देखभाल की शक्ति नहीं रही थी । लेकिन उसे इस बात का शिक़वा नहीं था । वह तो खुश थी कि भगवान की दया से वह बाँझपन के श्राप और हर वक्त की शिकायत से बच गई थी । उसे जो शिकवा था वह यह कि मरने से पहले पाँच वर्ष तक बीमारी के कारण उसके पति के दायें हाथ को लकवा मार गया था । यह इम्तिहान बहुत ही भारी और मुश्किल था ।

वैरो के स्कूल छोड़ देने के कुछ दिन बाद ही मिस्टर मार्क ऐमनिके, जो उनके अपने ही गाँव से थे, उच्च अधिकारियों में से थे और राजधानी में रहते थे, मार्था से मिलने आये । उनकी मर्सीडिज़ 220 एस, मेन रोड के किनारे आकर रुकी और वह एक तंग रास्ते पर, जिस पर मोटर-कार नहीं जा सकती थी, पाँच सौ गज़ पैदल चल कर विधवा की झोंपड़ी पर पहुँचे । इतने बड़े आदमी के उसके घर आने का कारण मार्था की समझ में नहीं आया और सुपारी ढूँढ़ने के लिए घर-भर में दौड़ धूप करती हुई वह सोचती ही रही । लेकिन उन्होंने आजकल के लोगों की तरह यह गुत्थी स्वयं ही सुलझा दी ।

"हम अपने छोटे बच्चे की देखभाल के लिए एक लड़की की तलाश में हैं और आज मुझे किसी ने तुम्हारी लड़की के बारे में पूछने के लिए कहा..."

पहले तो मार्था तैयार ही नहीं थी, लेकिन जब बड़े आदमी ने उसे पहले वर्ष में लड़की की सेवाओं के लिए पाँच पाउंड देने की पेशकश की—साथ ही खाना, कपड़े और अन्य चीजें भी—तो वह पसीजने लगी ।

"मुझे पैसे की परवाह नहीं", उसने कहा, "लेकिन मेरी लड़की का ध्यान तो ठीक से रखा जायेगा न ।"

"उसकी तुम्हें फ़िक्र नहीं करनी चाहिए, माँ, उसकी देखभाल हमारे अपने बच्चों की तरह ही होगी । मेरी बीवी एक समाज कल्याण अधिकारी है और इस नाते खूब जानती है कि बच्चों की देख-भाल क्या होती है । तुम्हारी लड़की हमारे घर में खुश रहेगी, यह मैं तुम्हें साफ़-साफ़ बता सकता हूँ । जब मेरी बीवी दफ़्तर में होगी और बड़े बच्चे स्कूल में, तो उसका काम होगा सिर्फ़ छोटे बच्चे को उठाकर उसे दूध पकड़ा देना ।"

"वैरो और उसकी बहन जॉय भी पिछली टर्म स्कूल में थे", मार्था ने कहा । उसे समझ नहीं आया उसने ऐसा क्यों कहा ।

"हाँ मैं जानता हूँ । यह जो सरकार ने किया, बुरा किया, बहुत बुरा । लेकिन मुझे विश्वास है कि जिस बच्चे को कुछ बनना है, बनेगा, चाहे वह स्कूल जाये या नहीं । यह सब यहाँ लिखा है । इस हथेली पर ।"

मार्था फ़र्श पर देखती रही, फिर आँखे बिना ऊपर उठाये बोली, "जब मैंने ब्याह किया था तो खुद से कहा था : मेरी बच्चियाँ मुझसे बेहतर बनेंगी । मैंने उन दिनों तीसरे दर्जे तक पढ़ाई की थी और मैंने सोचा कि ये सब तो कॉलेज जायेंगी । लेकिन अब वे उतना भी प्राप्त कर पायेंगी जितना मैनें तीस साल पहले किया था । जब मैं यह सोचती हूँ तो मेरी छाती फटने लगती है ।"

"माँ, इसकी अधिक चिन्ता मत करो । जैसा मैंने अभी कहा, जिसे जो बनना है वह यहाँ लिखा हुआ है, चाहे कठिनाइयाँ कैसी भी हों ।"

"हाँ, मैं तो प्रार्थना करती हूँ कि भगवान ने इन बच्चों के लिए जो लिखा है वह मेरे और मेरे पति के लिए लिखे हुए से बेहतर हो ।"

"ऐसा ही हो !...और जहाँ तक इस लड़की का सवाल है अगर यह हमारे घर में आज्ञाकारी और अच्छे तरीके से रही तो बच्चे के बड़े हो जाने पर मेरी पत्नी और मुझे इसे स्कूल भेजने से कौन रोक सकता है । कोई नहीं, और फिर अभी तो यह बच्ची है । क्या उम्र है इसकी ?"

"यह दस साल की है ।"

"देखा । यह तो अभी बच्ची ही है । इसके स्कूल जाने में तो अभी काफ़ी समय है ।"

वे जानते थे कि उसे स्कूल भेजनेवाला हिस्सा सिर्फ़ बहाने का एक तरीका मात्र था । यह मांर्या भी जानती थी । लेकिन वैरो जो पास के कमरे में एक अंधेरे कोने से सब कुछ सुन रही थी यह नहीं जानती थी । उसने अपने दिमाग़ में तुरन्त बच्चे के स्वावलम्बी हो जाने तक के वक्त का हिसाब लगाया तो यह काफ़ी कम बैठा । इसीलिए वह बड़े आदमी के घर राजधानी में रहने खुशी-खुशी चली गई और उस बच्चे की देखभाल करने लगी जो जल्दी ही बड़ा होकर स्वावलम्बी हो जायेगा, और तब उसे स्कूल जाने का मौका मिल सकेगा ।

मिसेज ऐमनिके जो अच्छा नौकर मिलने की मुश्किल में काफ़ी दुखी हो चुकी थीं । अब स्वयं मुफ़्त प्राइमडू की असफलता पर हँस सकती थीं । उन्होंने अपने मित्रों से कहना शुरू किया कि अब वह कहीं भी आ जा सकती थीं और अपने 'छोटे आदमी की फ़िक्र' किये बिना जितनी देर चाहे रुक सकती थीं । वह वैरो के काम और व्यवहार से इतनी खुश थीं कि उन्होंने प्यार से उसे 'छोटी मैडम' का नाम दे दिया था । अबीगेल के चले जाने का दुःस्वप्न

अब ख़त्म हो गया था । उन्होंने दूसरी बेबी-नर्स ढूँढ़ने के लिए ज़मीन-आसमान एक कर दिया था लेकिन कोई नहीं मिला था । एक पक्की उम्र की युवती ने खुद को पेश करके सात पाउंड प्रति माह की माँग की थी । लेकिन उसके हाव-भाव एम्पलायेमेंट ऐक्सचेंज वालियों की तरह थे जो लेबर-कोड के अन्तर्गत अपने हर हक़ को जानती हैं जिसमें शायद सर्वेंट मकान में गर्भपात कराने का और आपके पति को हथियाने की कोशिश करने का हक़ भी शामिल होता है । इसीलिए नहीं कि मार्क ऐसा पति है लेकिन लड़की ही ठीक नहीं थी । उसके बाद अब तक कोई नहीं आया था ।

हर रोज़ सुबह जब ऐमनिके परिवार के बड़े बच्चे—तीन लड़कियाँ और एक लड़का—अपने बाप की मर्सीडीज़ में या अपनी माँ की छोटी, शोर मचानेवाली फ़ियेट में जाने लगते तो वैरो बेबी को बॉय बॉय कराने सीढ़ियों पर ले आती । उसे उनके बढ़िया कपड़े और जूते पसन्द थे—उसने स्वयं जीवन में कभी भी जूते नहीं पहने थे, लेकिन उसे जो चीज़ सबसे अधिक पसन्द थी वह थी उनका रोज़ जाना—घर से बाहर जाना, रोज़मर्रा की चीज़ों और कामों से परे—चले जाना । पहले महीने तो यह ईर्ष्या काफ़ी कमज़ोर थी । वह उसके गाँव से परे चले आने की खुशी के नीचे दबी हुई थी । खुशी जो माँ की नीरस झोंपड़ी, पाम गिरियों और बिना मछली के कड़वी पत्तियों के सूप जिसके पीने से दोपहर तक आतें ऐंठने लगती थीं—इन सब से छुटकारा पाने पर प्राप्त हुई थी । वहाँ से चले आना तो बहुत बड़ी बात थी । लेकिन जैसे-जैसे महीने गुज़रते गये, अच्छे कपड़े और जूते पहनकर, खूबसूरत छोटे स्कूल बैग में सुन्दर नैपकिन्स में लिपटे बिस्कुट और सैंडविच लेकर रोज़-रोज़ चले जाने की उसकी भूख बढ़ने लगी । एक दिन जब फ़ियेट बच्चों को ले गई और उसकी पीठ पर सवार छोटा 'गौड्डी' रोने लगा तो उसे चुप कराने के लिए वैरो को एक गीत सूझ पड़ा :

छोटी, शोर मचाती गाड़ी
अगर जा रही है तू स्कूल
तो ले चल मुझे भी साथ
पी-पी-पी ! पो-पो-पो !

सारी सुबह वह अपना छोटा-सा गीत गाती रही और खुश होती रही । एक बजे जब मिस्टर ऐमनिके बड़े बच्चों को घर छोड़कर चले गये तो वैरो ने उन्हें अपना नया गीत सिखाया । यह उन्हें बहुत पसन्द आया और कई दिनों तक स्कूल के 'बा-बा ब्लैक शीप' और 'सिम्पल साईमन' जैसे गीतों की जगह उस गीत ने लिए रखी ।

"यह लड़की तो जीनियस है," मिस्टर ऐमनिके ने कहा, जब गीत आखिर उन तक पहुँच गया । उनकी बीवी का, जिसने इसे पहले ही सुन लिया था, तो हँसी से गला रूँध गया । उन्होंने वैरो को बुला कर कहा था, "तो तुम मेरी गाड़ी का मज़ाक उड़ाती हो, शैतान लड़की" वैरो यह सुनकर खुश हुई थी क्योंकि उसे उनकी आँखों में गुस्से की जगह हँसी दिखाई दी थी ।

"यह लड़की तो जीनियस है," उनके पति ने कहा था, "और यह अभी स्कूल भी नहीं गई है ।"

"और साथ ही यह जानती है कि तुम्हें मुझे नई गाड़ी खरीद कर देनी चाहिए ।"

"इसमें क्या है, डियर, एक साल और, फिर तुम स्पोर्ट्स-कार ले सकती हो ।"

"हटो, जाने दो ।"

"तुम्हें विश्वास नहीं मुझ पर ? ज़रा सब्र करो, फिर देखना ।"

और हफ़्ते, महीने गुज़र गये । छोटा गौड्डी अब कुछ-कुछ बोलने भी लगा था । लेकिन फिर भी किसी ने वैरो के स्कूल जाने की बात पर ग़ौर नहीं किया । उसने फ़ैसला किया कि यह छोटे गौड्डी का ही कुसूर था क्योंकि वह तेज़ी से बड़ा नहीं हो रहा था । और अब तो उसे वैरो की पीठ पर सवारी करने में कुछ ज़्यादा ही मज़ा आने लगा था, हालाँकि वह अच्छी तरह चल सकता था । सच तो यह है कि उसको 'मुझे उठाओ' शब्द ही सबसे अधिक प्रिय थे । वैरो ने इसके बारे में भी एक गाना बनाया था जिसमें उसकी

बढ़ती हुई उद्विग्नता दिखाई देती थी :

> तुम्हें उठाऊँ ! तुम्हें उठाऊँ !
> हर बार मैं तुम्हें उठाऊँ !
> बढ़ना तुम्हें नहीं है अगर
> छोड़ तुम्हें स्कूल में जाऊँ
> क्योंकि वैरो गई है थक
> थक गई है, थक गई है !

वह सारी सुबह गाती रही, लेकिन जब दूसरे बच्चे स्कूल से लौटे तो वह चुप हो गई । वह इस गाने को तभी गाती थी जब वह गौड्डी के साथ अकेली होती थी ।

एक दोपहर जब मिसेज़ ऐमनिके काम से लौटीं तो उन्होंने वैरो के ओठों पर लाली लगी पाई ।

"यहाँ आओ," उन्होंने अपनी कीमती लिपस्टिक के बारे में सोचते हुए कहा ।

"यह क्या है ?"

लेकिन वह उनकी लिपस्टिक नहीं उनके पति की लाल स्याही निकली । तब वह अपनी मुस्कराहट नहीं रोक पाईं ।

"और इसके नाखून तो देखो ! और अँगूठे भी ! तो जब हम बाहर जाते हैं, छोटी मैडम यही करती रहती हैं छोटे बच्चे की देख-रेख के बदले । तुम उसे कहीं भी पटक कर अपनी लीपा-पोती करने लगती हो । फिर कभी तुम्हें ऐसे नहीं पाऊँ । सुना तुमने ?" उन्हें लगा कि अपनी शुरू की मुस्कराहट के प्रभाव को ठीक करने के लिए अपनी चेतावनी को किसी प्रकार शक्तिशाली बनाना चाहिए ।

"तुम्हें पता है लाल स्याही ज़हरीली होती है ? तुम खुद को मारना चाहती हो क्या ? तो इसके लिए तुम्हें इन्तज़ार करना होगा, छोटी मैडम, जब तक कि तुम मेरा घर छोड़कर अपनी माँ के घर न चली जाओ ।"

"अब बनी न बात," उन्होंने स्वयं पर खुश होते हुए सोचा ।

उन्होंने देखा कि वैरो काफ़ी डर गई थी । सारी दोपहर वह एक साये की तरह इधर-उधर रही ।

जब मिस्टर ऐमनिके घर आये तो लंच खाते समय उन्होंने उन्हें यह कहानी बतलाई । और साथ ही दिखाने के लिए वैरो को बुलाया भी ।

"इन्हें अपने नाखून दिखाओ," उन्होंने कहा, "और अपने अँगूठे भी ।"

"छोटी मैडम ।"

"ठीक है," मिस्टर ऐमनिके ने वैरो को चले जाने के लिए इशारा करते हुए कहा । "यह तो तेज़ी से सीख रही है । तुम वह कहावत तो जानती ही हो कि जब माँ गाय बड़ी-बड़ी घास खा रही होती है तो बछड़े उसके मुँह को ध्यान से देखते रहते हैं ।"

"गाय कौन है बे गैंडे ?"

"माई डियर, यह तो सिर्फ़ एक कहावत है ।"

एकाध हफ़्ते बाद मिसेज़ ऐमनिके जब काम से घर लौटीं तो उन्होंने देखा कि जिन कपड़ों में वह बच्चे को छोड़ गई थीं उन्हें बदल कर कुछ और ही पहना दिया गया था, जो काफ़ी गर्म था ।

"जो कपड़े मैंने पहनाये थे वे क्या हुए ?"

"वह गिर गया था और कपड़े खराब हो गये थे । इसीलिए मैंने बदल दिये थे," वैरो ने कहा । लेकिन उसके व्यवहार में कुछ अजीब-सा था । मिसेज़ ऐमनिके को पहले ख़्याल आया कि बच्चा बुरी तरह गिर गया होगा ।

"कहाँ गिरा था वह ?" उन्होंने घबराकर पूछा । "वह ज़मीन पर कहाँ टकराया था । उसे मेरे पास लाओ । यह सब क्या है ? खून ? नहीं यह क्या है ? हे भगवान, मैं मर गई ! जाओ इसके कपड़े लाओ । तुरन्त !"

"मैंने वे धो दिये," वैरो ने कहा और रोने लगी । ऐसा उसने पहले कभी नहीं किया था । मिसेज ऐमनिके तुरन्त बाहर भागीं और रस्सी से नीले कपड़े और सफ़ेद बनियान उतारी । उन पर गहरे लाल दाग़ लगे हुए थे ।

उन्होंने वैरो को पकड़कर दोनों हाथों से बुरी तरह पीटना शुरू किया । फिर उन्होंने एक चाबुक़ उठाई और उसे तब तक बरसाती रहीं जब तक कि उसका चेहरा और हाथ खून से तर नहीं हो गये । तभी जाकर वैरो ने स्वीकार किया कि उसने बच्चे को लाल स्याही की बोतल पिलाने की कोशिश की थी । मिसेज़ ऐमनिके कुर्सी पर ढह पड़ीं और रोने लगीं ।

मिस्टर ऐमनिके ने लंच भी खाने का इंतज़ार नहीं किया । उन्होंने वैरो को मर्सिडीज़ में डाला और चालीस मील दूर गाँव में उसकी माँ के घर ले गये । वह तो अकेले ही जाना चाहते थे पर उनकी पत्नी ने साथ चलने पर ज़ोर दिया और बच्चे को भी साथ लाने पर । हमेशा की तरह उन्होंने कार को मेन रोड पर ही रोका । लेकिन वे लड़की के साथ अन्दर नहीं गये । उन्होंने सिर्फ़ उसे खींच कर बाहर निकाला और उनकी पत्नी ने उसके पीछे उसके कपड़ों का बंडल बाहर फेंक दिया । और फिर वे गाड़ी स्टार्ट करके वहाँ से चले गये ।

धूल से सनी और थकान से चूर मार्था जब फ़ार्म से घर लौटी तो उसके बच्चे भागते हुए बाहर आये और उसे बतलाया कि वैरो लौट आई है और सोने वाले कमरे में रो रही है । उसने टोकरी फेंकी और उसे देखने दौड़ी । लेकिन उसे वैरो की कहानी समझ नहीं आई ।

"तुमने बच्चे को लाल स्याही पिलाई ? ताकि तुम स्कूल जा सको ? कैसे ? चलो, उनके घर चलो । शायद वे लोग इस रात गाँव में ही रुकें । या उन्होंने किसी को बताया हो कि क्या हुआ है । मुझे तो तुम्हारी कहानी समझ में नहीं आ रही है । शायद तुमने कुछ चुराया होगा । नहीं ?"

"मामा, प्लीज़ मुझे वहाँ मत ले जाओ, वे मुझे मार देंगे ।"

"चलो, तुम तो मुझे बता ही नहीं रही हो कि तुमने क्या किया है ।" उसने वैरो की बाँह पकड़ी, पैर घसीटकर बाहर ले गई । बाहर खुले पर उसने उसकी गर्दन, सिर और बाँहों पर चाबुक़ के निशानों पर खून के सूखे धब्बे देखे । उसे थूक गटकना मुश्किल हो गया ।

"यह किसने किया ?"

"मेरी मैडम ने ।"

"और तुमने क्या कहा कि तुमने क्या किया था ? तुम्हें मुझे बताना ही होगा ।"

"मैंने बच्चे को लाल स्याही दी थी ।"

"ठीक है, चलो ।"

वैरो और ज़ोर से चिल्लाने लगी । मार्था ने उसे फिर कलाई से पकड़ा और वे चले । उसने न तो अपने काम वाले कपड़े बदले और न ही हाथ-मुँह धोया । हर औरत—और कभी-कभी आदमी भी—जो रास्ते में मिली वैरो के शरीर पर चाबुक के निशान देख कर चीख उठा और उसने जानना चाहा कि किसने ऐसा किया था । उन सब को मार्था ने उत्तर दिया कि "मुझे अभी पता नहीं । मैं पता लगाने जा रही हूँ ।"

भाग्य उसके साथ था । मिस्टर ऐमनिके की बड़ी गाड़ी वहीं पर थी । तो वे राजधानी वापिस नहीं गये थे । उसने बाहर का दरवाज़ा खटखटाया और वे अन्दर आ गये । मिसेज़ ऐमनिके पार्लर में बैठी बच्चे को बोतल से दूध पिला रही थीं लेकिन उन्होंने आने वालों को कुछ कहना तो दूर उनकी तरफ़ देखा तक नहीं । कहानी उनके पति ने सुनाई जो कुछ देर बाद सीढ़ियों से नीचे उतरे थे । जैसे ही मार्था को कहानी का मतलब समझ आया—कि बच्चे को लाल स्याही पीने को दी गई थी और उद्देश्य तो उसे मार देना था वह दोनों कानों में उँगलियाँ डालकर चिल्लाई । वह और कुछ सुनना नहीं चाहती थी । साथ ही वह बाहर भागी, फूलों की झाड़ी से एक शाख़ तोड़ी और एक ही बार में अँगूठा और तर्जनी शाख़ की लम्बाई पर फेर कर उसकी सारी पत्तियाँ तोड़ डालीं । इस चाबुक के साथ वह दुबारा घर में घुसी और चिल्लाई : "मैंने बहुत ही घिनौनी बात सुनी है ।" वैरो अब चिल्ला-चिल्ला कर कमरे में चारों ओर भाग रही थी ।

"इसे मेरे घर में पीटने की ज़रुरत नहीं," मिसेज़ ऐमनिके ने उन्हें पहली बार देखते हुए सख़्त शब्दों में कहा । "इसे यहाँ से अभी ले जाओ । तुम मुझे अपनी हैरानी का एहसास कराना चाहती हो । ठीक, लेकिन मैं नहीं देखना चाहती । अपना गुस्सा अपने घर में दिखाओ । तुम्हारी लड़की ने खून करना मेरे घर में नहीं सीखा है ।"

इस बात ने मार्था को ततैये की तरह काटा और उसके क़दम वहीं जम कर रह गये । वह खड़ी की खड़ी रह गई, उसकी चाबुक हाथ में निरस्त लटकने लगी । "बेटी" उसने युवा महिला को सम्बोधित करते हुए कहा, "जैसा कि तुम देख सकती हो मैं ग़रीब और असहाय हूँ, लेकिन मैं कोई हत्यारिन नहीं हूँ । अगर मेरी वैरो को हत्यारिन ही बनना है तो भगवान साक्षी है वह कह नहीं सकती कि यह उसने मुझसे सीखा है ।"

"तो यह शायद उसने मुझसे सीखा है," मिसेज़ ऐमनिके ने झूठी हँसी में दाँत दिखाते हुए कहा, "या हवा से सीखा होगा । हाँ यही ठीक है, इसने हवा से ही सीखा होगा । ऐ औरत, सुन, अपनी लड़की को अपने घर ले जा और मेरा पीछा छोड़ ।"

"वैरो चलो, आओ चलो !"

"हाँ, हाँ, प्लीज़ जाओ !"

मिस्टर ऐमनिके जो किसी ऐसे मौक़े की तलाश में थे जिसमें किसी मर्द का दखल हो सके, अब बोले :

"यह तो शैतान की कारस्तानी है," उन्होंने कहा, "मुझे हमेशा लगता रहा है कि इस देश में शिक्षा के लिए पागलपन एक दिन हम सबको बर्बाद कर देगा । अब तो स्कूल जाने के लिए बच्चे क़त्ल भी करने को तैयार हैं ।"

सभी पार्टियों को एक साथ शान्त करने की इस भोंडी कोशिश ने तो मार्था को और भी ज़ोर से काटा । उन्होंने वैरो को घर चलने के लिए ज़ोर से धक्का दिया और दूसरे हाथ में बिना इस्तेमाल किया हुआ चाबुक भी ले लिया । पहले तो उसने लड़की पर गालियों की बौछार की और उसे शैतान की आँत कहा जो धोखे से उसकी कोख में आ गई थी ।

"हे भगवान, मैने क्या क़सूर किया है ?" उसके आँसू बह चले । "अगर मेरे बच्चे भी दूसरों के साथ हुए होते तो इस औरत

की उम्र जो आज मुझे हत्यारिन कह रही है मेरी लड़की की उम्र से ज़्यादा नहीं होती । अब वह मुझ पर थूक रही है । तुम्हीं ने मेरी यह दुर्गति करवाई है," उसने वैरो के सिर की ओर इशारा करते हुए कहा और उसे ज़ोर से धक्का दिया ।

"मैं आज तुझे मार डालूँगी । पहले घर चल ।" लेकिन तभी उसके अन्दर एक अजीब, अस्पष्ट-सी, दिशाहीन विद्रोह की भावना उबलने लगी । "यह चीज़ जो खुद को मर्द कहता है, मुझे शिक्षा के पागलपन के बारे में बतला रहा था । इसके अपने सभी बच्चे स्कूल जाते हैं, यहाँ तक कि वह भी जिसकी उम्र अभी दो साल है । लेकिन वह पागलपन नहीं है । अमीरों का कोई पागलपन नहीं होता । लेकिन मुझ जैसी ग़रीब विधवा के बच्चे भी दूसरों के साथ स्कूल जाना चाहते हैं तो यह पागलपन बन जाता है । कैसी है यह ज़िन्दगी ? भगवान क़सम, यह क्या है ? और अब मेरी बच्ची सोचती है कि स्कूल जाने का अवसर पाने के लिए उसे उस बच्चे की हत्या करनी होगी जिसकी देख-भाल के लिए उसे रखा गया है । किसने भरी है यह दहशत उसके दिल में ? भगवान तुम गवाह हो कि मैंने ऐसा नहीं किया ।"

उसने चाबुक़ परे फेंक दिया और सूनी हथेली से अपने आँसू पोंछने लगी ।

अंकल बेन्न की पसन्द

सन 1919 में मैं उमरू में नाईजर कम्पनी में नौजवान क्लर्क था । उन दिनों में क्लर्क होना आजकल के मिनिस्टर होने के बराबर था। मेरी तनख्वाह थी दो पाउंड दस शिलिंग । आप बेशक हँसेंगे लेकिन उन दिनों दो पाउंड दस शिलिंग आज के पचास पाउंड के बराबर थे । आप चार शिलिंग में एक मोटा-ताज़ा बकरा ख़रीद सकते थे । मुझे याद है कि कम्पनी का सबसे बड़ा अफ़सर था सारो जिसकी तनख्वाह थी दस पाउंड सवा तेरह शिलिंग । हमारी नज़रों में वह गवर्नर की तरह था ।

सभी तरक्की-पसन्द नौजवानों की तरह मैं भी अफ़्रीकी क्लब का मेम्बर बन गया । हम टैनिस और बिलियर्ड्स खेला करते थे । लेकिन मेरी दिलचस्पी उसमें कम थी । मुझे जो पसन्द था वह था शनिवार की शाम का डांस । औरतों की भरमार रहती थी । आजकल के शहरों की चालू चीज़ों की तरह नहीं बल्कि सचमुच खूबसूरत टोटे...।

मेरे पास एक रैले साईकिल थी—एकदम नयी । और सब मुझे जौली बेन्न कहते थे । ताज़ी डबलरोटी की तरह सभी जगह मेरी माँग थी । लेकिन मुझमें एक बात है—हँसी-मज़ाक, खाना तथा हर तरह की हरकतों के बावजूद मैं अपने होशो-हवास में रहता था । मेरे पिता ने एक बार मुझे बताया था कि हमारे सपूतों को एक आँख खुली रखकर सोना आना चाहिए । मुझे यह बात कभी नहीं भूली । मैं हर एक के साथ हँसता, खेलता था और वे मुझे 'जौली बेन्न ! जौली बेन्न !' कह कर उत्साहित किया करते थे । लेकिन मैं खूब समझता था कि मैं क्या कर रहा हूँ । उमरू की औरतें बहुत तेज़ होती हैं । आपके 'अलिफ़' कहने से पहले ही वे 'बे' पर पहुँच जाती हैं । इसलिए मुझे बहुत सावधान रहना पड़ता था । मैने उन्हें कभी भी अपने घर का रास्ता नहीं बतलाया और

न ही कभी उनके हाथ का बना खाना खाया कि कहीं उसमें कोई टोना न मिला हो । मैंने उन दिनों बहुत से नौजवानों को बर्बाद होते देखा था, इसीलिए मुझे अपने पिता के शब्द याद रहे : हाथ मिलाने को कोहनी से ऊपर मत जाने दो । मैं कह सकता हूँ कि इसका अपवाद थी तो सिर्फ़ एक तरोताज़ा, नमकीन लड़की, जिसका नाम था माग्रेट ।

आज ही की तरह एक इतवार की सुबह मैं अपना नया ग्रामोफ़ोन बजा रहा था—एकदम नया एच.एम.वी. सीनियर (मुझे पुरानी चीज़ों में कभी भी विश्वास नहीं था । अगर मेरे पास नयी चीज़ के लिए पैसे नहीं होते तो मैं चुप रहता हूँ) । मैं रिकॉर्ड बजा रहा था और खिड़की पर खड़ा चिऊंग-स्टिक चबा रहा था । मेरे घर के पास से लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहने चर्च जा रहे थे । यह माग्रेट भी उन लोगों के साथ जा रही थी जब उसने मुझे देख लिया । बदक़िस्मती से मैं उसे समय पर नहीं देख पाया और छिप नहीं सका । तो उसी दिन—उसने अगले दिन या उससे अगले दिन का इन्तज़ार नहीं किया—माग्रेट ,चर्च प्रार्थना समाप्त होते ही घर आ गयी । उसके अनुसार वह मुझे रोमन कैथोलिक में परिवर्तित करना चाहती थी । तमाशे दुनिया से कभी कम नहीं होंगे । माग्रेट, वह हिरनी ! लेकिन मैं आपको माग्रेट के बारे में नहीं बता रहा हूँ बल्कि यह बतला रहा हूँ कि मैंने यह सब बेवकूफ़ियाँ कैसे छोड़ीं ।

इसी तरह नव वर्ष की पूर्व संध्या थी । आप तो जानते ही हैं कि नव वर्ष पगार पानेवालों को क्रिसमस से भी ज़्यादा गर्मा सकता है । क्रिसमस आते-आते तो महीना बीस दिन तक चुक जाता है लेकिन नव वर्ष पर तो आपकी जेब गर्म होती है । इसलिये उस दिन मैं क्लब गया हुआ था ।

जब मैं आप जैसे आजकल के नौजवानों को कहते सुनता हूँ कि हम पीते हैं तो मुझे हँसी आती है । आप लोग एक बोतल बीयर या एक पैग ह्विस्की पीकर ही बहकने लगते हैं । उस रात मैं व्हाइट-हॉर्स पी रहा था । "वे सभी जो एडिनबरो से लन्दन तक सफ़र करना चाहते हैं, या कहीं और, आने दो उन्हें ह्वाइट-हॉर्स के मयख़ाने में....या अल्लाह !"

मेरी एक बात है, मैं अपने ड्रिंक कभी मिक्स नहीं करता । जिस दिन मैं ह्विस्की पीना चाहता हूँ, उस दिन को व्हिस्की-दिवस का नाम दे देता हूँ, अगर मैं कल बीयर पीना चाहूँगा तो और कुछ भी नहीं छुऊँगा । उस रात मैं ह्वाइट-हॉर्स पर सवार था । मैंने एक रोस्ट चिकन और गिनी गोल्ड सिगरेट का एक टिन भी लिया । हाँ उन दिनों मैं सिगरेट पिया करता था । मैंने सिगरेट तभी छोड़ी जब एक जर्मन-डॉक्टर ने मुझे बतलाया कि मेरा दिल तवे जैसा काला हो गया था । ये जर्मन डॉक्टर भी अजीब थे । आप तो जानते ही हैं कि वे आपको सिर, पेट या कहीं भी इंजेक्शन दे दिया करते थे । जहाँ भी आपको दर्द की शिकायत हुई, वहीं उन्होंने तुरन्त इंजेक्शन दे दिया—वे समय बिल्कुल बर्बाद नहीं करते थे ।

मैं क्या कह रहा था ?...हाँ, मैंने ह्वाइट-हॉर्स की एक बोतल पी और ऊपर से एक रोस्ट चिकन खाया और...नशा ? यह शब्द तो मेरी शब्दावली में है ही नहीं । जीवन में मुझे कभी भी नशा नहीं हुआ । मेरे पिता कहा करते थे कि नशेबाज़ी का इलाज है 'न' कह देना । जब मैं पीना चाहता हूँ तो पीता हूँ, जब बन्द करना चाहता हूँ तो बन्द कर देता हूँ । उस रात क़रीब तीन बजे मैं अपनी रैले साईकिल पर सवार होकर चुपचाप घर सोने के लिए चला आया ।

उन दिनों हमारे सीनियर क्लर्क को कैलिको के लट्ठे चुराने के आरोप में जेल में डाल दिया गया था और उसकी जगह भी मैं काम कर रहा था । इसलिए मैं कम्पनी के एक छोटे-से मकान में रहता था । जानते हैं न आजकल जी. बी. ऑलिवांट कहाँ पर है ?....हाँ, नाइजर नदी के किनारे पर । वहीं पर यह मकान था । उसके एक तरफ़ के दो कमरे मेरे पास थे और दूसरी तरफ़ के दो कमरे स्टोर-कीपर के पास थे । संयोग से यह व्यक्ति उन दिनों छुट्टी पर था और उसका हिस्सा ख़ाली था ।

मैंने सामने का दरवाज़ा खोला और अन्दर चला आया । फिर मैंने दरवाज़े को अन्दर से बन्द किया । अपनी साइकिल को आगे वाले कमरे में रख कर मैं अपने सोने वाले कमरे में चला आया । मैं इतना थक गया था कि लैम्प भी ढूँढने की कोशिश

नहीं की । कपड़े उतार कर उन्हें ठीक-से कुर्सी के पीछे टाँग दिया और कटे पेड़ के तने की तरह बिस्तर में ढह पड़ा । और कमस उस भगवान की जिसने हम सब को बनाया है, मेरे बिस्तर में एक औरत थी । मेरे मन में आया कि यह ज़रूर माग्रेट ही होगी । मैं हँसने लगा और इधर-उधर छूने लगा । वह पूरी तरह निर्वसन थी । मैं हँसता रहा और उससे पूछता रहा कि वह कब आयी । उसने कोई जवाब नहीं दिया और मुझे लगा कि वह इसलिए नाराज़ थी कि उसने मुझे क्लब ले चलने के लिए कहा था और मैंने 'न' कह दी थी । मैंने उससे कहा था कि "तुम वहाँ अपने आप आ जाओगी तो हम मिल लेंगे । मैं किसी को क्लब नहीं ले जाता ।" इसीलिए मुझे डर था कि वह नाराज़ थी ।

मैंने उसे नाराज़गी को भुला देने को कहा पर फिर भी कुछ नहीं बोली । मैंने पूछा कि क्या वह सो गयी थी—सिर्फ़ पूछने के लिए ही पूछा था । उसने फिर भी कुछ नहीं कहा । हालाँकि जैसा कि मैंने आपसे कहा कि मुझे अपने घर पर औरतों का आना पसन्द नहीं, लेकिन हर नियम का अपवाद भी तो होता है । अगर मैं कहूँ कि उस रात माग्रेट को देखकर मैं नाराज़ हुआ तो यह सफ़ेद झूठ होगा । मैं अभी हँस ही रहा था कि मैंने महसूस किया कि उसके स्तन पन्द्रह-सोलह या ज़्यादा-से-ज़्यादा सत्रह वर्ष की लड़की के स्तनों की तरह गठे और सीधे थे । मैने सोचा कि शायद यह उसके पीठ पर लेटे होने के कारण था । लेकिन जब मैंने उसके बालों को छुआ तो वे भी किसी यूरोपीय के बालों की तरह नर्म लगे । मेरी हँसी एकदम गायब हो गई, मैनें उसके सिर के बालों को छुआ तो वे भी वैसे ही थे । मैं कूद कर बिस्तर से बाहर आ गया और चिल्लाया : "कौन हो तुम ?" मेरा सिर फूलकर तरबूज़ हो गया और मैं काँपने लगा । औरत उठ कर बैठ गई और उसने हाथ बढ़ा कर मुझे अपने पास बुलाया । ऐसा करते समय उसकी उँगलियाँ मुझसे छू गयीं । मैं फिर उछलकर परे हो गया और चिल्लाकर उसे अपना नाम बताने को कहा । फिर मैंने खुद से कहा : तुम एक औरत से कैसे डर सकते हो ? चाहे काली हो या

गोरी । है तो वही बात : यह चवन्नी या वह चवन्नी । इसीलिए मैंने कहा, "ठीक है, मैं अभी तुम्हारा मुँह खुलवाता हूँ," और साथ ही मेज़ पर रखी माचिस ढूँढ़ने लगा । औरत ने यह समझते हुए कि मैं क्या करने जा रहा हूँ, कहा : "बीको, अकप्रकवाना ओकु ।"

मैंने कहा, "तो तुम कोई गोरी औरत नहीं हो । कौन हो तुम ? अगर नहीं बतलाओगी तो माचिस की तीली जला दूँगा । साथ ही मैंने माचिस को हिलाया ताकि वह समझ जाये कि मेरी मंशा क्या है । मेरा विश्वास वापिस आ गया था और मैं उसकी आवाज़ को पहचानने की कोशिश कर रहा था क्योंकि वह काफ़ी जानी-पहचानी सी लग रही थी ।

"वापस बिस्तर में आ जाओ, मैं सब कुछ बता दूँगी," मुझे सुनाई दिया । जिसने भी मुझे कहा था कि वह आवाज़ जानी-पहचानी थी, उसने झूठ ही कहा था । आवाज़ में चाशनी-सी मिठास थी । लेकिन आवाज़ अपरिचित थी । इसीलिए मैंने माचिस जला दी ।

"मैं तुमसे बिनती करती हूँ," ये उसके आखिरी शब्द थे । अगर मैं आपको बतलाऊँ कि मैंने इसके बाद क्या किया और कैसे उस कमरे से बाहर निकला तो यह बिल्कुल अन्दाज़ लगाना ही होगा । मुझे सिर्फ़ यही याद है कि मैं एक पागल की तरह मैथ्यू के घर की ओर दौड़ रहा था । फिर मैं उसके दरवाज़े को दोनों हाथों से पीटने लगा ।

"कौन है ?" उसने अन्दर से पूछा ।

"खोलो !" मैं चिल्लाया, "भगवान के नाम पर दरवाज़ा खोलो ।" मैंने अपना नाम बताया लेकिन मेरी आवाज़ मेरी आवाज़ जैसी नहीं थी । दरवाज़ा थोड़ा-सा खुला और मैनें देखा कि मेरा रिश्तेदार हाथ में गंडासा लिए खड़ा है ।

मैं फ़र्श पर गिर पड़ा और उसने कहा, "हे भगवान !" यह भगवान ही था जिसने उस रात मुझे मैथ्यू ओबी के घर की ओर भेजा था क्योंकि मुझे पता ही नहीं था कि मैं किधर जा रहा

था । ज़िन्दा भी था या मर चुका था । मैथ्यू ने मेरे सिर पर ठंडा पानी डाला और काफ़ी देर बाद ही मैं उसे बता सका कि क्या हुआ था । मुझे लगता है कि मैंने उसे सारी कहानी उल्टी-सीधी ही सुनाई होगी । वर्ना वह क्यों बार-बार मुझसे पूछता रहता कि वह कैसी थी, वह कैसी थी।

"कहा ना, मैंने उसे नहीं देखा," मैंने कहा ।

"ओह, लेकिन तुमने उसकी आवाज़ तो सुनी थी ?"

"हाँ, उसकी आवाज़ मैंने बख़ूबी सुनी थी । मैने उसे छुआ भी था और उसने भी मुझे छुआ था ।"

"पता नहीं, उसे डराकर तुमने ठीक किया या ग़लत," मैथ्यू ने सिर्फ़ यही कहा । समझ में नहीं आता कि मैं आपको कैसे बताऊँ कि मैथ्यू के इस वाक्य ने मेरी आँखें खोल दीं । मुझे तुरन्त समझ में आ गया कि मेरे घर में आयी थी मामी वोता जो कि नाइजर नदी की जल-परी थी ।

मैथ्यू ने फिर कहा, "यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि तुम जीवन में क्या चाहते हो । अगर तुम्हें दौलत चाहिए तो तुमने आज बहुत भारी ग़लती की, लेकिन अगर तुम अपने पिता की सच्ची सन्तान हो तो हाथ मिलाओ ।"

हमने हाथ मिलाये और उसने कहा, "हमारे पूर्वजों ने हमें कभी नहीं बतलाया कि आदमी को बीवी-बच्चों से ज़्यादा दौलत को अहमियत देनी चाहिए ।"

आज भी जब मेरी बीवियाँ मुझे तंग करती हैं तो मैं उनसे कहता हूँ : "क़सूर तुम्हारा नहीं है । अगर मुझमें समझ होती तो मैं मामी वोता के साथ हमबिस्तर होता ।" वे हँसती हैं और पूछती हैं कि मैंने ऐसा क्यों नहीं किया । सबसे छोटी कहती है, कोई बात नहीं । वह फिर आयेगी, वह कल आयेगी ।" और फिर वे हँसने लगती हैं ।

लेकिन हम सब समझते हैं कि यह सिर्फ़ मज़ाक ही है, क्योंकि दौलत और बच्चों के सुख के बीच कौन दौलत को चुनना चाहेगा ? सिवा डॉक्टर जे. एम. स्टुअर्ट यंग जैसे एक पागल गोरे

के । ओह, मैंने आपको यह तो बताया ही नहीं कि जिस रात मैंने वोता को घर से बाहर निकाल दिया था, उसी रात वह डॉक्टर जे. एम. स्टूअर्ट यंग नाम के एक गोरे व्यापारी के घर गयी और उसकी प्रेमिका बन गयी । आपने उसके बारे में तो सुना ही होगा ?...हाँ वही जो देश का सबसे अमीर आदमी बना...लेकिन जलपरी ने उसे शादी नहीं करने दी । जब वह मरा तो क्या हुआ ? उसकी सारी दौलत दूसरों को चली गयी । क्या फ़ायदा ऐसी दौलत का, मैं आपसे पूछता हूँ । भगवान न करे ।

फ़ौजी लड़कियाँ

पहली बार जब वे एक दूसरे की राहों से गुज़रे तो कुछ भी नहीं हुआ । यह उन संघर्षमय दिनों की बात है जब हर रोज़ हज़ारों नौजवानों को और कभी-कभी लड़कियों को भी भर्ती दफ़्तरों से निराश वापस लौटना पड़ता था क्योंकि नवगठित देश की सुरक्षा के लिए हथियार उठाने बहुत अधिक लोग आगे आ रहे थे ।

दूसरी बार वे आवका के एक चैक-पॉइंट पर मिले । लड़ाई शुरू हो चुकी थी और दूर उत्तरी क्षेत्रों से धीरे-धीरे दक्षिण की ओर बढ़ रही थी । वह औनित्शा से ऐनूगू की ओर जा रहा था और जल्दी में था । हालाँकि बौद्धिक स्तर पर वह सड़क-अवरोधों पर अच्छी तरह तलाशी के हक़ में था लेकिन जब भी उसे तलाशी देनी पड़ती थी, भावात्मक स्तर पर उसे हमेशा बुरा लगता था । हालाँकि वह स्वयं इस बात को मानने को तैयार नहीं था लेकिन लोग मानते थे कि अगर आपकी तलाशी ली गयी तो आप बड़े आदमी नहीं हैं । अक्सर वह अपनी गहरी, प्रभावशाली आवाज़ में यह कह-कर—रेगिनाल्ड न्वानक्वो, न्याय मंत्रालय—तलाशी से बच जाता था । इसका असर तुरन्त होता था । लेकिन कई बार अज्ञानता के कारण या विशुद्ध हठीलेपन के कारण चेक पॉइंट के लोग उसके इस कथन से प्रभावित होने से इन्कार कर देते थे । जैसा कि अभी आवका पर हुआ था । मार्क 4 की भारी राईफ़लें उठाये हुए दो कांस्टेबल दूर सड़क के किनारे से नज़र रखे हुए थे और तलाशी का काम उन्होंने स्थानीय निगरानी करनेवालों पर छोड़ दिया था ।

"मुझे जल्दी है"—उसने लड़की से कहा जो उसकी कार तक आ गई थी । "मेरा नाम रेगिनाल्ड न्वानक्वो है, न्याय मंत्रालय ।"

"नमस्ते सर, मैं आपकी कार का बूट देखना चाहती हूँ ।"

"हे भगवान ! तुम्हारे ख्याल से बूट में क्या है ?"

"मैं नहीं जानती, सर ।"

गुस्सा दबाते हुए वह कार से बाहर निकला, पीछे गया, बूट खोला और बायें हाथ से ढक्कन उठाते हुए दायें से यूँ इशारा किया जैसे कह रहा हो : आपके बाद !

"हो गई तसल्ली ?" उसने पूछा ।

"जी, सर । क्या मैं आपकी गाड़ी का पिजन-होल देख सकती हूँ ?"

"ओह गॉड !"

"देरी के लिए माफ़ी, सर आप ही लोगों ने हमें यह काम सौंपा है ।"

"कोई बात नहीं । तुम बिल्कुल ठीक कहती हो । यह रहा ग्लव-बॉक्स । देख लो कुछ भी नहीं है ।

"ठीक है, सर । बन्द कर दीजिए," उसने पीछे का दरवाज़ा खोल कर सीटों के नीचे झाँका । तब उसने पहली बार लड़की को ध्यान से देखा—पीछे से । वह एक खूबसूरत लड़की थी जिसने उभारवाली नीली जर्सी, ख़ाकी जीन्स तथा कैनवेस के जूते पहन रखे थे और बालों को नये स्टाइल की प्लीटों में बाँध रखा था जिससे लड़कियों के चेहरों पर विद्रोह का-सा भाव आ जाता था जिसे लोगों ने-जाने क्यों—'एयर फ़ोर्स बेस' का नाम दे दिया था । वह कुछ-कुछ जानी-पहचानी सी लगती थी ।

"मैं ठीक हूँ, सर," उसने अन्त में कहा जिसका मतलब था कि वह अपना काम ख़त्म कर चुकी थी । "आपने मुझे पहचाना नहीं ?"

"नहीं, क्यों ?"

"जब मैं स्कूल छोड़कर सेना में भर्ती होने जा रही थी तो आपने मुझे ऐनूगू तक लिफ़्ट दी थी ।"

"ओ, हाँ, तुम्हीं वह लड़की हो । मैंने तुम्हें वापस स्कूल जाने को कहा था न क्योंकि फ़ौज में लड़कियों की ज़रूरत नहीं है । फिर क्या हुआ ?"

"उन्होने मुझे वापस स्कूल जाने को कहा या रेडक्रॉस में भरती होने को कहा ।"

"देखा, तुमने, मैने ठीक कहा था न । तब तुम यहाँ क्या कर रही हो ?"

"सिर्फ़ सिविल-डिफ़ैंस के साथ थोड़ा-सा हाथ बँटा रही हूँ ।"

"चलो ठीक है । यक़ीनन तुम बहुत ही अच्छी लड़की हो ।" वही दिन था जिस दिन उसने सोचा कि क्रान्ति में आखिर कुछ है । उसने पहले भी लड़कियों और औरतों को मार्चिंग तथा प्रदर्शन करते देखा था लेकिन वह उनके बारे में ठीक-ठाक धारणा नहीं बना पाया था । इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि औरतें और लड़कियाँ अपने बारे में गम्भीरता से सोचती थीं जो गलियों में छड़ियाँ उठाये और सिरों पर स्टील हैल्मेटों की जगह सूप के कटोरे रखे आगे-पीछे ड्रिल किया करती थीं । उन दिनों का सबसे मशहूर मज़ाक था वह बैनर जिसके पीछे-पीछे स्थानीय स्कूल की लड़कियाँ चलती थीं और जिस पर लिखा रहता था—वी. आर. इम्प्रैग्नेबल ।"

लेकिन आवका चैक-पॉइंट पर उस लड़की के साथ उस मुलाक़ात के बाद वह दुबारा न तो लड़कियों का मज़ाक ही उड़ा सका और न ही क्रान्ति की बात का क्योंकि उस लड़की की कार्य-कुशलता में सादगी और आत्म विश्वास ने उसे एकदम छिछोरेपन का अपराधी घोषित कर दिया था । क्या कहा था उसने : "हम वही काम कर रहे हैं जो आप लोगों ने हमें सौंपा है ।" वह उसका भी लिहाज़ नहीं करने जा रही थी जिसने एक बार उस पर एहसान किया था । उसे यक़ीन था कि वह अपने पिता की तलाशी भी उसी सख़्ती से लेती ।

जब वे तीसरी बार एक दूसरे की राहों से गुज़रे तो अठारह महीने बीत चुके थे और हालात काफ़ी खराब थे । मौत और भुखमरी ने पहले दिनों के स्वाभिमान को भगा दिया था जिसका स्थान ले लिया था विशुद्ध निराशा ने और कहीं-कहीं पत्थर सी कठोर और कभी-कभी आत्म-घातक अवज्ञा ने । आश्चर्य की बात है कि ऐसे वक़्त में भी कुछ लोग ऐसे थे जिनकी एकमात्र इच्छा वक़्त रहते

जीवन की अच्छी वस्तुओं को हथियाना तथा चरम सीमा तक मौज़ उड़ाना थी । ऐसे लोगों के लिए दुनिया में एक अजीबो-गरीब तौर पर सामान्यता लौट आई थी । सभी चेक-पॉइंट ग़ायब हो गये । लड़कियाँ फिर लड़कियाँ बन गयीं और लड़के, लड़के । जीवन बहुत ही संकुचित, घिरा हुआ तथा निराशाजनक हो गया था जिसमें कुछ अच्छाइयाँ थीं, कुछ बुराइयाँ और ढेर-सी वीरता जो इस कहानी के पात्रों से परे रिफ़्यूजी कैम्पों, चिथड़ों में लिपटे, गोली के निशाने के सामने डटे, भूखे-नंगे लेकिन साहसी लोगों में दिखाई देती थी ।

रेगिनाल्ड न्वानक्वो उन दिनों औवैरी में रह रहा था तथा उस दिन वह राशन की तलाश में न्क्वैरी गया हुआ था । औवैरी में उसे कैरीटास में कुछ मछली, डिब्बाबंद मांस तथा घटिया अमेरिकी खाद्य, जिसे खाद्य फ़ार्मूला दो कहते थे और जो किसी क़िस्म का पशुओं का चारा था, मिल गया था । उसे लगता था कि कैथोलिक न होने की वज़ह से उसे कैरीटास में नुक़सान होता था । इसीलिए वह न्क्वैरी में चावल, बीन्स तथा गेबन-गारी नामक एक बढ़िया सीरियल की तलाश में अपने एक दोस्त के पास आया था जो ड्ब्ल्यू सी सी का एक डिपो चलाता था ।

वह औवैरी से सुबह छह बजे ही निकल पड़ा था ताकि अपने दोस्त को डिपो में ही पकड़ सके जो हवाई-हमले के डर से 8-30 के बाद वहाँ नहीं रुकता था । न्वानक्वो के लिए वह दिन भाग्यशाली था । कुछ दिन पहले कई जहाज़ों के अचानक एक साथ आ जाने के कारण डिपो में एक दिन पहले ही रसद का बहुत बड़ा स्टॉक आया था । जब उसका ड्राइवर टिन, थैले और कार्टन उसकी गाड़ी में लाद रहा था तो भूखी भीड़ ने जो हमेशा रिलीफ़-सैन्टरों के गिर्द जुटी रहती थी, कई फ़ब्तियाँ कसीं जैसे कि 'वार कैन कन्टीन्यू' जिससे आशय ड्ब्ल्यू. सी. सी. से था । कोई और चिल्लाया 'इरेवोलू', उसके दोस्तों ने उत्तर दिया 'शम' । 'इरेवोलू' 'शम' ।

'इसोफ़ेली', 'शम' । 'इसोफ़ेली', 'म्बा'

न्वानक्वो को बहुत शर्म आई—चिथड़ों तथा नंगी पसलियों वाली भीड़ से नहीं लेकिन उनके बीमार जिस्मों तथा दोष लगाती आँखों

से । उसे ज़्यादा बुरा लगता अगर वे कुछ भी न कह कर चुपचाप उसकी गाड़ी के बूट में दूध, अंडे का पाउडर, दलिया, मांस और मछली के डिब्बों को लदता देखते रहते । सामान्यतया चारों ओर फैली मुसीबतों के बीच इस प्रकार की खुशकिस्मती पर शर्म आना अनिवार्य था । लेकिन कोई क्या कर सकता था । दूर ओग्बू गाँव में रह रही उसकी पत्नी और चार बच्चे पूरी तरह उस द्वारा भेजी गई राहत पर निर्भर थे । वह उन्हें क्वाशीख़ोर जैसी घातक बीमारी के मुँह में तो नहीं धकेल सकता था । वह सिर्फ़ इतना कर सकता था—और कर रहा था—कि जब भी उसे आज की तरह अच्छी रसद मिल जाती थी तो वह उसका कुछ हिस्सा अपने ड्राइवर जॉनसन को दे देता था जिसकी पत्नी और छह बच्चे थे—या सात—और जिसकी तनख़्वाह दस पाउंड प्रति माह थी । बाज़ार में 'गारी' की कीमत एक पाउंड प्रति सिगरेट-टिन तक पहुँच गई थी । ऐसी हालत में वह भीड़ के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था । ज़्यादा से ज़्यादा वह अपने पड़ोसी के लिए कुछ कर सकता था । बस यही कुछ ।

औवैरी से वापस आते समय, सड़क के किनारे खड़ी एक खूबसूरत लड़की ने लिफ़्ट माँगी । उसने ड्राइवर को रुकने को कहा । चारों ओर से बीसियों पैदल चलनेवाले—धूल से सने और थके—जिनमें कुछ फ़ौजी थे और कुछ सिविलयन गाड़ी की ओर झपटे ।

"नहीं, नहीं, नहीं," न्वानक्वो ने सख़्ती से कहा—"मैं तो उस सुन्दरी के लिए रुका हूँ । मेरा टायर ख़राब है और मैं सिर्फ़ एक ही यात्री को ले सकता हूँ । सॉरी !"

"बेटे प्लीज" । हैंडल पकड़ते हुए एक निराश बुढ़िया ने कहा

"बुढ़िया तू मरना चाहती है ?" ड्राइवर ने उसे धकेलते हुए और गाड़ी बढ़ाते हुए कहा । न्वानक्वो ने अब तक किताब खोल ली थी और नज़रें उसमें गड़ा दी थीं । लगभग एक मील तक उसने लड़की की तरफ़ देखा ही नहीं । आखिर लड़की को चुप्पी बहुत भारी लगी और उसने कहा :

"आपने आज मुझे बचा लिया । शुक्रिया ।"

"इसमें क्या बात है । कहाँ जा रही हो ?"

"औवैरी, आपने मुझे पहचाना नहीं ?'

"ओ, हाँ ज़रूर । मैं भी कितना बेवकूफ़ हूँ । तुम ?"

"ग्लैडिस ।"

"हाँ, हाँ, फ़ौजी लड़की । ग्लैडिस तुम बदल गई हो । खूबसूरत तो तुम हमेशा ही थीं लेकिन अब तो तुम रूप की रानी लगती हो । क्या करती हो आजकल ?"

"मैं आजकल फ्यूल डायेरेक्ट्रेट में हूँ ।"

"बहुत अच्छी बात है ।"

अच्छी बात तो है, उसने सोचा, लेकिन दुखद भी । वह एक गाढ़े रंग का विग पहने हुए थी, महँगी स्कर्ट और लो-कट का ब्लाउज़ । उसके जूते जरूर गेबन से आये होंगे और काफ़ी महँगे होंगे । कुल मिला कर, न्वानक्वो ने सोचा, उसे किसी अमीर आदमी की रखैल होना चाहिए । ऐसा आदमी जो लड़ाई से पैसों के पहाड़ बना रहा होगा ।

"मैंने आज तुम्हें लिफ़्ट देकर अपना एक उसूल तोड़ा है । आजकल मैं लिफ़्ट बिल्कुल भी नहीं देता ।"

"क्यों ?"

"आख़िर आप कितने लोगों को ले जा सकते हैं ? बेहतर है कि कोशिश ही मत करो । उस बुढ़िया को ही लो ।"

"मैंने सोचा था कि आप उसे बिठा लेंगे ।"

वह इस पर कुछ भी नहीं बोला तथा चुप्पी के एक और दौर के बाद ग्लैडिस को लगा कि वह बुरा मान गया है । इसीलिए उसने जोड़ा :

"मेरे लिए अपना उसूल तोड़ने का शुक्रिया ।" वह उसके थोड़े परे मुड़े हुए चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रही थी । वह मुस्कराया, मुड़ा, उसकी गोदी पर हल्के से हाथ मारा और पूछा, "औवैरी में तुम क्या करने जा रही हो ?"

"मैं अपनी सहेली को मिलने जा रही हूँ ।"

"सहेली ? पक्की बात ?"

"क्यों नहीं...अगर आप मुझे उसके घर तक छोड़ें तो उससे मिल भी सकते हैं । बस एक ही डर है कि वह कहीं वीक-एंड पर निकल न गई हो । तब तो गड़बड़ हो जायेगी ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि अगर वह घर पर न हुई तो सड़क पर सोना पड़ेगा ।"

"मैं तो प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह घर पर न ही हो ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि अगर वह घर पर न हुई तो मैं तुम्हें रात के लिए और सुबह नाश्ते के लिए न्यौता दे सकूँगा ।"

"क्या है ?" उसने ड्राइवर से पूछा, जिसने एकाएक गाड़ी रोक दी थी । जवाब की ज़रूरत ही नहीं थी । सामने खड़ी भीड़ ऊपर देख रही थी । तीनों गाड़ी से निकलते ही झाड़ियों की ओर भागे, गर्दनें पीछे आसमान पर लगी थीं । लेकिन अलार्म ग़लत था । आसमान साफ़ और बेआवाज़ था, सिर्फ़ दो गिद्ध ऊँची उड़ान भर रहे थे । भीड़ में से एक मसखरे ने उनको 'फाइटर' और बॉम्बर' का नाम दे दिया और सभी राहत की हँसी हँस उठे । तीनों फिर गाड़ी में सवार हुए तथा यात्रा जारी रही ।

"अभी रेड्स के लिए जल्दी है," उसने ग्लैडिस से कहा, जो अभी भी अपने दोनों हाथ छातियों पर रखे हुए थी, मानो दिल की धक् , धक् सुन रही हो । "वे दस बजे से पहले नहीं आते हैं ।"

लेकिन ग्लैडिस डर के मारे बोल भी नहीं पा रही थी । न्वानक्वो को एक मौका दिखाई दिया और उसने उसे तुरन्त हथिया लिया—

"तुम्हारी सहेली कहाँ रहती है ?"

"250, डग्लस रोड ।"

"ओह । यह तो शहर के बीचो-बीच है । बहुत ही वाहियात जगह है । न खंदक और न कुछ और । मैं तुम्हें वहाँ शाम छह बजे से पहले जाने की सलाह नहीं दूँगा । सुरक्षित नहीं है । अगर तुम्हें बुरा न लगे तो तुम्हें मैं अपने यहाँ लिए चलता हूँ । जैसे ही छह बजेंगे मैं तुम्हें तुम्हारी सहेली के यहाँ छोड़ आऊँगा । ठीक है ?"

"ठीक है," उसने बेजान-से स्वर में कहा । "मुझे इससे बहुत डर लगता है । इसीलिए मैनें औवैरी में काम करने से भी इन्कार कर दिया था । जाने किसने मुझे आज यहाँ आने की सलाह दी थी ।"

"कोई बात नहीं । हमें तो आदत हो गई है ।"

"लेकिन आप के साथ आपका परिवार तो नहीं है न ?"

"नहीं," उसने कहा, "किसी का भी परिवार यहाँ नहीं है । कहते हम हैं कि इसका कारण एयर-रेड्स हैं लेकिन सच्चाई कुछ और है । औवैरी मौज़-मस्ती का शहर है और हम लोग मस्त कुँवारों की तरह रहते हैं ।"

"मैंने भी कुछ ऐसा ही सुना है ।"

"सुना ही नहीं, तुम आज देखोगी भी । मैं तुम्हें आज एक बहुत ही मस्ती-भरी पार्टी में ले जाऊँगा । मेरे एक दोस्त का जो लेफ़्टीनेंट कर्नल है, आज जन्मदिवस है । उसकी पार्टी है । उन्होंने साउंड स्मैशर्स बैंड किराये पर लिया है । मुझे विश्वास है तुम्हें मज़ा आयेगा ।"

लेकिन उसे इस बात पर शर्म आई । उसे पार्टियों तथा रास-रंग से बहुत चिढ़ थी जबकि उसके दोस्त मक्खियों की तरह उनसे चिपके रहते थे । और यह सब बात इसलिये कर रहा था क्योंकि वह एक लड़की को घर ले जाना चाहता था । और लड़की भी वह जिसका एक समय जंग में अटूट विश्वास था और जिसे (उसे यकीन था) किसी रंगरेलिये ने धोखा दिया था । क्षोभ में उसने सिर हिलाया ।

"क्या हुआ ?" ग्लैडिस ने पूछा ।

"कुछ नहीं । यूँ ही कुछ सोचने लगा था ।"

बाक़ी यात्रा लगभग चुप्पी में कटी ।

वह इतनी तेज़ी से उसके घर में घुल-मिल गयी जैसे कि उसकी नियमित गर्ल-फ्रैंड हो । उसने घरेलू पोशाक पहनी और अपना भड़कीला विग उतार दिया ।

"तुम्हारे बालों की सजावट बहुत अच्छी है । तुम इन्हें विग में क्यों छुपाये रखती हो ?"

"शुक्रिया," उसने कुछ देर तक उसके सवाल का जवाब दिया ही नहीं ।

फिर कहा, "आदमी लोग भी मसखरे होते हैं ।"

"क्यों ?"

"तुम तो रूप की रानी लगती हो", उसने उसकी नक़ल उतारी ।

"ओह, वह बात । मैं तो उसे अक्षरक्षः सच मानता हूँ ।" उसने उसे अपनी ओर खींचा और चूम लिया । न तो उसने ऐतराज़ ही किया और न ही पूरी तरह समर्पण । शुरूआत के लिए न्वानक्वो को यह अच्छा लगा । इन दिनों बहुत-सी लड़कियाँ आसानी से मान जाती थीं । कुछ लोगों ने इसे 'बीमारी-ए-जंग' का नाम दे दिया था ।

कुछ देर बाद वह अपने दफ़्तर हाज़िरी लगाने गया और वह रसोई में लंच के लिए नौकर की मदद करने लगी । उसने सिर्फ़ हाज़िरी ही लगाई होगी क्योंकि वह आधे घंटे में ही लौट आया । हाथ मलते हुए बोला कि वह अपनी रूप की रानी से ज़्यादा देर दूर नहीं रह सकता था ।

जब वे लंच कर रहे थे तो वह बोली, "तुम्हारे फ़्रिज में तो कुछ भी नहीं है !"

"जैसे ?" उसने बुरा-सा मानते हुए पूछा ।

"जैसे मांस", उसने बिना झिझक के उत्तर दिया ।

"तुम अभी भी मांस खाती हो ?" उसने सवाल किया ।

"मैं भला कौन होती हूँ । लेकिन आप जैसे बड़े लोग खाते हैं ।"

"मुझे पता नहीं, तुम किन बड़े लोगों की बात कर रही हो । लेकिन वे मेरे जैसे नहीं हैं । मैं न तो दुश्मन से कारोबार करके पैसा बनाता हूँ और न ही राहत का सामान बेचकर या........'

"आग्स्टा का ब्वॉय-फ्रेंड भी ये सब नहीं करता । उसे सिर्फ़ विदेशी-मुद्रा मिलती है ।"

"कैसे मिलती है ? वह सरकार को धोखा देता है—ऐसे मिलती है उसे विदेशी मुद्रा ।"

"चाहे वह कोई भी हो । वैसे यह आग्स्टा कौन है ?"

"मेरी सहेली ।"

"ओह ।"

"पिछली बार उसने मुझे तीन डॉलर दिये थे जिन्हें मैंने पैंतालीस

पाउंड में बदल लिया । उस आदमी ने आग्स्टा को पचास डॉलर दिये थे ।"

"ख़ैर मेरी प्यारी, मैं विदेशी मुद्रा की भी दलाली नहीं करता और मेरे फ़्रिज में मांस भी नहीं है । हम एक जंग लड़ रहे हैं और मुझे सिर्फ़ यह पता है कि फ्रंट पर हमारे कुछ नौजवान तीन-तीन दिन में एक बार जौ का पानी पीकर लड़ रहे हैं ।"

"यह तो ठीक ही है । बंदर लड़ी हैं, लंगूर ख़ाई हैं ।"

"बात यह भी नहीं है—इससे भी बुरी है", उसने कहा । गुस्से से उसकी ज़ुबान लड़खड़ाने लगी थी । "लोग हर रोज़ मारे जा रहे हैं । इस वक़्त जब हम-तुम बात कर रहे हैं, उस वक़्त भी कोई मारा जा रहा है ।"

"यह तो ठीक है", उसने फिर कहा ।

"हवाई जहाज़ !" लड़का रसोई से चिल्लाया ।

"मेरी माँ"—ग्लैडिस चिल्लाई । जैसे ही वे पाम के पत्तों और लाल मिट्टी से बनी ख़ंदक की ओर, सिर पर हाथ धरे, शरीर को झुकाये हुए भागे, आसमान जेट विमानों तथा घरेलू विमान-भेदी तोपों की गर्जती आवाज़ से फट पड़ा ।

ख़ंदक में, विमानों के चले जाने के बाद और देर से शुरू हुई तोपों की घन गरज ख़त्म हो जाने के बाद भी वह उससे चिपकी रही ।

"वह जहाज़ तो सिर्फ़ ऊपर से गुज़र रहा था", न्वानक्वो ने कहा ।

आवाज़ कुछ काँप-सी रही थी । "उसने कुछ भी नहीं गिराया । उसकी दिशा से लग रहा था कि लड़ाई के मोर्चे पर जा रहा था । शायद हमारे सैनिक उन पर दबाव डाल रहे हैं । इसीलिए वे ऐसा करते हैं । जब भी हमारे सैनिक दबाव डालते हैं वे रूसियों और मिस्र को हवाई-जहाज़ों के लिए एस ओ एस भेज देते हैं । उसने लम्बी साँस ली ।

उसने कुछ भी नहीं कहा, सिर्फ़ उससे चिपकी रही । वे सुनते रहे । उनका नौकर साथ वाले घर के नौकर को बतला रहा था कि वे दो थे । एक ने यूँ डाइव मारी और दूसरे ने यूँ ।

"हम भी अच्छी तरह देख रहे हैं", दूसरे ने उतने ही उत्साह से कहा । "कहना तो नहीं चाहिए लेकिन इन मसीनों से लोगों का मरना देखने में सुन्दर लगेगा न, भगवान क़सम ।"

"सोचो !" आख़िरकार ग्लैडिस ने ज़ुबान का इस्तेमाल करते हुए कहा । न्वानक्वो ने सोचा कि वह चन्द लफ़्ज़ों में ही या सिर्फ़ एक ही लफ़्ज से अर्थ की कई परतों को व्यक्त कर सकती थी । इस एक लफ़्ज़ में—सोचो —आश्चर्य, आलोचना तथा शायद इन लोगो के लिए एक तरह की प्रशंसा भी छिपी थी जो मौत के हरकारों के बारे में भी मज़ाक कर सकते थे ।

"डरो मत," उसने कहा । वह उसके और नज़दीक आ गई और वह उसे चूमने लगा, उसकी छातियाँ दबाने लगा । वह धीरे-धीरे खुलने लगी और फिर पूरी तरह से खुल गई । खंदक में अंधेरा था, वहाँ झाड़ू भी नहीं लगी थी और उसमें कीड़े-पतंगे हो सकते थे । उसने घर में से चटाई लाने की सोची फिर ख़्याल छोड़ दिया । और कोई हवाई-जहाज़ आ सकता था । पड़ोसी या आता-जाता कोई आकर उनके ऊपर पड़ सकता था । यह तो लगभग वैसी ही परिस्थिति होगी जिसमें लोगों ने हवाई-हमले के समय दिन-दहाड़े एक आदमी को नंग-धड़ंग अपने बेड-रूम से निकलकर भागते देखा था और उसके पीछे-पीछे वैसी ही हालत में एक औरत भी थी ।

जैसा कि ग्लैडिस को डर था, उसकी सहेली घर पर नहीं थी । लगता था कि उसके प्रभावशाली दोस्त ने लिबरविल में ख़रीदारी के लिए उसके पीछे हवाई-जहाज में एक सीट हासिल कर ली थी । कम-से कम पड़ोसियों को तो यही अन्दाज़ था ।

"कमाल है", न्वानक्वो ने वापिसी पर कहा । "वह लड़ाकू विमान पर जूतों, विगों, पैंटों, ब्रा, कॉस्मैटिक्स और ऐसी चीज़ों से लदी-फँदी लौटेगी जिन्हें फिर वह हज़ारों पाउंड की कीमत पर बेच देगी । तुम लड़कियाँ सचमुच जंग पर हो, नहीं !"

वह कुछ नहीं बोली और उसे लगा कि आख़िरकार वह उसे कचोटने में सफल हो गया है । लेकिन एकाएक वह बोली, "तुम

मर्द लोग तो चाहते ही हो कि हम यही सब कुछ करें ।"

"ख़ैर," उसने कहा, "मैं एक ऐसा मर्द हूँ जो नहीं चाहता कि तुम यह सब करो । तुम्हें ख़ाकी जीन्स में वह लड़की याद है जिसने बेरहमी से चेक-पॉइंट पर मेरी तलाशी ली थी ?"

वह हँसने लगी ।

"मैं चाहता हूँ तुम फिर से वही लड़की बन जाओ । तुम्हें याद है ?" कोई विग नहीं, और जहाँ तक मुझे याद है कोई ईयरिंग तक नहीं..."

"देखो, झूठ नहीं...मैंने ईयरिंग पहन रखे थे ।"

"चलो ठीक है । लेकिन समझ आई कि मैं क्या कह रहा हूँ ।"

"वो वक़्त गया । अब तो सब बचना चाहते हैं । इसे कहते हैं नम्बर छह । तुम अपना नम्बर छह निकालो; मैं अपना नम्बर छह निकालती हूँ । सब कुछ ठीक-ठाक ।"

लेफ़्टिनेंट कर्नल की पार्टी में एक अजीब -सी बात हो गई । लेकिन उसके होने से पहले सब ठीक-ठाक चल रहा था । बकरे का मांस था, मुर्गा और चावल तथा ढेर-सी देसी शराब, जिसमें से एक का नाम उन्होंने ट्रेसर रख छोड़ा था, क्योंकि वह हलक़ को जलाती हुई उतरती थी । मज़ाक की बात तो यह थी कि बोतल में देखने पर वह नारंगी के रस जैसी सीधी-सादी लगती थी । लेकिन सबसे ज़्यादा जिस चीज़ ने हंगामा खड़ा किया वह थी डबल-रोटी । असली । बैंड भी अच्छा और लड़कियाँ भी बहुत-सी थीं । माहौल को और भी बेहतर बनाने के लिए दो गोरे आ निकले जो रेडक्रॉस में थे । साथ में लाये वे एक बोतल कूर्वेज़्यो की और एक स्कॉच की । पार्टी ने पहले तो खड़े होकर उनका अभिनन्दन किया और फिर सभी भागे एक-एक घूँट पाने के लिए । कुछ देर बाद एक गोरे के व्यवहार से लगा कि उसने पहले से ही काफ़ी पी रखी थी, जिसका कारण शायद यह था कि गई रात एक पायलेट जिसे वह अच्छी तरह जानता था, ख़राब मौसम में राहत सामग्री लाते समय एयरपोर्ट पर हवाई-दुर्घटना में मारा गया था ।

पार्टी में उस समय तक कम लोगों ने ही इस दुर्घटना के बारे में सुना था । सो सारे वातावरण में तुरन्त मुर्दनी-सी छा गई । नाच रहे कुछ जोड़े तुरन्त वापस अपनी सीटों पर चले गये तथा बैंड बजना बन्द हो गया । तब एकाएक अकारण ही रेड-क्रॉस वाला आदमी गरज पडा : "एक आदमी ने—शरीफ़ आदमी ने—क्यों अपनी जान दे दी । बेकार ही । चार्ली को मरने की ज़रूरत नहीं थी । इस सड़ियल जगह के लिए तो बिल्कुल नहीं । यहाँ हर चीज़ बू मारती है । ये लड़कियाँ भी जो बनी-ठनी, मुस्कराती यहाँ आई हैं, किसी काम की नहीं हैं, मछली का एक टुकड़ा— या एक अमेरिकी डॉलर—बस और ये साली हमबिस्तर होने को तैयार हैं ।"

उबाल के बाद आई चुप्पी में एक नौजवान अफ़सर उसके पास गया और उसे तीन तमाचे जड़ दिये—दायें ! बायें ! उसे सीट से खींच कर उठा लिया (उसकी आँखों में आँसुओं जैसा कुछ था) और बाहर धकेल दिया । उसका दोस्त भी जिसने उसे चुप कराने की कोशिश की थी, पीछे-पीछे बाहर चला गया । निस्तब्ध पार्टी में उनकी कार के जाने की आवाज़ साफ़ सुनाई दी । अफ़सर जिसने तमाचे जड़े थे, हाथ झाड़ता हुआ अपनी सीट पर वापस आ गया ।

"साला चूतिया !" उसने रोबीली आवाज़ में कहा । सभी लड़कियों ने अपनी नज़रों से उसे अहसास करा दिया कि वे उसे मर्द और हीरो समझती हैं ।

"आप उसे जानते हैं ?" ग्लैडिस ने न्वानक्वो से पूछा । उसने उत्तर नहीं दिया । बदले में सारी पार्टी को सम्बोधित करते हुए कहा :

"वह पिये हुए था," उसने कहा ।

"मुझे इस बात की परवाह नहीं," अफ़सर ने कहा, "जब आदमी पिये होता है तभी वह वही कहता है जो उसके मन में होता है ।"

"तो तुमने उसे उस बात के लिए पीटा जो उसके मन में थी," मेज़बान ने कहा ।

"ऐसी ही भावना होनी चाहिए, जो ।"

"शुक्रिया जनाब," जो ने सैल्यूट करते हुए कहा ।

"तो उसका नाम जो है ।" ग्लैडिस और उसके बायीं और बैठी लड़की ने एक दूसरे की तरफ़ मुड़ते हुए एक साथ कहा ।

उसी समय न्वानक्वो ओर दूसरी ओर बैठा एक और दोस्त एक दूसरे से दबी जुबान में, बहुत ही दबी जुबान में कह रहे थे कि हालाँकि वह आदमी बददिमाग़ और बेहूदा था, लेकिन लड़कियों के बारे में उसने जो कुछ भी कहा था वह दुर्भाग्यवश कटु सत्य था, सिर्फ़ कहनेवाला आदमी ग़लत था ।

जब डांस दुबारा शुरू हुआ तो कैप्टन जो ग्लैडिस के पास आया और डांस के लिए कहा । उसके मुँह से लफ़्ज निकलने से पहले ही वह कूदकर खड़ी हो गई । तब उसे अचानक याद आया, वह मुड़ी और उसने न्वानक्वो से इजाज़त माँगी । साथ ही कैप्टन ने भी मुड़कर कहा, "माफ़ कीजिए ।"

"जाइये, जाइये," न्वानक्वो ने दोनों के बीच कहीं देखते हुए कहा ।

डांस देर तक चला और वह बिना जताये उन्हें देखता रहा । कभी-कभी ऊपर से रसद का हवाई जहाज़ गुज़रता तो कोई यह कह कर बत्ती बुझा देता कि कहीं दुश्मन का न हो । लेकिन असल में तो यह अंधेरे में डांस करने का तथा लड़कियों को गुदगुदाने का बहाना था क्योंकि दुश्मन के हवाई जहाज़ों की आवाज़ तो खूब पहचानी हुई थी ।

ग्लैडिस जब वापिस आई तो बहुत संकोच-भरी थी और उसने न्वानक्वो को अपने साथ नाचने को कहा । लेकिन उसने मना कर दिया । "मेरी परवाह मत करो", उसने कहा, "मैं तो यहाँ बैठकर तुम लोगों को डांस करता देखकर मज़े ले रहा हूँ ।"

"तब चलिए," उसने कहा, "अगर आप डांस नहीं करेंगे ।"

"लेकिन मैं तो कभी डांस नहीं करता । विश्वास करो । जाओ, मज़े करो ।"

उसने अगला डांस लेफ़्टिनेंट कर्नल के साथ किया और फ़िर कैप्टन जो के साथ । इसके बाद न्वानक्वो उसे वापस घर ले चलने के

लिए मान गया ।

"मुझे दुख है कि मैं डांस नहीं करता", उसने वापस कार में जाते समय कहा ।

"लेकिन मैंने क़सम खाई है जब तक यह लड़ाई चलेगी मैं डांस नहीं करूँगा ।"

वह कुछ नहीं बोली ।

"मैं उस पायलेट जैसे आदमी के बारे में सोच रहा हूँ जो कल रात मारा गया । उसका तो इस लड़ाई से कोई सम्बन्ध नहीं था । वह तो हमारे लिए रसद..."।

"मुझे उम्मीद है कि उसका दोस्त उस जैसा नहीं होगा", ग्लैडिस ने कहा ।

"वह तो अपने दोस्त के कारण उखड़ा हुआ था । लेकिन मैं तो यह कहने की कोशिश कर रहा हूँ कि जब उस जैसे लोग मारे जा रहे हों, जब मोर्चे पर हमारे नौजवान मारे जा रहे हों तो हम लोगों को चुपचाप बैठे रहना या पार्टियाँ देना या डांस करना कितना उचित है ?"

"लेकिन आप ही तो मुझे वहाँ ले गये थे," अन्त में उसने विरोध करते हुए कहा ।

"वो तो आप ही के दोस्त हैं । मैं तो उन्हें जानती भी नहीं थी ।"

"देखो, मेरी प्यारी ग्लैडिस, मैं तुम्हें दोष नहीं दे रहा हूँ । मैं तो तुम्हे सिर्फ़ यह बतला रहा हूँ कि मैं डांस क्यों नहीं करता । ख़ैर छोड़ो कुछ और बात करें...तुम अभी भी कल ही वापिस जाने पर आमादा हो ? मेरा ड्राइवर तुम्हें सोमवार सुबह-सुबह काम पर वक़्त से पहुँचा सकता है । नहीं ? चलो, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी । तुम मालिक हो ।"

जिस आसानी से वह उसके बिस्तर पर चली आई और जिस भाषा का उसने इस्तेमाल किया उससे उसे आश्चर्य हुआ ।

"बमबारी करना चाहते हो ?" उसने पूछा । और जवाब की परवाह किये बिना बोली, "शुरू करो, लेकिन अपने सिपाही अन्दर

मत छोड़ना !"

वह स्वयं भी सिपाही अन्दर नहीं छोड़ना चाहता था, इसीलिए ठीक ही था । लेकिन वह तो देखकर विश्वस्त होना चाहती थी इसलिए उसने उसे दिखाया ।

लड़ाई के दिनों की एक विशिष्ट बात यह थी कि एक ही कन्डोम को बार-बार इस्तेमाल किया जा सकता था । करना यह होता था कि उसे धोकर सुखा लेना होता था और फिर उस पर थोड़ा-सा टैल्कम-पाऊडर छिड़क लेना होता था ताकि रबर चिपचिपा न हो जाये । वह फिर से नये जैसा हो जाता था । लेकिन कन्डोम होना चाहिए अंग्रेज़ी, लिस्बन से लाया हुआ, कोई घटिया माल नहीं जो उतना ही मजबूत होता है जितने गर्म हवाओं के दिनों में कोकोयाम के सूखे पत्ते ।

मज़ा तो आया ही, लेकिन लड़की बेकार थी । यह तो किसी रंडी के साथ सोने जैसा है, उसने सोचा । एक बात तो एकदम साफ़ थी—वह किसी सैनिक अफ़सर की रखैल थी । दो सालों में कितना ज़बर्दस्त फ़र्क़ आ गया है । यही क्या कम कमाल था कि उसे अभी अपना पहला जीवन याद था, अपना नाम याद था ? अगर शराबी रेडक्रॉस वाला क़िस्सा दुबारा हुआ, उसने सोचा, तो वह उसके साथ खड़ा होगा—सारी पार्टी को बतला देगा कि वह आदमी कितना सच्चा है । सारी-की-सारी पीढ़ी को क्या हो गया है ? क्या यही हैं कल की माताएँ !

लेकिन सुबह होते-होते वह बेहतर महसूस करने लगा और उसकी राय में भी उदारता आ गई । उसने सोचा कि ग्लैडिस तो उस समाज का एक छोटा-सा प्रतिबिम्ब है जो पूरी तरह सड़ चुका है और जिसमें कीड़े रेंग रहे हैं । लेकिन शीशा साबुत है , सिर्फ़ थोड़ी सी धूल जम गई है । ज़रूरत है तो एक साफ़, सफ़ेद कपड़े की । "इसके प्रति भी मेरा कुछ फ़र्ज़ है," उसने स्वयं से कहा, "वह छोटी-सी लड़की जिसने एक दिन मुझे हमारे ख़तरों का अहसास कराया था, अब स्वयं ख़तरे में है । कुछ ख़तरनाक असर पड़ रहा है उस पर ।"

वह इस घातक असर की जड़ में जाना चाहता था । वह असर सिर्फ़ उसकी अच्छे दिनों की दोस्त आग्स्टा—या जो कुछ भी उसका नाम रहा हो—का नहीं था । इसकी तह में ज़रूर कोई आदमी होगा—शायद उन बेरहम व्यापारियों में से एक जो विदेशी मुद्रा की चोरी करते हैं और जो युवकों के जीवन को ख़तरे में डालकर उन्हें दुश्मनों की सीमा के पार भेजते हैं ताकि तस्करी की चीज़ों को सिगरेटों में बदलकर करोड़ों कमा सकें । या फिर उन ठेकेदारों में से होगा जो सेना को भेजी जानेवाली रसद की चोरी करके पैसों के पहाड़ बना रहे थे । या शायद कोई घिनौना और बुज़दिल सैनिक अफ़सर जो बैरकों के गन्दे फ़िकरे और बहादुरी के झूठे किस्सों से भरा हुआ था । उसने उसे ड्राइवर के साथ अकेले ही भेजने का फ़ैसला किया था । लेकिन नहीं, वह खुद जायेगा और देखेगा कि वह कहाँ रहती थी । कुछ-न-कुछ ज़रूर सामने आयेगा । इसी पर वह ग्लैडिस को बचाने की योजना आधारित करेगा । जैसे-जैसे वह इस ट्रिप की तैयारी करने लगा, प्रति पल ग्लैडिस के प्रति उसकी भावनायें नर्म होती गयीं । उसने एक दिन पहले रिलीफ़ सेन्टर से मिले राशन का आधा भाग उसके लिए अलग कर दिया । हालाँकि हालात ख़राब थे लेकिन उसने सोचा था कि जिस लड़की के पास खाने के लिए कुछ होगा वह कम ललचायेगी । वह डब्लयू. सी. सी. में अपने दोस्त से हर हफ़्ते उसके लिए कुछ-न-कुछ देने की बात करेगा ।

उपहार देखकर ग्लैडिस की आँखों में आँसू आ गये । न्वानक्वो के पास पैसे तो अधिक नहीं थे, लेकिन उसने जोड़-जाड़ कर बीस पाउंड भी उसे दे दिये ।

"मेरे पास विदेशी मुद्रा तो नहीं है और मैं जानता हूँ कि ये ज़्यादा देर तक नहीं चल सकते, लेकिन..."

वह दौड़कर आई और उससे लिपटकर रोने लगी । उसने उसके ओंठ और आँखें चूम लीं और मुसीबत के मारों के बारे में कुछ बुदबुदाया जिसे वह समझ नहीं पायी । न्वानक्वो ने सोचा कि मेरे कारण ही उसने अपना विग उतार कर बैग में रख लिया है ।

"मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे एक वादा करो", उसने कहा ।

"क्या ?"

"बमबारी वाली वह शब्दावली तुम कभी इस्तेमाल नहीं करोगी ।"

आँसू-भरी आँखों से वह मुस्कराई । "तुम्हें पसन्द नहीं है न ? लेकिन सभी लड़कियाँ ऐसे ही कहती हैं ।"

"ख़ैर, तुम दूसरी लड़कियों से अलग हो । वादा करोगी न ?"

"अच्छा ।"

उन्हें जाने में देर हो गई थी । जब वे गाड़ी में बैठे तो गाड़ी ने स्टार्ट होने से इन्कार कर दिया । इंजन में इधर-उधर हाथ मारने के बाद ड्राइवर ने कहा कि बैटरी बैठ गई थी । न्वानक्वो हैरान हो उठा । उसी हफ़्ते उसने दो सैल बदलने में चौंतीस पाउंड खर्चे थे और बदलने वाले मैकेनिक ने कहा था कि यह छह महीने तक चलेगी । नयी बैटरी ख़रीदने का तो सवाल ही नहीं उठता था क्योंकि उसकी कीमत दो सौ पचास पाउंड तक जा पहुँची थी । ज़रूर ड्राइवर ने कोई लापरवाही दिखाई होगी, उसने सोचा ।

"यह कल रात हुआ होगा," ड्राइवर ने कहा ।

"कल रात क्या हुआ था ?"—न्वानक्वो ने गुस्से से पूछा, यह सोचते हुए कि बदतमीजी की हद हो गई है । लेकिन ड्राइवर का ऐसा कोई आशय नहीं था ।

"क्योंकि हम हैडलाइट्स इस्तेमाल करते रहे थे ।"

"तो क्या हमसे उम्मीद की जाती है कि हम लाइटें न जलायें ? जाओ, धक्का लगाने के लिए कुछ लोगों को लाओ ।" वह ग्लैडिस के साथ बाहर निकलकर घर में वापस चला आया और ड्राइवर पड़ोस के घरों में दूसरे नौकरों को मदद के लिए ढूँढ़ने निकला ।

सड़क पर आध-घंटा आगे-पीछे धक्का लगाने के बाद तथा धक्का लगानेवालों की जोर-शोर से दी गई सलाहों के बाद गाड़ी में जान वापस आई और एकज़ॉस्ट से धुएँ के काले बादल निकलने लगे ।

जब वे चले तो उसकी घड़ी में साढ़े आठ बजे थे। कुछ मील दूर एक अपाहिज़ सिपाही ने लिफ़्ट के लिए हाथ दिया ।

"रोको !" न्वानक्वो चिल्लाया । ड्राइवर ने ब्रेक पर अपना पूरा पैर जाम कर दिया और फिर आश्चर्य से मालिक की ओर देखा ।

"तुमने उस सिपाही को हाथ हिलाते नहीं देखा ? वापिस चलो और उसे बिठाओ ।"

"माफ़ कीजिए, सर", ड्राइवर ने कहा, "मुझे पता नहीं था कि सा'ब लिफ़्ट देना माँगता ।"

"अगर नहीं पता तो पूछो । वापिस लो ।"

सिपाही जो छोटा-सा लड़का-भर था, पसीने से लथपथ चीकट-सी ख़ाकी वर्दी पहने था और घुटने से नीचे उसकी टाँग ग़ायब थी । यह जानकर कि कार उसके लिए रुकी थी वह सिर्फ़ आभारी ही नहीं बल्कि चकित भी था । उसने पहले लकड़ी की, अपनी घटिया-सी बैसाखियाँ पकड़ाईं जिन्हें ड्राइवर ने आगे दोनों सीटों के बीच टिका दिया, फिर वह स्वयं अन्दर बैठ गया ।

"शुक्रिया, सर," उसने गर्दन पीछे घुमाते हुए कहा । उसकी साँस बुरी तरह फूल रही थी ।

"मैं आपका आभारी हूँ । मैडम, शुक्रिया !"

"खुशी तो हमें है," न्वानक्वो ने कहा । यह घाव कहाँ लगा ?"

"अजुमिनी पर, सर । दस जनवरी को ।"

"कोई बात नहीं । सब ठीक हो जायेगा । हमें तुम नौजवानों पर गर्व है । सब ख़त्म हो जाने पर तुम लोगों को उचित पदक मिलेंगे यह हम विश्वास दिलाते हैं ।"

"मैं भगवान से आपके लिए प्रार्थना करूँगा, सर ।"

अगले-घंटे तक वे चुपचाप रहे । जैसे ही गाड़ी एक पुल की तरफ़ उतराई से उतरी, कोई चिल्लाया—शायद ड्राईवर या सिपाही—"वे आ गये !" ब्रेक की आवाज़ चिल्लाहट और आसमान फटने की आवाज में घुल गई । गाड़ी रुकने से पहले ही दरवाज़े खुल गये और वे अन्धाधुंध झाड़ियों की ओर भागने लगे । ग्लैडिस न्वानक्वो से आगे थी । तब उस शोर-शराबे में उन्होंने सिपाही के चिल्लाने की आवाज़ सुनी, "आकर, मेरे लिए दरवाज़ा खोलो !" उसे ग्लैडिस के रुकने का आभास हुआ और फिर वह उससे आगे निकल गया । उसने ग्लैडिस को भागते रहने को कहा । तभी उस अस्त-व्यस्त वातावरण में एक ऊँची सीटी की आवाज़ बरछे की तरह नीचे गिरी, ज़ोर की हलचल के साथ एक धमाका हुआ और सब कुछ तितर-बितर हो गया । जिस पेड़ से वह लगा खड़ा था वह दूर झाड़ियों में जा गिरा । फिर एक और भयानक ऊँची सीटी की आवाज़ और आस-पास वही तोड़-फोड़ फिर एक और, और उसके बाद न्वानक्वो को कुछ सुनाई नहीं दिया ।

वह उठा तो चारों ओर रोने की आवाज़ें थीं, धुआँ था, बदबू और चिरायँध का माहौल था । उसने खुद को घसीटा तथा उन आवाज़ों की ओर चला ।

दूर से उसने ड्राइवर को आँसुओं और खून से भरा अपनी ओर आते देखा । फिर उसकी नज़र गई—अपनी गाड़ी के चिथड़ों तथा लड़की और सिपाही की गड्ड-मड्ड, क्षत-विक्षत लाशों की ओर—और वह चिल्लाकर ढह पड़ा ।

मृतकों का फुटपाथ

माईकल ओबी की आशा वक्त से पहले ही पूर्ण हो गयी । जनवरी 1949 में उसे एनडूमे स्कूल का हेडमास्टर नियुक्त कर दिया गया। चूँकि यह स्कूल हमेशा से ही पिछड़ा हुआ स्कूल था इसलिए उसे चलाने के लिए मिशन के अधिकारियों ने एक युवा और कर्मठ आदमी को वहाँ भेजने का फ़ैसला किया था । ओबी ने यह ज़िम्मेदारी काफ़ी उत्साह से सँभाली । उसके दिमाग़ में बहुत से नये विचार थे जिन्हें क्रियान्वित करने का यही अवसर था । उसने अच्छी सैकेन्डरी शिक्षा प्राप्त की थी जिसके फलस्वरूप सरकारी रिकार्डों में उसे प्रधान-अध्यापक का दर्जा दिया गया था और मिशन-क्षेत्र के हेडमास्टरों में उसकी श्रेणी अलग ही थी । बूढ़े और कम पढ़े-लिखे लोगों की आलोचना करने में वह कभी भी हिचकिचाता नहीं था ।

"हम पूरी कोशिश करेंगे," उसने उत्तर दिया । "हम खूबसूरत बग़ीचे लगायेंगे । सभी कुछ आधुनिक तथा खुशनुमा होगा ।" शादी के इन दो सालों वह भी अपने पति के आधुनिक तरीकों से उतनी ही प्रभावित हुई थी जितनी कि उसकी इन बूढ़े और रिटायर्ड लोगों की आलोचना से, जिन्हें उसके अनुसार औनित्शा मार्केट में दुकानदार होना चाहिए था न कि अध्यापक । वह तो अभी से स्वयं को युवा हेडमास्टर की प्रशंसनीय पत्नी के रूप में देखने लगी थी जिसे सब लोग स्कूल की रानी मानेंगे । दूसरे अध्यापकों की पत्नियाँ उसकी प्रतिष्ठा से ईर्ष्या करेंगी । वही हर चीज़ में फ़ैशन निर्धारित करेगी...तब एकाएक उसे लगा कि शायद अन्य बीवियाँ हों ही नहीं । आशा और निराशा के बीच झूलते हुए उसने चिन्तित स्वर में अपने पति से पूछा।

"हमारे सभी साथी युवा तथा अविवाहित हैं, जो कि अच्छी बात है ।"

उसने उत्साह से उत्तर दिया । लेकिन एकबारगी ओबी की पत्नी उसके इस उत्साह में शरीक़ नहीं हुई ।

"क्यों ?"

"क्यों क्या ?" वे अपना सारा समय तथा शक्ति स्कूल में जो लगायेंगे ।"

नैन्सी का दिल बुझ गया । कुछ क्षणों के लिए वह स्कूल के प्रति संशयी हो गयी । लेकिन यह सिर्फ़ कुछ क्षणों के लिए ही था । अपनी इस छोटी-सी बदकिस्मती के लिए वह अपने पति के अच्छे भविष्य के प्रति अनुदार नहीं बन सकती थी । उसने कुर्सी में सिमटे अपने पति की ओर देखा । उसके कन्धे झुके हुए थे और वह कमज़ोर-सा लग रहा था । लेकिन वह कभी-कभी कर्मशक्ति से लोगों को आश्चर्यचकित कर देता था । उसकी इसी वर्तमान मुद्रा में उसकी सारी शारीरिक शक्ति उसके चेहरे के अंदर धँसी आँखों के पीछे केन्द्रित हो गयी थी जिसके कारण उनमें एक भेदक शक्ति आ गयी थी । कुल मिलाकर वह बदसूरत नहीं लगता था ।

"सोच के किस दरिया में खो गये हो तुम, माइक", नैन्सी ने कुछ देर बाद कहा । बोलने का अन्दाज़ औरतों की मैगज़ीन जैसा था ।

"मैं सोच रहा था कि हमें कैसा बढ़िया अवसर मिला है, इन लोगों को यह बताने का कि स्कूल कैसे चलाया जाता है ?"

एनडूमे स्कूल हर लिहाज़ से पिछड़ा हुआ था । मिस्टर ओबी ने अपना जी-जहान लगा दिया तथा मिसेज़ ओबी ने भी । ओबी के दो उद्देश्य थे । शिक्षा का स्तर उँचा उठे तथा स्कूल का कम्पाउंड बहुत ही खूबसूरत बन जाये । बरसात आते ही नैन्सी के सपनों का बाग़ साकार हो उठा तथा फलने-फूलने लगा । लाल-पीले रंग वाली अड़हुल तथा बादाम की सुन्दर बाड़ से स्कूल का कम्पाउंड आस-पास के जंगल-झाड़ों से अलग दिखाई पड़ने लगा ।

एक शाम जब ओबी अपने प्रयत्नों को प्रशंसा की दृष्टि से निहार रहा था तो उसे एक बुढ़िया को गेंदे की क्यारी तथा बाड़ के बीच से जाता देख कर गहरा धक्का लगा । पास जाकर देखने पर हल्का पड़ गया एक रास्ता दिखाई दिया जो गाँव से आकर स्कूल के कम्पाउंड

के बीच से होकर दूसरी ओर जंगल में जाता था । लगता था कि रास्ता अक्सर इस्तेमाल नहीं होता था ।

"मैं हैरान हूँ," उसने एक अध्यापक से कहा जो तीन वर्षों से स्कूल में था, "कि आप लोगों ने गाँव वालों को इस कच्चे रास्ते का इस्तेमाल करने दिया है । यह बात एकदम अविश्वसनीय लगती है ।" उसने अस्वीकारता में सिर हिलाया ।

"यह रास्ता," अध्यापक ने खेदपूर्वक कहा, "उनके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण जान पड़ता है । हालाँकि इसका इस्तेमाल कम होता है लेकिन यह गाँव के पूजास्थल को उनके क़ब्रिस्तान से जोड़ता है ।"

"लेकिन इसका स्कूल से क्या सम्बन्ध है ?" हेडमास्टर ने पूछा ।

"यह तो मुझे पता नहीं," दूसरे ने कन्धे उचकाते हुए कहा । "लेकिन मुझे याद है कि कुछ समय पहले जब हमने इसे बन्द करने की कोशिश की थी तो बलवा हो गया था ।"

"वह तो कुछ समय पहले की बात थी । लेकिन यह रास्ता अब इस्तेमाल नहीं होगा ।" ओबी ने कहा और चला आया । "जब अगले हफ़्ते सरकारी शिक्षा अफ़सर स्कूल की इंस्पेक्शन करने आयेंगे तो क्या कहेंगे ? हो सकता है ठीक इंस्पेक्शन के समय गाँव वाले स्कूल के किसी कमरे का उपयोग किसी गर्हित कर्म-काण्ड के लिए करना चाहें ।"

जहाँ पर रास्ता स्कूल में प्रवेश करता था और जहाँ ख़त्म होता था, उन दोनों स्थानों पर मोटे, भारी डण्डे गाड़ दिये गये । कँटीली तार लगाकर उन्हें और भी मज़बूत कर दिया गया ।

तीन दिन बाद 'आनी' का पुरोहित हेडमास्टर के पास आया । वह बुज़ुर्ग था और झुक कर चलता था । उसके पास एक मोटी-सी वाकिंग-स्टिक थी जिसे वह बहस के दौरान किसी नयी दलील पर ज़ोर देने के लिए ज़ोर से फ़र्श पर ठोंकता था ।

"मैंने सुना है," उसने आरम्भिक अभिवादन के बाद कहा, "कि हमारा पारम्परिक रास्ता बन्द कर दिया गया है..."

"हाँ," मिस्टर ओबी ने उत्तर दिया । "हम लोग स्कूल के कम्पाउंड को राष्ट्रीय मार्ग बनने नहीं दे सकते ।"

"देखो बेटे," पुरोहित ने अपना वाकिंग-स्टिक नीचे लाते हुए कहा, "यह रास्ता तुम्हारे पैदा होने के पहले से है, तुम्हारे पिता के भी पैदा होने के पहले से है । इस गाँव का सारा जीवन इस रास्ते पर निर्भर करता है । हमारे मृतक रिश्तेदार इसी रास्ते से जाते हैं तथा हमारे पूर्वज भी इसी रास्ते से हमें मिलने आते हैं । लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पैदा होनेवाले बच्चे भी इसी रास्ते से आते हैं......।"

चेहरे पर एक तुष्ट-सी मुस्कान लिए ओबी यह सब सुनता रहा । "हमारे स्कूल का मुख्य उद्देश्य," उसने अन्त में कहा, "ऐसे अन्धविश्वासों को मिटाना है । मृतकों को फुटपाथ की आवश्यकता नहीं होती । यह सारा विचार ही उटपटाँग है । हमारी शिक्षा का उद्देश्य यही है कि आपके बच्चे ऐसे विचारों की हँसी उड़ा सकें ।"

"जो तुम कह रहे हो, सच हो सकता है।" पुरोहित ने उत्तर दिया, "लेकिन हम तो अपने पूर्वजों के दिखाये रास्ते पर चल रहे हैं । अगर तुम रास्ता खोल दो तो झंझट समाप्त हो जायेगा । जैसा कि मैं हमेशा से कहता आया हूँ : बाज़ को भी जीने दो और चील को भी ।" वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ ।

"मुझे अफ़सोस है," युवा हेडमास्टर ने कहा,"लेकिन स्कूल का कम्पाउंड आम रास्ता नहीं बन सकता । यह हमारे असूलों के ख़िलाफ़ है । मेरा सुझाव है कि आप स्कूल के बाहर की तरफ़ से एक नया रास्ता बना लीजिए । इसके बनाने में हम अपने बच्चों को हाथ बँटाने के लिए भी देने को तैयार हैं । मेरा ख्याल है थोड़ा-सा लम्बा रास्ता हमारे पूर्वजों को नहीं खटकेगा ।"

"मुझे और कुछ नहीं कहना है," पुरोहित ने कहा । अब तक वह बाहर तक पहुँच चुका था ।

दो दिन बाद, प्रसव में गाँव की एक औरत की मृत्यु हो गयी । तुरन्त एक ओझा की राय ली गयी । उसने बन्द रास्ते द्वारा हुए पूर्वजों के असम्मान के लिए भारी बलिदान का आग्रह किया ।

अगले दिन ओबी जब उठा तो उसके सारे काम पर पानी फिर

गया था । न केवल रास्ते के आस पास की बल्कि सारे स्कूल के चारों ओर लगी बाड़ उखाड़कर फेंक दी गयी थी, फूलों को कुचल दिया गया था और यहाँ तक कि स्कूल की एक इमारत भी गिरा दी गयी थी...उसी दिन एक गोरा निरीक्षक स्कूल की जाँच पड़ताल के लिए आया तथा स्कूल की खस्ता-हालत पर एक निहायत ख़राब रिपोर्ट लिखी । लेकिन इससे भी अधिक गम्भीर बात जो उसने लिखी वह थी, "आदिवासी-युद्ध जैसी स्थिति के बारे में जो गाँव तथा स्कूल के बीच पैदा हो गई थी और जिसके लिए ज़िम्मेदार था स्कूल के नये हेडमास्टर का अनुचित उत्साह ।"

सरोकार

"तुमने पिता को लिख तो दिया है न ?" एक दोपहर को नैने ने पूछा जब वह कसांगा स्ट्रीट, लेगॅास, में अपने कमरे, नम्बर सोलह, में नैमेका के साथ बैठी हुई थी ।

"नहीं", मैं अभी इस बारे में सोच रहा हूँ । मेरा ख़्याल है कि मैं इसके बारे में उन्हें तभी बतलाऊंगा जब मैं छुट्टी में घर जाऊंगा ।"

"लेकिन क्यों ? तुम्हारी छुट्टी में तो अभी बहुत दिन हैं—पूरे छह हफ़्ते पड़े हैं । हमें उन्हें अपनी खुशी में तुरन्त शरीक़ कर लेना चाहिए ।"

नैमेका कुछ क्षणों तक चुप रहा, फिर उसने बहुत धीरे-धीरे कहना शुरू किया जैसे कि शब्द ढूँढ रहा हो । "काश, मुझे विश्वास होता कि उन्हें इस ख़बर से खुशी ही होगी ।"

"और नहीं तो क्या," नैने ने आश्चर्य के साथ उत्तर दिया, "क्यों नहीं होगी खुशी ?"

"तुमने तो अपना सारा जीवन लेगॅास में ही गुज़ार दिया है इसलिए तुम्हें देश के दूर-दराज़ वाले इलाकों में रहनेवाले लोगों के बारे में कुछ भी पता नहीं है ।"

"तुम हमेशा यही कहते हो । लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि लोग एक-दूसरे से इतने भिन्न हो सकते हैं कि उन्हें अपने बेटों की सगाई पर खुशी न हो ।"

"हाँ" उन्हें बहुत दुख होता है अगर सगाई उन्होंने न कराई हो तो । हमारे केस में तो और भी गड़बड़ है—तुम तो ईबो भी नहीं हो ।"

यह सब इतनी गम्भीरता से और इतना साफ़-साफ़ कहा गया

था कि नैने तुरन्त कुछ कह ही नहीं पायी । शहर के इस सर्वदेशीय वातावरण में उसे यह हमेशा मज़ाक लगता था कि किसी व्यक्ति की जनजाति से यह निर्णीत हो कि वह ब्याह किससे करेगा ।

आख़िर उसने कहा, "तुम्हारा मतलब यह तो नहीं कि उन्हें तुम्हारे मुझसे शादी करने पर इस छोटी-सी बात पर ऐतराज़ होगा कि मैं ईबो नहीं हूँ ? मैं हमेशा समझती थी कि तुम ईबो लोग दूसरों के प्रति सौहार्दभाव रखते हो ।"

"वह तो है ही । लेकिन जहाँ शादी का सवाल है वहाँ इतना आसान नहीं ।" "और यह" नैमेका ने आगे जोड़ा, "ईबो लोगों के लिए कोई नयी बात नहीं है । अगर तुम्हारे पिता ज़िन्दा होते और ईबो क्षेत्र के रहनेवाले होते तो वह भी ठीक मेरे पिता जैसे ही होते ।"

"पता नहीं, ख़ैर, तुम्हारे पिता तुम्हें इतना चाहते हैं कि वह तुम्हें जल्दी ही माफ़ कर देंगे । चलो, चलो, अच्छे बेटे की तरह उन्हें एक अच्छा प्यार भरा पत्र भेज दो न..."

"यह ख़बर उन्हें पहली बार चिट्ठी द्वारा देना ठीक नहीं होगा । पत्र से उन्हें आघात पहुँचेगा, इसका मुझे यक़ीन है ।

"ठीक है, हनी, जैसा चाहो, करो । अपने पिता को तुम्हीं जानते हो ।"

उस शाम नैमेका जब अपने घर की ओर चला तो मन में पिता के विरोध को ख़त्म करने के ही विभिन्न तरीके खोजता रहा, विशेषकर अब जब उसने लड़की ढूँढ ही ली थी । उसने अपने पिता का पत्र नैने को दिखाने की सोची थी लेकिन दुबारा सोचकर उसने ऐसा न करने का फ़ैसला किया । कम-से-कम कुछ देर के लिए तो । उसने पत्र दुबारा पढ़ा और मुस्कराया । उसे उगोए अच्छी तरह याद थी । लम्बी-चौड़ी, भीमकाय लड़की जो सभी लड़कों को नदी किनारे जाते हुए पीटा करती थी—स्वयं उसे भी । पढ़ने लिखने में वह एकदम नालायक़ थी ।

"मैंने एक ऐसी लड़की ढूँढ़ी है जो तुम्हें एकदम भायेगी । उगोए न्वेका जो हमारे ही पड़ोसी जेकब न्वेका की सबसे बड़ी बेटी है—उसकी परवरिश ठीक क्रिश्चियन तरीके से हुई है । जब कुछ साल पहले उसने स्कूल छोड़ा था तो उसके पिता ने काफ़ी समझदारी का परिचय देते हुए उसे एक पादरी के घर पर रहने भेजा था जहाँ उसने उन सब बातों की ट्रेनिंग पायी है जो एक पत्नी के लिए आवश्यक हैं । उसके इतवार वाले स्कूल के अध्यापक ने मुझे बताया है कि वह बाईबल बहुत ही धाराप्रवाह रूप से पढ़ सकती है । मेरा ख़्याल है कि जब तुम दिसम्बर में घर आओगे तो हम उनके साथ आगे बातचीत शुरू करेंगे ।"

लेगॉस से लौटने की दूसरी शाम नैमेका अपने पिता के साथ कैसिया पेड़ के नीचे बैठा था । यह वह स्थान था जहाँ उसके बुज़ुर्ग पिता एकान्त में बैठ कर बाईबल पढ़ा करते थे जब दिसम्बर का गर्म सूरज डूब चुका होता था और हल्की-हल्की हवा पत्तियों को सहलाने लगती थी।

"पिताजी," नैमेका ने एकाएक शुरू किया, "मैं माफ़ी माँगने आया हूँ ।"

"माफ़ी ? किसलिए, मेरे बेटे ?" उसने आश्चर्यचकित होकर पूछा ।

"शादी के सवाल के बारे में ।"

"कौन-सी शादी का सवाल ?"

"मैं नहीं—हमें अवश्य—मेरा मतलब मेरे लिए न्वेके की बेटी से शादी करना असंभव है ।"

"असंभव ? क्यों ।" उसके पिता ने पूछा ।

"मैं उसे प्यार नहीं करता ।"

"किसने कहा कि तुम उसे प्यार करते हो । और करना भी क्यों चाहिए ?" उन्होंने पूछा ।

"आजकल शादियों का ढंग बदल..."

"देखो बेटे", उसके पिता ने टोकते हुए कहा, "कुछ भी नहीं बदला है । पत्नी में आदमी सिर्फ़ अच्छा चरित्र तथा क्रिश्चियन परिवार देखता है ।"

नैमेका को इस तरह की बहस में कोई उम्मीद नहीं दिखाई दी ।

"और साथ ही," उसने आगे कहा, "मेरी सगाई एक ऐसी लड़की से हो चुकी है जिसमें उगोए वाले वे सारे गुण हैं और जो..."

उसके पिता को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ । "क्या कहा तुमने ?" उन्होंने धीरे-धीरे लेकिन बैचेनी से पूछा ।

"वह अच्छी क्रिश्चियन है," उनके लड़के ने जोड़ा, "और लेगॉस में गर्ल्स-स्कूल में अध्यापिका है ।"

"क्या कहा तुमने, अध्यापिका ? नैमेका, अगर तुम इसे अच्छी पत्नी होने की योग्यता मानते हो तो मैं तुम्हें बताना चाहूँगा कि किसी भी क्रिश्चियन औरत को पढ़ाना नहीं चाहिए जैसा कि कोरंथियन्स को सेंट पाल ने अपने पत्र में कहा था, औरतों को चुप रहना चाहिए ।" वह धीरे-से अपनी सीट से उठे और आगे-पीछे टहलने लगे । यह उनका प्रिय विषय था और वे उन चर्च-लीडरों की हमेशा आलोचना करते थे जो औरतों को अपने स्कूलों में पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते थे । काफ़ी समय इस विषय पर लगाने के बाद वह वापिस अपने लड़के की सगाई के विषय पर आये । काफ़ी नर्मी के साथ ।

"ख़ैर, किसकी बेटी है वह ?"

"वह नैने अतांग है ।"

"क्या ?" सारी नम्रता फिर काफ़ूर हो गयी, 'क्या कहा तुमने, नैने अतागा । क्या मतलब है इस सबका ।"

"नैने अतांग । कालाबार से है । मैं सिर्फ़ इसी लड़की से शादी कर सकता हूँ ।"

यह बहुत ही जल्दबाज़ी वाला जवाब था । और नैमेका को डर था कि क़हर टूट पड़ेगा । लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ । उसके पिता चुपचाप अपने कमरे में चले गये । यह एकदम अप्रत्याशित था और नैमेका को समझ में कुछ नहीं आया । उसके पिता की चुप्पी उनके धमकाने वाले भाषण से ज़्यादा भयावह थी । उस रात उन्होंने खाना भी नहीं खाया ।

जब एक दिन बाद उन्होंने नैमेका को बुलाया तो हर तरीके से उसे मना करने की कोशिश की । लेकिन नौजवान ने दिल कड़ा कर रखा था और आख़िर पिता ने यह सोच छोड़ दिया कि अब वह तो हाथ से गया ।

"बेटे । यह मेरा फ़र्ज़ है कि तुम्हें बतलाऊँ कि क्या ठीक है, क्या ग़लत । जिसने भी यह विचार तुम्हारे मन में डाला है, इससे बेहतर था कि वह तुम्हारा गला ही घोंट देता । यह शैतान का काम है ।" उन्होंने इशारे से उसे चले जाने को कहा ।

"पिता जी, जब आप नैने से मिलेंगे तो अपनी धारणा बदल देंगे ।'

"मैं उससे कभी नहीं मिलूँगा," उनका उत्तर था । उस रात के बाद उससे शायद ही कोई बात की हो । लेकिन वह हरदम यही उम्मीद करते रहे कि शायद नैमेका को यह अहसास हो जाये कि वह किस ख़तरे में पड़ने जा रहा है । वह रात-दिन उसके लिए प्रार्थना करते रहे ।

उधर नैमेका पर पिता के दुख का गहरा असर हुआ । लेकिन वह उम्मीद करता रहा कि एक दिन सब ठीक हो जायेगा । अगर उसे पता होता कि उसके लोगों में किसी ने भी आज तक किसी दूसरी भाषा बोलनेवाली लड़की से शादी नहीं की थी, तो उसकी उम्मीद ज़रूर कम हो जाती ।

"ऐसी बात किसी ने कभी नहीं सुनी," कुछ हफ़्ते बाद यह फैसला दिया उसके पिता ने । वह इस छोटे-से वाक्य में अपने सभी लोगों की प्रतिक्रिया सँजोये हुए थे । उनके लड़के के इस तरह के व्यवहार के बाद कुछ लोग उनके साथ हमदर्दी दिखाने आये हुए थे । लड़का वापिस लेगॉस जा चुका था ।

"ऐसी बात किसी ने कभी नहीं सुनी," बुज़ुर्ग ने दुख में सिर हिलाते हुए फिर कहा ।

"भगवान ने क्या कहा था ?" एक व्यक्ति ने पूछा ।

"बेटे पिता के विरुद्ध उठ खड़े होंगे, धर्म-ग्रन्थ में लिखा है ।"

"यह तो अन्त की शुरुआत है," एक और ने कहा ।

चूँकि बहस धर्म की ओर मुड़ चली थी और माडूबोगवू, जो एक व्यावहारिक आदमी था, उसने बहस को फिर आम स्तर पर ला दिया ।

"क्या आपने बेटे के लिए किसी झाड़-फूँक वाले की सलाह ली है ?" उसने पूछा ।

"वह बीमार नहीं है," जवाब मिला ।

"तब और क्या है ? लड़के का दिमाग़ बीमार है और कोई अच्छा ओझा ही उसका दिमाग़ दुरुस्त कर सकता है । उसे जिस दवाई की ज़रूरत है वह है 'अमालिले'—वही जो औरतें अपने पति के किसी और के प्यार में फँस जाने पर उसे वापस लाने के लिए दिया करती हैं । और वह दवाई है भी असरदार ।"

"माडूबोगवू ठीक कहता है," एक और ने कहा, "इस बीमारी का इलाज होना ही चाहिए ।"

"मैं किसी झाड़-फूँक वाले को नहीं बुलाऊँगा," नैमेका के पिता इस मामले में अपने अन्धविश्वासी पड़ोसियों से ज़्यादा ज़िद्दी थे । "मैं दूसरी मिसेज़ औयूबा नहीं बनूँगा । अगर मेरे बेटे को मरना ही है तो मैं चाहूँगा कि अपनी जान वह स्वयं ही ले । इस काम में इसकी बिल्कुल भी मदद नहीं करूँगा ।" "लेकिन क़सूर तो मिसेज औयूबा का ही था," माडूबोगवू ने कहा, "उसे किसी ईमानदार जड़ी-बूटी वाले के पास जाना चाहिए था । वह तो सयानी औरत थी ।"

"वह बेईमान ख़ूनी थी," जोनाथन ने कहा जो वैसे तो अपने पड़ोसियों से बहस नहीं करता था क्योंकि वह मानता था कि वे बहस करने के क़ाबिल ही नहीं थे । दवाई उसके पति के लिए तैयार की गयी थी और उसे बनाते समय उसके पति का ही नाम लिया गया था और मुझे विश्वास है कि उससे पूरा फ़ायदा होता । उसे ओझा ही के खाने में यह कहकर मिलाना कि उसका परीक्षण किया जा रहा है बहुत ही अनैतिक था ।"

छह महीने बाद नैमेका ने अपनी युवा पत्नी को अपने पिता का छोटा-सा पत्र दिखाया :

"मुझे हैरानी है कि तुमने मुझे अपनी शादी की तस्वीर भेजने की जुर्रत की । मैं तो उसे वापिस भेजनेवाला था । लेकिन फिर सोचकर मैंने तुम्हारी पत्नी की तस्वीर काटकर सिर्फ़ उसे ही वापस भेजने का फ़ैसला किया है क्योंकि मुझे उससे कुछ भी लेना-देना नहीं है । काश मुझे तुमसे भी कोई वास्ता न होता ।"

जब नैने ने यह पत्र पढ़ा और उसने उस फटी तस्वीर को देखा तो उसकी आँखें भर आयीं और वह सुबकने लगी ।

"मत रोओ मेरी जान," उसके पति ने कहा । "दरअसल वे अच्छे स्वभाव के लोग हैं और एक दिन वह हमारी शादी को बेहतर समझेंगे ।"

कई वर्ष बीत गये पर वह दिन नहीं आया ।

आठ सालों तक ओकेके अपने बेटे नैमेका से कटे रहे । सिर्फ़ तीन बार उन्होंने उसे पत्र लिखा और वह भी जब नैमेका ने छुट्टी में घर आने के बारे में पूछा ।

"मैं तुम्हें अपने घर में आने नहीं दे सकता", उन्होंने एक बार लिखा ।

"मुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं कि तुम अपनी छुट्टी—या ज़िन्दगी—कहाँ और कैसे काटते हो ।"

नैमेका की शादी का विरोध सिर्फ़ उसके छोटे-से गाँव तक ही सीमित नहीं था । लेगौस में भी, विशेषकर उसकी अपनी जाति के लोगों में यह साफ़ दिखाई देता था । उनकी पत्नियाँ सभाओं में नैने के प्रति विद्वेष नहीं दिखातीं, बल्कि वे उससे इतनी अधिक औपचारिकता दिखाती कि उसे लगने लगता कि वह उनमें से एक नहीं है । लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, नैने उनके विरोध को तोड़ने में सफल हो गयी तथा कुछेक को तो उसने दोस्त भी बना लिया । धीरे-धीरे, न चाहते हुए भी वे यह मानने लगे कि नैने अपना घर उनसे बेहतर तरीक़े से सँभालती थी ।

यह ख़बर धीरे-धीरे ईबो प्रदेश में उसके गाँव में पहुँची कि नैमेका

तथा उसकी युवा पत्नी बहुत ही खुश हैं । लेकिन उसके पिता गाँव के उन गिने-चुने लोगों में से थे जिन्हें इस बारे में कुछ भी नहीं पता था । बेटे का नाम आते ही वे इतना भड़क उठते थे कि लोग उनके सामने जाने से ही घबराते थे । बहुत ही कोशिश करके उन्होंने अपने बेटे को अपने दिमाग़ से दूर किया था । इस तनाव ने तो उन्हें लगभग मार ही दिया था लेकिन वह जूझते रहे और आख़िर जीत उन्हीं की हुई ।

फिर एक दिन उन्हें नैने का एक पत्र मिला । न चाहते हुए भी उन्होंने उस पर नज़र डाली । फिर एकाएक उनके चेहरे का भाव बदल गया और वह ध्यान से पढ़ने लगे ।

> "...जिस दिन से हमारे दो बेटों को पता चला है कि उनके दादा हैं, वे ज़िद कर रहे हैं कि उन्हें उनसे मिलवाया जाये । मेरे लिए उन्हें यह बताना असंभव है कि आप उनसे नहीं मिलेंगे । मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप अगले महीने छुट्टी में नैमेका को उन्हें घर लाने की इजाज़त दे दें । मैं लेगॉस में ही रहूँगी..."

ओकेके को लगा कि उनका बरसों से बाँधा हुआ मंसूबा टूट रहा है । वह खुद को समझाने लगे कि उन्हें हार नहीं माननी चाहिए । उन्होंने सब जज़्बाती अपीलों के विरुद्ध अपने दिल को फ़ौलाद बनाने की कोशिश की । यह पुरानी लडाई को दुबारा से छेड़ना था । उन्होंने एक खिड़की का सहारा लिया और बाहर देखा । गहरे काले बादल आकाश पर छाये हुए थे और एक तेज़ हवा फिजा को सूखी पत्तियों तथा गर्द से भर रही थी । यह वह दौर था जब प्रकृति भी आदमी की लड़ाई में हिस्सा ले रही थी । जल्दी ही बारिश होने लगी—साल की पहली बरसात । बूँदें तेज़ी से गिरने लगीं । साथ ही बिजली चमकी और बादल गरज उठे, जो बदलते मौसम की निशानी थी । ओकेके अपने दो पोतों के बारे में नहीं सोचने की कोशिश कर रहे थे लेकिन उन्हें पता था कि लड़ाई में हार उन्हीं की होगी । उन्होंने अपनी एक प्रिय धुन गुनगुनाने की कोशिश की लेकिन छत पर पड़ रही बूँदों ने लय

को तोड़ दिया । उनका दिमाग़ फिर बच्चों की ओर दौड़ आया । वह उनके लिए दरवाज़े कैसे बन्द कर सकते थे । एक अजीब- सी दिमाग़ी कसरत से ओकेके ने कल्पना की कि वे दोनों इस ख़राब मौसम में अकेले और दुखी उनके बन्द दरवाज़े के बाहर खड़े हैं ।

उस रात ओकेके पश्चात्ताप के कारण सोये नहीं—इस डर से भी कि पोतों से मिले बिना वह कहीं मर ही न जायें ।

पागल

उसे हाट और सीधी सड़कों से बहुत लगाव था । आस-पास का छोटा-मोटा हाट नहीं जहाँ कुछ बातूनी औरतें सूर्यास्त के समय गप्पें हाँकने और शाम के सूप के लिए ओगिली ख़रीदने के लिए इकट्ठी होती हैं, बल्कि बड़ा-सा, लम्बा-चौड़ा हाट जो परिचित, अपरिचित सभी को, दूर, पास सभी जगहों से आकर्षित करता हो । और सड़कें भी कोई धूल भरे फुटपाथों जैसी नहीं जो इस गाँव से शुरू होकर उस नाले तक समाप्त हो जायें, बल्कि लम्बे-चौड़े, काले, रहस्यमय राजमार्ग जिनका न ओर दिखाई दे और न छोर । बहुत खोज के बाद उसने दो ऐसे हाट ढूँढ़ ही निकाले जो एक ऐसे ही राजमार्ग द्वारा जुड़े थे; तभी जाकर समाप्त हुई उसकी खोज । एक हाट था आफ़ो और दूसरा ऐके । उन दोनों के लगने के बीच दो दिन का समय भी उसे खूब रास आया था : ऐके के लिए चलने से पहले उसके पास आफ़ो में अपना साज़ो-सामान समेटने के लिए काफ़ी वक़्त होता था । पहली बार तो रात-भर वह अपनी झुग्गी दुबारा बनाने में ही लगा रहा था क्योंकि दो मोटे-मोटे कूल्हों वाली औरतों ने दिन-भर उससे इस बात पर तकरार की थी कि उस जगह उनका हाट का स्टाल था । पहले तो उसने मुक़ाबला करने की कोशिश की थी लेकिन औरतें उसे वहाँ से निकालने के लिए जाकर अपने आदमियों को ले आई थीं—चार मोटे-तगड़े जंगली साँड ! उसके बाद से वह हमेशा उनसे बचता रहा । हाट की सुबह को ही वह निकल जाता और साँझ के बाद ही सोने के लिए लौटता । और फिर अगली सुबह वह जल्दी से अपना काम निबटा कर निकल पड़ता उस लम्बी, खूबसूरत, अजगर जैसी बल खाती सड़क पर जो सुदूर औगबू शहर के ऐके हाट को जाती

थी । वह अपना डंडा और मुग्दर हर दम अपने दायें हाथ में तैयार रखता था और बायें से सिर पर रखी चीज़ों की टोकरी को सँभालता था । उसने यह मुग्दर पिछले दिनों इसलिए लिया था क्योंकि रास्ते में छोटे-मोटे शोहदे उस पर पत्थर फेंकते थे और उसके नहीं, नहीं उनकी अपनी माँ के नंगेपन का मज़ाक उड़ाते थे ।

वह सड़क के बीचो-बीच चलता था, उससे बातचीत करते हुए । लेकिन एक दिन एक ट्रक का ड्राइवर और उसका साथी चिल्ला कर उस पर टूट पड़े और उसे कई चाँटे रसीद कर दिये । उनका कहना था कि उनका ट्रक उस पर—नहीं नहीं, उनकी अपनी माँ पर—चढ़ने ही वाला था । उस दिन के बाद वह शोर मचानेवाले इन ट्रकों से भी बचने लगा था जिनमें ख़ानाबदोश सवार होते थे ।

एक रात और एक दिन चलने के बाद वह अब ऐके हाट के पास पहुँचनेवाला था । आस-पास की सभी छोटी-मोटी सड़कों से लोग हाट को जानेवाले हजूम में राजमार्ग पर शामिल हो रहे थे । तब उसने और लोगों से अलग हाट की विपरीत दिशा में कुछ युवतियों को सिर पर पानी के बर्तन रखे अपनी ओर आते देखा । उसे आश्चर्य हुआ । तब उसने राजपथ से फूटते एक ढलान-वाले रास्ते पर भी दो और बर्त्तनों को ऊपर उठते देखा । उसे प्यास लग आई और वह रुक सोचने लगा । फिर उसने टोकरी सड़क के किनारे रख दी और ढलान वाले रास्ते की ओर मुड़ा । लेकिन इससे उसने राजमार्ग को बुरा न मानने की प्रार्थना की और न ही उसके बिना यात्रा जारी रखने को कहा । "मैं तुम्हारे लिए भी ले आऊँगा", उसने पीछे की ओर देखते हुए प्यार भरे स्वर में कहा,"मुझे पता है तुम्हें प्यास लगी है ।"

न्विबे ओगबू एक सम्मानित व्यक्ति था जो और भी उन्नति कर रहा था; धनवान और ईमानदार था । उसने अभी शहर के 'ओजो' उपाधि प्राप्त लोगों से कहा था कि आनेवाले दीक्षा-पक्ष में उसका इरादा उनके प्रतिष्ठित समूह में शामिल होने का था ।

"तुम्हारा प्रस्ताव बहुत अच्छा है", उपाधि-प्राप्त लोगों ने कहा । "हम विश्वास तब करेंगे जब हम देखेंगे ।" यह उसे बताने

का एक आदरपूर्ण तरीका था कि वह एक बार फिर देख ले कि उसके पास इस संस्कार को पूरा करने का सामर्थ्य है या नहीं । 'ओजो' बच्चे के नामकरण संस्कार जैसा तो है नहीं । उस आदमी को मुँह छिपाने की जगह कहाँ मिलेगी जो 'ओजो' नाच शुरू करके आँगन में पैर पकड़ के बैठ जाये । लेकिन वयोवृद्धों द्वारा यह चेतावनी सिर्फ़ एक औपचारिकता ही थी क्योंकि न्विबे इतना समझदार था कि कोई नहीं सोच सकता था कि वह ऐसी कोई भी चीज़ शुरू करेगा जिसे वह पूरा न कर सके ।

उस हाट के दिन न्विबे जल्दी उठा था ताकि दोपहर में हाट जाकर दोस्तों के साथ ताड़ी के एक-दो गिलास पीने से पहले और अपनी पत्नियों की झोंपड़ियों की छतों की मरम्मत के लिए फूस के बंडल ख़रीदने से पहले नदी पार के अपने फ़ार्म पर कुछ हल्का-फुल्का काम कर सके । जहाँ तक उसकी अपनी झोंपड़ी का सवाल था उसने उसकी फूस वाली छत के बदले जिंक की छत लगा कर झंझट हमेशा के लिए ही खत्म कर दिया था । देर-सबेर वह अपनी पत्नियों की झोंपड़ियों के साथ भी यह करना चाहता था । मगबोए की झोंपड़ी के साथ तो वह तुरन्त ऐसा कर सकता था लेकिन उसने तब तक इंतज़ार करने का फ़ैसला किया जब तक कि वह दोनों छतों को एक साथ बदल सके नहीं तो उडैनक्वो सारे आँगन को सिर पर उठा लेगी । उडैनक्वो उसकी छोटी पत्नी थी— तीन वर्ष छोटी—लेकिन उसे इस बात की बिल्कुल भी परवाह नहीं थी । अच्छी बात यह थी कि मगबोए शान्तिप्रिय औरत थी जो दूसरी पत्नी से अपने यथोचित आदर की माँग पर ज़ोर नहीं देती थी । कभी-कभी तो वह बिना उत्तर दिये दिन-भर उडैनक्वो की ज़हरीली ज़बान से कड़वी बातें सुनती रहती । और जब वह जवाब देती भी तो उसके शब्द बहुत ही कम होते और दबे स्वर में होते ।

उस सुबह ही उडैनक्वो ने उस पर एक छोटे-से कुत्ते को लेकर द्वेष और हर तरह की भ्रष्टता का आरोप लगाया था ।

"इस छोटे-से पिल्ले ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?" वह इतनी

ज़ोर से चिल्लाई थी कि आधा गाँव सुन सकता था । "मगबोए, मैं पूछती हूँ सुबह-सुबह इस पिल्ले ने ऐसा क्या क़सूर कर दिया ?"

"तुम्हारे पिल्ले ने आज सुबह-सुबह", मगबोए ने उत्तर दिया, "मेरे सूप-वाले बर्तन में अपना पिछला हिस्सा डाल दिया ।"

"फिर ?"

"फिर मैंने उसकी पिटाई की ।"

"तुमने उसकी पिटाई की ! तुम अपना सूप वाला बर्तन ढककर क्यों नहीं रखती । बर्तन को ढकना आसान है कि कुत्ते को मारना ? क्या एक छोटे-से कुत्ते के पास उस औरत से ज़्यादा समझ हो सकती है जो अपने सूपवाले बर्तन को बिना ढके छोड़ देती है... ?"

"उडैनक्वो, बस करो । मैं तुमसे काफ़ी सुन चुकी हूँ ।"

"मगबोए, यह काफ़ी नहीं है, काफ़ी नहीं । मुझे बताओ उस कुत्ते को तुम्हारा क़र्ज़ देना है । मैंने अपने छोटे बच्चे का गंदा खाने के लिए एक कुत्ता रखा और उससे भी तुम्हारी रातों की नींद हराम हो गई । तुम बहुत गंदी औरत हो मगबोए, तुम बहुत ही ख़राब..."

न्विबे अपनी झोंपड़ी में बैठा चुपचाप यह सब सुन रहा था । उडैनक्वो की आवाज़ में उत्तेजना से साफ़ जाहिर था कि वह हाट के समय तक यूँ ही बोलती रह सकती थी । इसलिए उसने अपने विशिष्ट तरीक़े से दखलंदाज़ी की और यह था अपनी बड़ी पत्नी को पुकार कर ।

"मगबोए ! सुबह-सुबह मुझे कुछ शान्ति चाहिए ।"

"तुम्हें ये गालियाँ नहीं सुनाई दे रहीं, उडैनक्वो..."

"मुझे उडैनक्वो का कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है और मुझे इस आँगन में शान्ति चाहिए । अगर उडैनक्वो पागल है तो क्या उसके साथ सभी पागल हो जायें ? क्या सुबह-सुबह इस आँगन में एक पागल औरत काफ़ी नहीं ?"

"लो विक्रमादित्य भी बोले," उडैनक्वो ने मज़ाक उड़ानेवाले स्वर में कहा । "शुक्रिया विक्रमादित्य महाराज ! उडैनक्वो तो हमेशा

ही पागल रही है लेकिन तुम लोग जो भले-चंगे हो तुम्हीं...."

"मुँह बन्द कर, बेशर्म औरत ! नहीं तो कोई जंगली जानवर तेरी आँखे निकाल लेगा आज सुबह ही । अपनी बुराई को सारे ओगबू को सुनाने की बजाए अपने ही आँगन तक सीमित रखना कब सीखोगी तुम ? मैं कहता हूँ बन्द कर अपना मुँह !"

इसके बाद शान्ति हो गई सिवा उडैनक्वो के बच्चे के चिल्लाने की आवाज़ के जो अभी तक बड़ों की आवाज़ के नीचे दबी हुई थी ।

"मत रो, मेरे बाप", उडैनक्वो ने उससे कहा । "वे तुम्हारे पिल्ले को मार डालना चाहते हैं, लेकिन जैसा कि बड़े-बूढ़े कहा करते हैं जो चूज़ों के पीछे भागने का फ़ैसला करता है वही खड्डे में गिरता है..."

दोपहर होते-होते न्विबे ने फ़ार्म पर जो काम करना था, वह निबटा लिया था और अब हाट जाने की तैयारी में था । रास्ते की छोटी नदी में उसने काम करते हुए आये पसीने को साफ़ करने का निश्चय किया, जैसा कि वह हमेशा करता था । उसने आदमियों के नहाने वाले भाग में एक बड़े पत्थर पर अपना अंगवस्त्र उतार कर रखा और पानी में उतर गया । दिन के इस समय में और हाट के कारण भी इस समय आस-पास कोई नहीं था । लेकिन फिर भी शर्म से उसने अपना सिर रास्ते में जंगल की ओर कर लिया ।

पागल उसे काफ़ी देर तक देखता रहा । हर बार जब वह झुक कर अंजुरी में पानी भर कर अपने सिर और शरीर की ओर ले जाता तो पागल इसके नितम्बों के बीच के ख़ाली स्थान को देख कर मुस्कराता । यह वही मोटा आदमी है जो अपने जैसे तीन दूसरों को साथ लेकर आफ़ो हाट में मुझे मेरी झोंपड़ी से निकालने आया था । उसने सिर हिलाया। और उसे याद आया : यह वही ख़ानाबदोश है जो राजपथ के बीचोबीच अपना ट्रक लेकर मुझ पर चढ़ बैठा था । उसने फिर एक बार सिर हिलाया । और फिर उसे कुछ और याद आया : यही वह बदमाश है जिसने लड़कों को मुझ पर पत्थर फेंकने और उन्हें मेरे नितम्बों—नहीं, नहीं उनकी अपनी माँ

के नितम्बों के बारे में फ़िकरे कसने को उकसाया था । तब वह हँसा ।

न्विबे तेज़ी से पीछे मुड़ा और उसने नंगे पागल को हँसते हुए देखा । नदी की गहराई में उसकी हँसी और भी गहरी हो गई थी । तब वह एकाएक वैसे ही रुक गया जैसे एकाएक वह शुरू हुआ था । उसके चेहरे से हँसी का भाव ग़ायब हो गया ।

"मैंने तुम्हें नंगा दबोच लिया है", उसने कहा ।

न्विबे ने आँखों पर से पानी साफ़ करने के लिए चेहरे पर जल्दी से हाथ फेरा ।

"मैं कहता हूँ कि मैंने तुम्हे नंगा देख लिया है, तुम्हारे उस लटकते हुए के साथ ।"

"लगता है तुम्हें कोड़े खाने की तमन्ना हो रही है", न्विबे ने अपनी आवाज़ में गुस्सा भरते हुए कहा, क्योंकि उसने सुन रखा था कि पागल लोग कोड़े के नाम से ही काँपने लगते थे । "मेरे वहाँ आने तक रुको तो मैं...अरे, यह क्या कर रहे हो...रख दो, एकदम ...मैं कहता हूँ रख दो !"

पागल ने न्विबे का कपड़ा उठा लिया था और अपने इर्द-गिर्द लपेट लिया था । उसने स्वयं को देखा और फिर हँसने लगा

"मैं तुम्हें जान से मार दूँगा", न्विबे चिल्लाया और वह गुस्से से किनारे की तरफ़ बढ़ा । "मैं आज कोड़ों की मार से तेरा पागलपन निकाल दूँगा !"

वे चढ़ाई पर बने पथरीले फुटपाथ पर जो दोनों ओर हरियाली छाँह वाले जंगल से घिरा था, भागने लगे । भागते, लड़खड़ाते, गिरते न्विबे की आँखों के आगे अँधेरा छा गया । वह फिर खड़ा हुआ, लड़खड़ाया, चिल्लाया और गाली देने लगा । हालाँकि रास्ते की ये रुकावटें उसके लिए नई थीं फिर भी पागल ने न्विबे और अपने बीच फ़ासला बढ़ा लिया, क्योंकि वह पतला और इकहरे बदन का था जो कि दौड़ के लिए बना होता है । साथ ही वह चिल्लाने और गालियाँ देने पर अपनी साँस भी बेकार नहीं कर रहा था । वह तो बस भागता ही रहा । नदी पर जा रही दो लड़कियों ने एक आदमी को चढ़ाई पर दौड़ते देखा, जिसके पीछे एक, बिल्कुल

नंगा पागल दौड़ रहा था । वे अपने बर्तन फेंककर चिल्लाती हुई भाग खड़ी हुईं ।

जब न्विबे राजमार्ग पर पहुँचा तो उसे अपना कपड़ा कहीं दिखाई नहीं दिया और उसकी छाती गुस्से और साँस फूल जाने से फटी जा रही थी । लेकिन वह भागता रहा । उसे चारों ओर लोगों की भीड़ धुँधली-धुँधली दिखाई दी और उसने आँसूभरे स्वर में बिना रुके उनसे याचना की : "उस पागल को पकड़ो, वह मेरा कपड़ा लेकर भाग रहा है !" अब तक कपड़ा लेकर भागनेवाला आदमी सामने की घनी भीड़ में खो गया था और उसके तथा नंगे आदमी के बीच की कड़ी अब साफ़ नहीं थी ।

अब न्विबे लगातार लोगों की पीठ से टकरा रहा था । फिर उसने एक कमज़ोर-से बूढ़े आदमी को ठेल कर गिरा दिया जो एक अड़ियल बकरी को रस्सी से बाँधे ले जा रहा था । "उस पागल को रोको",वह भरार्ये स्वर में चिल्लाया । उस का दिल धक-धक कर रहा था—"उसके पास मेरा वस्त्र है !" हर एक ने पहले उसे आश्चर्य से देखा और फिर कुछ कम आश्चर्य से क्योंकि इतने बड़े हाट में ऐसे अजीबो-ग़रीब दृश्य अक्सर देखने को मिलते थे । उनमें से कुछ तो हँस भी रहे थे ।

"उनके पास उसका कपड़ा है, वह कह रहा है ।"

"यह तो कोई नया मालूम पड़ता है । अभी पूरी तरह पागल लगता भी नहीं है । इसका कोई नहीं है क्या ?"

"आजकल लोग भी कितने लापरवाह हो गये हैं । वे अपने बीमार रिश्तेदारों की निगरानी क्यों नहीं करते, ख़ास कर हाट के इस दिन ?"

आगे सड़क पर, हाट के बिल्कुल नज़दीक न्विबे के गाँव के दो आदमियों ने उसे पहचान लिया और एक ने अपनी यैम वाली लम्बी टोकरी फेंकी और दूसरे ने रस्सी से लटका हुआ ताड़ी का बर्तन । और वे बेतहाशा उसके पीछे भागे ताकि उसे हाट के उस शक्तिशाली रहस्यमय क्षेत्र में घुसने से रोक सकें । जब आख़िर में वे उसे पकड़ सके तो वह भीड़-भरे चौक में पहुँच चुका था ।

रोते-रोते, उडैनक्वो ने अपने शरीर के ऊपर के भाग का कपड़ा फाड़कर न्विबे पर लपेटा और हाथ पकड़कर उसे घर ले चली । वह सिर्फ़ एक बार ही उस पागल के बारे में बोला जिसने नदी पर उसका कपड़ा उठाया था ।

"ठीक है कोई बात नहीं", एक आदमी ने उसी स्वर में कहा जिसमें पिता अपने रोते हुए बच्चे को समझाता है । वे आगे-आगे चले और चुपचाप सुबकियाँ लेते हुए जिससे उसकी चौड़ी छाती उपर-नीचे होती रही, वह बिना देखे उनके पीछे चला आया । गाँव के और भी बहुत-से लोग जिनमें कुछ उसकी सुसराल से थे और एकाध उसकी माँ के गाँव से भी था, इस दुखी समुदाय में जुड़ गये थे । एक आदमी ने दूसरे के कान में फुसफुसा कर कहा कि यह बहुत ही ख़तरनाक ढंग का पागलपन था जो गहरा होता है और आदमी बोलना बन्द कर देता है ।

"जिसने भी यह किया उसका बुरा हो", दूसरे ने प्रार्थना के स्वर में कहा ।

उसके रिश्तेदारों ने पहले जिस ओझा की सलाह ली उसने ईमानदारी के नाम पर उसका इलाज करने से इन्कार कर दिया ।

"मैं हाँ कह सकता था और आपका पैसा ले सकता था", उसने कहा, "लेकिन मेरा काम करने का ढंग ऐसा नहीं है । मेरी ठीक कर सकने की शक्ति सारे ओलू तथा इग्बो में विख्यात है लेकिन मैंने आज तक दावा नहीं किया कि मैं किसी आदमी को ठीक कर सकता हूँ जिसने आनी-म्मो का दैवी-जल पिया हो । यह तो उस पागलपन जैसा है जिसमें आदमी स्वयं हाट के देवता के सामने समर्पण कर देता है । आपको उस पर अच्छी तरह नज़र रखनी चाहिए थी ।"

"हमें दोष मत दो," न्विबे के रिश्तेदार ने कहा, "आज सुबह वह जब घर से गया था तो उसके होशो-हवास उतने ही ठीक थे जितने के तुम्हारे या मेरे, हमें अधिक दोष मत दो ।"

"हाँ, मैं जानता हूँ । कभी-कभी ऐसा भी होता है । और यही वे केस हैं जिन पर दवा असर नहीं करती, मैं जानता हूँ ।"

"तुम कुछ भी नहीं कर सकते । उन्होंने उसे अपनी शरण में ले लिया है ।

यह उस आदमी की तरह है जो अपने लोगों के दमन से भाग कर अलूसी के झुरमुट में जाकर उससे कहता है । "हे देवता, मुझे अपनी शरण में ले लो । मैं तुम्हारा दास हूँ । उसके बाद उसे कोई छू नहीं सकता । वह स्वतंत्र होता है लेकिन कोई भी उसे दासता से मुक्त नहीं कर सकता । वह आदमियों से तो स्वतंत्र होता है लेकिन देवता का गुलाम होता है ।"

दूसरा डॉक्टर उतना प्रसिद्ध नहीं था जितना कि पहला और न ही वह इतना सख़्त था । उसने कहा कि केस ख़राब था, बहुत ही, लेकिन जैसी कि कहावत है, बच्चे की हालत पूरी तरह निराशाजनक होने पर भी कोई हाथ-पर हाथ धर कर नहीं बैठ जाता । वह इधर-उधर हाथ-पैर मारेगा और अपनी पूरी कोशिश करेगा । सुनने वालों ने सहमति में सिर हिला दिया । और फिर उसने स्वयं से अन्दर ही अन्दर कहा : "अगर डॉक्टर हर उस रोगी को वापस भेजने लगे जिसके उपचार के बारे में उन्हें पूरा यक़ीन न हो तो उनमें से कितने इस कारोबार से हफ़्ते में एक बार का खाना भी खा पायेंगे ?"

न्विबे का पागलपन ठीक हो गया । वह सीधा-साधा ओझा जिसने यह चमत्कार कर दिखाया, रातों-रात अपने समय का सबसे योग्य पागलों का ओझा बन गया । उन्होंने उसे 'आत्माओं के देश का यात्री' का खिताब दे दिया । तब भी यह सच है कि कभी-कभी पागलपन तो चला जाता है लेकिन उसके साथ आया हुआ और बहुत कुछ बाक़ी रह जाता है—आप इसे पागलपन की परछाईं कह सकते हैं—जो आँखों में से झाँकता रहता है । वह आदमी कभी भी कैसे पहले जैसा हो सकता है जिसके बारे में ओलू और इग्बो के ढेर-से लोगों ने कहा हो कि उन्होंने उसे आज हाट के देवता के बुलावे पर भीड़ में एकदम नंगे दौड़ते देखा था । वह आदमी तो हमेशा के लिए बिंध जाता है ।

न्विबे बहुत ही चुपचाप रहने लगा और जीवन तथा लोगों की हँसी-खुशी के पक्ष से उसने किनारा कर लिया ।

दो साल बाद दीक्षा-पक्ष में उसने अपने शहर के उपाधि प्राप्त लोगों के समूह में शामिल होने के लिए फिर नये सिरे से पूछताछ शुरू की । अगर वे उसे अपने बीच ले लेते तो शायद वह आंशिक रूप से तो ठीक हो ही जाता लेकिन उन प्रतिष्ठित लोगों ने बहुत ही सम्मानजनक तथा नम्र तरीके से बातचीत का रुख़ दूसरी बातों की ओर मोड़ दिया ।

करिश्मा कुदरत का

जौनथन इवेग्बु स्वयं को बहुत ही भाग्यशाली मानता था। 'शुभ-पुनर्जीवन'—यह कामना उसके लिए युद्ध समाप्ति के उन पहले धुँधले दिनों में मित्रों द्वारा एक दूसरे को दी गई शुभकामनाओं से कहीं अधिक थी और उसके दिल में गहरी पैठ गई थी। वह युद्ध में से पाँच अनमोल वरदानों के साथ बच निकला था : उसका सलामत सिर, उसकी बीवी मारिया का सलामत सिर तथा उसके चार में से तीन बच्चों का सलामत सिर। साथ ही बोनस के रूप में बची हुई थी उसकी बाईसिकल भी जो अपने आप में एक करिश्मा था। लेकिन इस करिश्मे का मुक़ाबला उन पाँच सलामत सिरों से तो नहीं किया जा सकता।

बाईसिकल का अपना एक छोटा-सा इतिहास था। लड़ाई की चरम सीमा के दिनों में एक दिन 'आवश्यक मिलिटरी कार्य' के लिए उसकी बाईसिकल की सेवाएँ प्राप्त कर ली गईं। बाईसिकल का नुक़सान ही उसके लिए काफ़ी होता और वह उसे सहने के लिए तैयार था। परन्तु उसे अफ़सर की सचाई पर शक़ हो गया था। जौनथन को तकलीफ़ उसके फटे-पुराने चिथड़ों या एक नीले और एक ब्राउन जूतें से झाँकते अँगूठों या जल्दी में टाँके गये उसके रैंक के स्टार से नहीं थी। बहुत-से अच्छे और बहादुर सिपाही देखने में उससे भी ख़राब लगते थे। शक़ तो उसे अफ़सर के व्यवहार में मजबूती और पकड़ की कमी के कारण हुआ था। इसीलिए यह सोचकर कि वह उसके प्रभाव में आ सकेगा, जौनथन ने अपने रफ़िया बैग में हाथ डाला और दो पाउंड निकाले जिनसे वह अपनी पत्नी द्वारा कैम्प के अधिकारियों को बेचने के लिए जलाने की लकड़ियाँ लाने जा रहा था। उन्हें बेचकर वह स्टॉक-फ़िश और कॉर्न-मील

ख़रीदती थी। दो पाउंड देकर उसने बाईसिकल वापिस छुड़ाई। उसी रात उसने उसे जंगल में साफ़ जगह में गाड़ दिया जहाँ कैम्प के मृतकों को दफ़नाया जाता था और जहाँ उसका अपना सबसे छोटा लड़का दफ़्न था। एक साल बाद जब विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया तो उसने उसे खोद कर निकाला तो साइकिल पर सिर्फ़ थोड़ी सी पाम-ग्रीज़ लगाने की ही ज़रूरत पड़ी। 'कुदरत के करिश्मों की कमी नहीं', उसने हैरानी से कहा।

वह उसे तुरन्त टैक्सी के रूप में चलाने लगा। जल्दी ही उसने कैम्प के अधिकारियों और उनके परिवारों को सबसे नज़दीक वाली पक्की सड़क पर पहुँचा-पहुँचा कर बियाफ़्रा की मुद्रा का ढेर इकट्ठा कर लिया। वह हर ट्रिप के छह पाउंड लेता और जिनके पास उस मुद्रा की कमी नहीं थी वे उसे इस तरह ख़र्च करके ख़ुश थे। पन्द्रह दिन बाद उसके पास एक सौ पन्द्रह पाउंड की रक़म इकट्ठी हो गई थी।

तब वह इनूगू गया और वहाँ एक और करिश्मा उसका इन्तज़ार कर रहा था। यह तो एकदम अविश्वसनीय था। उसने अपनी आँखें मलीं और फिर एक बार देखा। वह वहीं उसके सामने खड़ा था। कहना न होगा कि यह करिश्मा भी उसके परिवार के पाँच सिरों के सलामत बच जाने के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं था। यह नवीनतम करिश्मा था औगई ओवरसाइड में उसका छोटा-सा मकान। सचमुच, कुदरत के करिश्मों की कोई कमी नहीं थी! दो घर छोड़कर एक अमीर कॉन्ट्रैक्टर का भव्य भवन जिसे उसने लड़ाई से कुछ ही देर पहले बनाया था, मलबे का ढेर बन गया था। और यहाँ जौनथन का गारे की ईंटों और जिंक की छत से बना छोटा-सा घर एकदम सलामत खड़ा था! यह दूसरी बात है कि दरवाज़े तथा खिड़कियाँ और छत की पाँच शीटें ग़ायब थीं। लेकिन उससे क्या? फिर एक दिन सुबह-सवेरे, जंगल में खुले में रह रहे हज़ारों लोगों से पहले इनूगू पहुँच कर उसने जिंक, लकड़ी और गत्ते के मुड़े-तुड़े शीट बीन लिये। उसने मुसीबत का मारा एक बढ़ई भी खोज निकाला जिसके टूल-बॉक्स में एक पुरानी हथौड़ी, एक कुन्द रन्दा तथा कुछ जंग-खाई टेढ़ी-मेढ़ी कीलें थीं। इनसे

उसने जिंक, लकड़ी और गत्ते की उन शीटों को दरवाज़े तथा खिड़कियों के पाँच शटरों के रूप में बदलवा लिया । बढ़ई की बनवाई थी पाँच नाईजीरियन शिलिंग या पचास बियाफ़्रन पाउंड । उसने पाउंड दे दिये और अपने-अपने कन्धों पर सलामत सिर लिए परिवार के पाँचों सदस्य खुशी-खुशी घर में आ बसे ।

उसके बच्चे मिलिटरी कब्रिस्तान के पास से आम बीन कर सिपाहियों की बीवियों को कुछ सिक्कों के बदले में बेचने लगे—इस बार ये असली सिक्के थे । और उसकी बीवी ज़िन्दगी दुबारा शुरू करने की जल्दी में पड़ोसियों के नाश्ते के लिए आकरा के गोले बनाने लगी । परिवार की इस आय से उसने पास के गाँवों में अपनी साइकिल पर जाकर ताज़ी ताड़ी लाना शुरू किया । इसमें उसने अपने कमरे में पानी (जो सरकारी नल में दुबारा बहने लगा था) मिलाकर सिपाहियों तथा उन किस्मत वालों के लिए 'बार' खोल दी जिनके पास असली पैसा था ।

शुरू-शुरू में वह हर रोज़, फिर हर दूसरे दिन और आख़िर में हफ़्ते में एक दिन कोल कार्पोरेशन के दफ़्तर जहाँ वह पहले खदान मज़दूर के रूप में काम करता था यह पता लगाने के लिए जाता था कि उनका क्या बन रहा है । आख़िर में इतना ही जान पाया कि उसका अपना छोटा-सा घर उसकी अपनी समझ से कहीं बड़ी खुशकिस्मती था । उसके साथ के कई खदान मज़दूर, जिनके पास दिन के अन्त में कहीं जाने की जगह नहीं होती थी, दफ़्तर के बाहर ही बोर्नवीटा के खाली टिनों में बचा-खुचा पका कर वहीं सो रहते थे । हफ़्ते लम्बे होते गये और फिर भी जब कुछ न बना तो जौनथन ने जाना बिल्कुल बन्द कर दिया और अपनी बार की ओर रुख़ किया ।

लेकिन कुदरत के करिश्मों की तो कोई कमी नहीं है । ट्रेज़री के बाहर पाँच दिन टेढ़ी-मेढ़ी लाइनों में लड़ने-झगड़ने के बाद विद्रोहियों की मुद्रा वापस जमा कर देने के एवज़ में उसकी हथेली पर बीस पाउंड धर दिये गये तो उसे लगा कि लक्ष्मी की वर्षा-सी हो उठी है । जब पैसे मिले तो उसे और उस जैसों के लिए यह

क्रिसमस के उपहार जैसा था । उन्होंने उस पैसे को 'ऐग-रैशर' का नाम दे दिया (चूँकि वे उसके नाम का ठीक से उच्चारण नहीं कर पा रहे थे) ।

जैसे ही पाउंड वाले नोट उसकी हथेली पर रखे गये, जौनथन ने अपनी मुट्ठी भींच ली और मुट्ठी समेत उन्हें अपनी पैंट की जेब में ठूँस लिया । उसे बहुत ही सतर्क रहना था क्योंकि दो एक दिन पहले उसने एक आदमी को जन-सागर के सामने ग़श खाकर गिरते देखा था क्योंकि जैसे ही उसे बीस-पाउंड मिले एक पत्थर-दिल बदमाश ने उसकी जेब काट ली थी । हालाँकि यह ठीक नहीं था कि उस खराब हालत में उस बदकिस्मत को बुरा-भला कहा जाता लेकिन फिर भी लाइन में लगे कुछ लोगों ने उसकी लापरवाही के बारे में कुछ कहा था, विशेषकर जब उसने जेब उलट कर दिखाई जिसमें इतना बड़ा छेद था कि उसमें चोर का सिर भी समा जाता । लेकिन वह ज़ोर देकर कहता रहा कि पैसे तो उसकी दूसरी जेब में थे जिसे उलट कर उसने दिखाया कि वह सलामत थी । इसीलिए तो सतर्क रहने की आवश्यकता थी ।

जौनथन ने जल्दी ही पैसों को अपने बायें हाथ और जेब में बदल दिया ताकि ज़रूरत पड़ने पर दाँया हाथ मिलाने के लिए ख़ाली रहे । अपनी नज़र उसने इतनी ऊँचाई पर गड़ा रखी थी कि वह सामने आने वाले किसी आदमी पर पड़े ही नहीं और हाथ मिलाने की ज़रुरत ही न पड़े, कम-से-कम घर पहुँचने तक तो ।

सामान्यतया वह गहरी नींद सोता था लेकिन उस रात उसने पड़ोस में होनेवाली हर एक आवाज़ को एक-एक करके ख़त्म होते देखा । यहाँ तक कि चौकीदार भी जो दूर कहीं किसी धातु वाली चीज़ को बजा कर घंटों की सूचना देता था, एक का गजर बजा कर सो गया था । सोने से पहले वही आख़िरी विचार उसके दिमाग़ में रहा होगा । वह ज़्यादा देर तो नहीं सोया होगा क्योंकि जब उसे झकझोर कर उठाया गया ।

"कौन खटखटात है ?" उसके साथ फ़र्श पर लेटी उसकी पत्नी ने फुसफुसाकर कहा ।

"नाहीं मालूम," उसने साँस रोक, फुसफुसा कर कहा ।

दूसरी बार खटखटाहट इतनी ज़ोर से हुई और इतनी ताक़त से कि लगता था जीर्ण-शीर्ण-सा दरवाज़ा टूट ही जायेगा ।

"कौन खटखटात है ?" उसने पूछा । आवाज़ सूखी और थरथराहट-भरी थी ।

"चोर हूँ और हमारे आदमी हैं", शान्त जवाब आया, "दरवाज़ा खोलो न" इसके साथ ही ज़ोर-ज़ोर से खटाखटाहट होने लगी ।

शोर पहले मारिया ने मचाया, फिर उसने और फिर बच्चों ने । "पुलिस रे ! अरे, चोर ! ऐ पड़ोसियो ! पुलिस ! हम तो मर गये...बेमौत मारे गये ! पड़ोसी सो गये का ? उठेंगे नाहीं ! पुलिस"

यह काफ़ी देर होता रहा और फिर एकाएक बन्द हो गया । शायद उन्होंने चोरों को डरा दिया था । एकदम चुप्पी थी । लेकिन कुछ ही देर तक ।

"तुम खतम कर चुके क्या ?" बाहर वाली आवाज़ ने पूछा । "हम भी मदद करें । ऐ लोगो !"

"पुलिस ! चोर ! अरे पड़ोसियो ! हम तो मर ही गये ! अरे पुलिस !" लीडर के अलावा पाँच और आवाज़ें थीं ।

जौनथन और उसके परिवार को डर के मारे लकवा मार गया था । मारिया और बच्चे खोई आत्माओं की तरह चुपचाप रो रहे थे । जौनथन लगातार सुबक रहा था ।

चोरों के शोर के बाद की चुप्पी भी और डरावनी थी । जौनथन ने लीडर को बोलने के लिए प्रार्थना की और अपनी बात कहने को कहा ।

'मेरे दोस्त', उसने आखिर कहा, 'हमउ कोशिस किये हैं उनका बुलाने को । लगता है वे सो रहे हैं । हम भी अब क्या करें ? मिलिटरी को बुलाना होगा ? मिलिटरी तो पुलिस से अच्छी होती है न ?'

"हाँ !" उसके आदमियों ने उत्तर दिया । जौनथन को लगा आवाज़ें पहले से ज़्यादा थीं और वह ज़्यादा ज़ोर से रोने लगा । उसकी टाँगे ढह-सी गयीं और उसका हलक एकदम सूख सा गया था ।

"दोस्त, अच्छा बोलो ? मिलिटरी को बुलाने के लिए क्या कहें ।

"नहीं !"

"ठीक । अब हम बिजनेस बतियाते हैं । हम घटिया चोर नाहीं हैं । हम कोई गड़बड़ नहीं करते हैं । गड़बड़ काम सबे खतम ! लड़ाई खतम ! कटाकट खतम । सिविल वार दुबारा नाहीं होनेवाली । यह बखत सिविल पीस का है न ?"

"ठीक है !" सभी ने कोरस में कहा ।

"तुम्हें मुझसे क्या चाहिए ? मैं एक ग़रीब आदमी हूँ । मेरे पास जो कुछ था लड़ाई में जाता रहा । तुम मेरे पास क्यों आये हो ? तुम्हें तो पता है किसके पास पैसा है । हम..."

"ठीक है ! हम भी जानते हैं तुम्हारे पास पैसा नहीं है । लेकिन हमरा पास तो एक खोटी चवन्नी तक नहीं है । इसी के बास्ते इस खिड़की को खोल कर एक सौ पाउंड दे दो तो हम चले जाँय । नहीं तो हमउ का अन्दर आकर गिटार बजाना पड़ता है, ऐसे...

आकाश में ऑटोमेटिक फ़ायर की आवाज़ गूँज उठी । मारिया और बच्चे फिर जोर-जोर से रोने लगे ।

"ओहो, मिस्सी रोई है क्या ?इसकी ज़रूरत नहीं । हम भी बता दें कि जे हम अच्छे चोर हैं । हम भी थोड़ा-पैसा लेते हैं और चले जाते हैं । हम भी औरतन को इज्ज़त नहीं लूटते-क्या ?"

"बिल्कुल नहीं ।" कोरस में जवाब आया ।

"मेरे दोस्त," जौनथन ने फटी आवाज़ में फिर शुरू किया, 'मैंने सुना जो तुमने कहा और मैं तुम्हारा शुक्रिया कहता हूँ । अगर मेरे पास सौ पाउंड होते..."

"देखो, दोस्त । तुम भी ठीक से नहीं खेलते तो हम सब घर में आकर खेलते हैं । जब हमऊ घर में आ कर देखत तो फिर ऐसे नहीं जायेंगे इसी बास्ते..."

"बनानेवाले भगवान की क़सम, अगर तुम अन्दर आके सौ पाउंड ढूँढ़ लो तो ले ले और साथ ही मुझे, मेरी बीवी और बच्चों को गोलीं भी मार दो । मैं भगवान की क़सम खाता हूँ । मेरे पास

कुल रकम ये ऐग रैशर वाले बीस पाउंड हैं जो आज ही मिले हैं..."

"ठीक है । वक्त ही बरबाद हो रहा है । खिड़की खोलू और बीस पाउंड लाइब । हम भी इसी से काम चलाई लेंगे ।"

कोरस में ज़ोर-ज़ोर से बहस होने लगी । "नहीं यह झूठ बोलता है । इसका पास काफ़ी पैसे हैं...अन्दर चलते हैं और ध्यान से खोजते हैं । बीस पाउंड क्या चीज होती है ?"

"चुप्प !" लीडर की आवाज़ आकाश में इकलौती गोली की तरह गूँजी और मुनमुनाहट एकदम शान्त हो गई । "सुनते नाहीं ? जल्दी से पइसे लाओ !"

"मैं आता हूँ", जौनथन ने कहा और अँधेरे में चटाई पर अपने साथ रखे छोटे लकड़ी के बक्से की चाबी टटोलने लगा ।

सुबह की पहली रोशनी में जब पड़ोसी और अन्य लोग हमदर्दी दिखाने आये तो वह अपनी साइकिल के कैरियर पर पाँच गैलन वाला कैन बाँध रहा था और उसकी बीवी खुली आग के सामने खड़ी मिट्टी की कड़ाही में खौलते तेल में आकरा के गोले तल रही थी । एक कोने में उसका सबसे बड़ा लड़का बीयर की पुरानी बोतलों में से कल की बची बासी ताड़ी उँड़ेलकर उन्हें साफ़ कर रहा था ।

"मैं तो परवाह ही नहीं करता", उसने हमदर्दी जताने आये लोगों से कहा, नज़र बाँधनेवाली रस्सी पर टिकाये हुए. "ऐग रैशर भला क्या चीज़ है ? क्या मैं पिछले हफ़्ते उस पर निर्भर था ? या यह उन चीज़ों से ज़्यादा कीमती है जो लड़ाई के साथ चली गई हैं ? मैं कहता हूँ ऐग रैशर जाये भाड़ में ! उसे भी वहीं जाने दो जहाँ बाक़ी सब है । कुदरत के करिश्मे कम नहीं होंगे ।"

अकुऐके

अकुऐके दुश्मनी की दीवार के इस ओर बीमारी के बिस्तर पर पड़ी थी—दीवार जो उसके और उसके भाइयों के बीच एकाएक खड़ी हो गई थी । सहमी-सी वह उनकी बुदबुदाहटों को सुन रही थी । उन्होंने उसे अभी तक नहीं बतलाया था कि क्या करना है, लेकिन वह जानती थी । वह उन्हें कहना चाहती थी कि वे उसे ऐज़ी में उसके नाना के यहाँ ले चलें लेकिन उनके बीच दुश्मनी की खाई इतनी गहरी बन गई थी कि उसके आत्म-सम्मान ने उसे यह सुझाव देने से रोक दिया । उन्हें ही यह दुस्साहस करने दो । गई रात ओफ़ोडिले जो सबसे बड़ा था, उसे सिर्फ़ देखता भर रहा । वह किसलिए रो रहा था ? उसे जाकर गू खाने दो ।

बाद में आती-जाती आधी नींद में अकुऐके को लगा कि वह सुदूर ऐज़ी में अपने नाना के दालान में है और उसे बीमारी की याद तक नहीं । वह फिर से गाँव की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी बन गई थी ।

अकुऐके अपनी माँ की सबसे छोटी सन्तान तथा अकेली बेटी थी । उसके छह भाई थे तथा उसके पिता की मृत्यु उस समय हो गई थी जब वह छोटी ही थी । लेकिन वह अमीर व्यक्ति थे, इसी कारण उनकी मृत्यु के बाद भी परिवार को वास्तविक आर्थिक कठिनाई का कोई ख़ास सामना नहीं करना पड़ा था, क्योंकि उनके कुछ पुत्र तो पहले से ही अपने खेतों पर काम करने लगे थे ।

हर वर्ष अकुऐके की माँ अपने बच्चों को कई बार ऐज़ी में अपने रिश्तेदारों के यहाँ ले जाती थी—ऐज़ी जो छोटे बच्चों की चाल से उमुओफ़िया से एक दिन की यात्रा की दूरी पर था । अकुऐके कभी माँ की पीठ पर सवार होती तो कभी पैदल चलती । जब सूरज ऊपर चढ़ आता तो उसकी माँ सड़क-किनारे खेतों से कसावा की

एक छोटी-सी टहनी तोड़कर उसका सिर ढँक देती ।

अकुऐके को अपने नाना के यहाँ जाने के इन दिनों का इन्तज़ार रहता था । उसके नाना सफ़ेद बालों और दाढ़ी वाले लम्बे-चौड़े व्यक्ति थे । कभी-कभी वे अपनी लम्बी दाढ़ी को रस्सी की तरह गूँथ लेते थे जिसके अन्त में एक लम्बूतरा-सा बिन्दु बन जाता था जिस पर से उनके शराब पीते समय ताड़ी ज़मीन पर टपकती रहती थी । इसे देखकर अकुऐके को हमेशा बहुत मज़ा आता था । बुज़ुर्गवार को इस बात का पता था और वह ताड़ी गटकते समय दाँत पीस-कर स्थिति को और भी हास्यास्पद बना देते थे ।

उन्हें अपनी नातिन से बहुत लगाव था और लोग कहते थे कि वह उनकी अपनी माँ का स्वरूप थी । वह शायद ही कभी अकुऐके को नाम से पुकारते हों : हमेशा 'माँ' ही कहते थे । वास्तव में जीवन-चक्र में वह उनकी माँ ही थी जो लौटकर आई थी । ऐज़ी में रहते अकुऐके को कुछ भी करने की पूरी छूट थी : उसके नाना ने किसी को भी उसे डाँटने से मना कर रखा था ।

दीवार के परे आवाज़ें ऊँची होने लगीं । शायद पड़ोसी उसके भाइयों के साथ तकरार कर रहे थे । तो अब उन सब को पता लग गया था । गू खाने दो सबको । अगर वह उठ सकती तो वह बिस्तर के पास पड़े पुराने झाड़ू से मारकर सबको भगा देती । काश, उसकी माँ ज़िन्दा होती। तब उसके साथ यह नहीं हुआ होता ।

अकुऐके की माँ दो वर्ष पहले मर गई थी और उसे अपने लोगों में दफ़नाने के लिए ऐज़ी ले जाया गया था । बुज़ुर्गवार, जिन्होंने जीवन में कई दुख देखे थे, कहा था, "वे मुझे छोड़कर मेरे बच्चों को क्यों ले जा रहे हैं ?" लेकिन कुछ दिन बाद, सांत्वना देने आये कुछ लोगों से उन्होंने कहा था, "हम तो भगवान के चूज़े हैं । कभी वह खाने के लिए छोटा चूज़ा चुनता है तो कभी बड़ा ।" अकुऐके को ये सभी दृश्य साफ़-साफ़ याद थे और एक बार तो वह रोने को हो आई थी । उसकी घृणित मौत के बारे में सुनकर बुज़ुर्गवार का क्या होगा ?

उसकी माँ की मृत्यु के बाद होने वाले सूखे मौसम में अकुऐके के आयु-वर्ग ने पहला सार्वजनिक नृत्य किया था । अकुऐके ने अपने नृत्य से सनसनी फैला दी थी और उसके चाहनेवालों की तादाद दस-गुनी हो गई थी । एक हाट से दूसरे हाट तक कोई-न-कोई आदमी उसके भाइयों के लिए ताड़ी लाता रहता था । लेकिन अकुऐके ने सबको अस्वीकार कर दिया । उसके भाइयों को चिन्ता होने लगी । वे सभी अपनी इकलौती बहन से प्यार करते थे, खासकर माँ की मृत्यु के बाद वे उसे खुश करने के लिए एक दूसरे से होड़ करने लगे थे ।

और अब उन्हें चिन्ता सता रही थी कि वह एक अच्छी शादी के अवसर गँवा रही थी । उसके सबसे बड़े भाई औफ़ोडिले ने पूरी सख़्ती से उसे बताया था कि घमंडी लड़कियाँ जो सभी रिश्तों को ठुकराती रहती हैं उसी प्रकार दुख पाती हैं जैसा कि कहानी में ओनवुएरो ने पाया था जिसने सभी प्रस्तावित आदमियों को अस्वीकार कर दिया था और अन्त में उन तीन मछलियों के पीछे भागती फिरी थी जिन्होंने उसे बर्बाद करने के लिए तीन सजीले नौजवानों का रूप धारण कर लिया था ।

अकुऐके ने एक नहीं सुनी । और अब तंग आकर उसकी रक्षा करने वाले देवता ने मामला अपने हाथ में ले लिया था और उसे यह बीमारी लग गई थी । पहले तो लोगों ने उसके बढ़ते पेट की ओर ध्यान ही नहीं दिया था ।

उसकी तीमारदारी के लिए दूर-दूर से ओझा बुलाये गये थे । लेकिन उनकी जड़ी-बूटियों का कोई असर नहीं हुआ था । एक दफ़ा तांत्रिक ने अकुऐके के भाइयों को एक ऐसे ताड़ की तलाश में भेजा था जिसे एक चढ़ती बेल ने आच्छादित कर रखा हो । "जब तुम उसे देखो", उसने उन्हें कहा था, "तो एक गंडासा लेकर पेड़ का गला घोंट रही उस लता को काट देना । जिन आत्माओं ने तुम्हारी बहन को जकड़ रखा है वे तब उसे छोड़ देंगी ।"

भाइयों ने तीन दिन तक उमुओफ़िया तथा आस-पास के गाँवों को छान मारा तब जाकर ऐसा ताड़ मिला और उन्होंने उसे आज़ाद कर दिया । लेकिन उनकी बहन को छुटकारा नहीं मिला । बल्कि उसकी हालत और ख़राब हो गई ।

अन्त में उन्होंने आपस में सलाह-मशविरा किया और भारी मन से फ़ैसला किया कि उनकी बहन को फूलनेवाली वह बीमारी लग गई थी जो गाँव के लिए सर्वनाशकारी थी । अकुऐके को भाइयों की इस सलाह का आशय खूब पता था । जैसे ही सबसे बड़े भाई ने उसके बीमारी-वाले कमरे में क़दम रखा वह ज़ोर से उस पर चिल्लाई और वह भाग खड़ा हुआ । यह सब पूरा दिन चलता रहा और डर यह था कि कहीं वह घर पर ही न मर जाये और 'आनी' का क़हर अगर सारे गाँव पर नहीं तो कम-से-कम परिवार पर तो न टूटे । पड़ोसियों ने आकर उमुओफ़िया के नौ गाँवों के लिए ख़तरे की चेतावनी दी ।

शाम को वे उसे घने जंगल में ले गये । वहाँ उन्होंने उसके लिए एक अस्थाई आश्रम-स्थल और घटिया-सा बिस्तर बनाया था । वह अब घृणा और थकान के कारण चुप थी और वे उसे वहाँ छोड़कर चले गये ।

सुबह तीन भाई जंगल में यह पता करने आये थे कि वह अभी भी ज़िन्दा थी या नहीं । उन्हें यह देख कर हैरानी हुई कि आश्रम-स्थल ख़ाली था । वे सारा रास्ता भागते हुए वापस गये बाक़ियों को यह बताने के लिए और वापस आकर सभी उसे खोजने लगे । उनकी बहन का कहीं नामो-निशां भी न था । ज़ाहिर था कि उसे जंगली जानवर खा गये थे । जैसा कि ऐसे केसों में कभी-कभी होता था ।

दो-तीन पूर्णमासियाँ बीत गईं और उनके नाना ने यह जानने के लिए उमुओफिया संदेश भिजवाया कि क्या अकुऐके सचमुच मर गई थी । भाइयों ने कहा 'हाँ' और संदेशवाहक वापस ऐज़ी लौट गया । एक-दो हफ़्ते बाद बुज़ुर्गवार ने फिर संदेश भिजवाया कि वे आकर उससे मिलें । वह अपनी 'ओबी' में उनका इन्तज़ार कर रहा था जब उसके नाती उससे मिलने आये । स्वागत की औपचारिकता जिसमें हाल ही हुए नुकसान के कारण गर्मजोशी का भाव कम था, ख़त्म होने के बाद बुज़ुर्गवार ने लड़कों से पूछा कि उनकी बहन कहाँ थी । सबसे बड़े ने उन्हें अकुऐके की मृत्यु की कहानी सुना दी । बुज़ुर्गवार अपने सिर को दायें हाथ से सँभाले

अन्त तक उनकी कहानी सुनते रहे ।

"तो अकुऐके मर गई है," उन्होंने एकाध सवाल आधे वक्तव्य के स्वर में किया । "तो तुमने मुझे संदेश क्यों नहीं भिजवाया ?" सभी चुप रहे फिर सबसे बड़े ने कहा कि वे पहले शुद्धि की सभी रस्में पूरी कर लेना चाहते थे । बुज़ुर्गवार ने दाँत पीसे, फिर तीन-चौथाई सीधे खड़े हुए, और लड़खड़ाते हुए अपने सोने वाले कमरे की ओर बढ़े, चित्रकारी से जड़े दरवाज़े को ढकेला तथा अकुऐके का प्रेत उनके सामने खड़ा था—गम्भीर तथा कठोर मुद्रा में । सभी तुरन्त कूदकर खड़े हो गये, एक-दो तो कमरे के बाहर भी हो गये ।

"लौट आओ," बुज़ुर्गवार ने दुखभरी मुस्कराहट के साथ कहा, "तुम जानते हो यह युवती कौन है ? मुझे जवाब चाहिए । तुम ओफ़ोडिले, तुम सबसे बड़े हो, तुम्हीं जवाब दो । यह कौन है ?"

"यह हमारी बहन अकुऐके है ।"

"तुम्हारी बहन अकुऐके है ? पर तुमने मुझे अभी बताया है कि वह तो फूलनेवाली बीमारी से मर चुकी है । वह मरने पर यहाँ कैसे हो सकती है ?" चुप्पी "या अगर तुम्हें नहीं पता था कि फूलनेवाली बीमारी क्या होती है, तो क्यों नहीं उनसे पूछ लिया, जिन्हें पता है ?"

"हमने उमुओफ़िया तथा अबामे में सभी ओझाओं से सलाह-मशविरा किया था ।"

"तुम उसे मेरे पास यहाँ क्यों नहीं ले आये ?"

चुप्पी थी ।

बुज़ुर्गवार ने तब उन्हें चन्द शब्दों में बताया कि उन्होंने उन सबको यहाँ इकट्ठे यह बताने के लिए बुलाया था कि उस दिन से अकुऐके उनकी बेटी हो गई थी और उसका नाम माटेफ़ी हो गया था । वह अब उमुओफ़िया की नहीं बल्कि ऐज़ी की बेटी बन गई थी, वे चुपचाप उन्हें देखते रहे ।

"जब वह शादी करेगी," बुज़ुर्गवार ने बात ख़त्म करते हुए कहा, "उसकी वधू-कीमत पर भी मेरा अधिकार होगा, तुम्हारा नहीं । और जहाँ तक शुद्धि की रस्मों का सवाल है उसे तुम जारी ही रखो क्योंकि अकुऐके सचमुच उमुओफ़िया के लिए मर चुकी है ।"

अपने भाइयों के स्वागत में एक शब्द भी कहे बिना माटेफ़ी वापिस कमरे में चली गई ।

चढ़ावा

जूलियस ओबी अपने टाइपराइटर को घूर रहा था । मोटा चीफ़ क्लर्क, उसका बॉस, अपनी मेज़ पर खर्राटे-भर रहा था । बाहर, अपनी हरी यूनिफ़ॉर्म में गेटकीपर अपनी चौकी में सो रहा था । आप उस पर दोष नहीं लगा सकते । पिछले एक सप्ताह से एक भी ग्राहक उस गेट से नहीं घुसा था । बड़ी तौल-मशीन पर एक ख़ाली टोकरी रखी थी । मशीन के आस-पास धूल में कुछ पाम की गिरियाँ बिखरी पड़ी थीं । सिर्फ़ मक्खियों का ज़ोर था ।

जूलियस उस खिड़की की तरफ़ गया जो नाइजर नदी के किनारे बड़े हाट पर खुलती थी । अब बाज़ार, जिसका नाम अभी भी न्कोवो था, कभी का ऐके, ओये तथा आफ़ो तक फैल गया था । सभ्यता के आते ही शहर एक बड़े पाम-तेल के बन्दरगाह में बदल गया था । लेकिन इस अतिक्रमण के बावजूद हाट आरम्भिक न्कोवो के दिन ही सबसे अधिक व्यस्त रहता था क्योंकि हाट की प्राचीन देवी ने अपने ही दिन का जादू बिखेर रखा था—चाहे लालच में लोग कहीं भी फैल कर चले जायें । कहा जाता है कि मुर्गे की बाँग से पहले वह एक बूढ़ी औरत के रूप में हाट के बीच में आकर अपना जादुई पंखा धरती की चारों दिशाओं में घुमाती थी—अपने सामने, अपने पीछे, दायें और बायें—ताकि दूर-दूर से लोग उस हाट में आयें । और वे अपने साथ अपने-अपने स्थान की उपज लाते थे । पाम-तेल और गिरियाँ, कोला नट्स, कसावा, चटाइयाँ, टोकरियाँ, तथा मिट्टी के बर्तन, और वे वापिस घर को ले जाते थे—रंग-बिरंगे कपड़े, सिकी हुई मछली, लोहे के बर्तन और प्लेटें । ये जंगल के लोग थे । दुनिया का दूसरा आधा भाग जो नदी के किनारे रहता था, वह भी आता था—नाव द्वारा—रतालू और मछली लेकर ।

कभी-कभी नाव बड़ी होती थी जिसमें दर्जन या अधिक लोग रहते थे । कभी तेज़ बह रही अनामबारा से छोटी-सी नाव लिए कोई मछुआरा अकेले अपनी पत्नी के साथ आता था । वे लोग अपनी नाव किनारे लगा लेते और बहुत मोल-भाव के बाद ही अपनी मछली बेचते । फिर औरतें नदी के ऊँचे किनारे पर चढ़कर हाट के बीचो-बीच जातीं नमक और तेल ख़रीदने के लिए, और अगर बिक्री अच्छी हुई हो तो कपड़े का एक टुकड़ा भी । घर के बच्चों के लिए वह केक और माई-माई खरीदतीं जिसे इगारा औरतें पकाती थीं । शाम ढलते ही वे अपने चप्पू उठा लेते और वापस चल पड़ते; सूर्यास्त में चमकते पानी में उनकी नाव छोटी होती चली जाती तब तक जब तक कि वह पानी की सतह पर एक काला धब्बा सा रह जाता और उसमें दो काली मूर्तियाँ आगे पीछे हिलती दिखाई देतीं । उन दिनों उमरु जंगल से आने वाले लोगों के जिन्हें इग्बो कहते थे और परदेसी नदी वाले लोगों के जिन्हें इग्बो औलू पुकारते थे, मिलने का स्थान था और उसके परे दुनिया अनिश्चितता में लीन हो जाती थी ।

जूलियस ओबी उमरु का रहनेवाला नहीं था । वह अन्य अनगिनत लोगों की तरह देश के आन्तरिक भाग के जंगल के किसी गाँव से आया था । मिशन स्कूल से कक्षा छह पास करने के बाद वह उस शक्तिशाली युरोपीय कम्पनी के दफ़्तर में क्लर्क का काम करने आया था जो अपनी कीमत पर पाम-गिरियाँ खरीदती थी और अपनी ही तय की हुई कीमत पर कपड़े और धातु की वस्तुएँ बेचती थी । दफ़्तर उस विख्यात हाट के साथ ही स्थित था और पहले दो-तीन हफ़्ते तो जूलियस को उसकी गहमागहमी में काम करने की आदत डालनी पड़ी । जब चीफ़ क्लर्क कहीं गया होता तो वह खिड़की तक जाता और नीचे चींटियों के इस बड़े बिल में हो रही गतिविधियों को देखता । इनमें से अधिकतर लोग कल यहाँ नहीं थे, वह सोचता, लेकिन फिर भी हाट इतना भरा हुआ था । हाट को इस तरह हर रोज़ भरने के लिए दुनिया में असीम लोग होंगे । स्वाभाविक है कि हाट में आने वाले सभी असली व्यक्ति नहीं थे । जैनेट की माँ जिनका नाम मा था, यही कहती थीं ।

"भीड़ में से धक्का-मुक्की करके निकलती इन सुन्दरियों में बहुत-सी तुम्हारे-मेरे जैसी मानवीय नहीं हैं बल्कि वे मैमी-वोटा हैं जिनका घर नदी की गहराइयों में बने शहरों में है," वह कहती थीं, "तुम उन्हें पहचान सकते हो क्योंकि उनकी सुन्दरता एकदम सम्पूर्ण और गर्म-जोशी रहित है । आँखों के किनारे से उसे एक नज़र देखो, पलक झपको और ध्यान से दुबारा देखो तो वह भीड़ में गुम हो चुकी होगी ।"

जब उमुरु छोटा-सा गाँव था तो एक विशेष आयु-वर्ग के लोग हर न्कोवो दिन पर हाट के मैदान की सफ़ाई करते थे । लेकिन उन्नति ने अब इसे एक व्यस्त, फैला हुआ, भीड़-भड़क्के से भरपूर नदी का बन्दरगाह बना दिया था, एक बेनाम जगह जहाँ अजनबी मूल निवासियों से अधिक थे जो अब अपनी प्रार्थनाओं के विपरीत फल पर सिर्फ़ सिर ही हिला सकते थे क्योंकि यह प्रार्थना तो उन्होंने ही की थी—कौन उन्हें इसके लिए दोषी ठहरा सकता है—कि उनका शहर फले-फूले और उन्नति करे । और शहर ने उन्नति की थी । लेकिन एक अच्छी उन्नति होती है और एक बुरी । पेट सिर्फ़ खाने-पीने से ही नहीं फूलता, बुरी बीमारी भी आक्रांत को उसके पूरी तरह मर जाने से पहले ही घर से बाहर जाने पर मजबूर कर देती है

उमुरु आने वाले अजनबी वहाँ व्यापार और पैसे के लिए आते थे न कि कर्तव्यों के पालन के लिए क्योंकि ये तो वापस गाँव में भी बहुत थे जो उनका असली घर था ।

और अगर यह भी काफ़ी नहीं था तो उमुरु की धरती के पुत्र स्कूल तथा चर्च द्वारा प्रोत्साहित होकर अजनबियों की ही तरह व्यवहार कर रहे थे । वे अपने सभी पुराने कार्यों को भुलाकर सिर्फ़ रंगरेलियाँ मना रहे थे ।

शहर की यही हालत थी जब किटिक्पा उसे देखने आया और रहनेवालों से देवताओं को देय बलि की माँग की । उसमें लोगों के अन्दर भय पैदा कर सकनेवाले विश्वास का ज्ञान था । वह एक बुरा दैव था और उसे इस पर गर्व था । वह बुरा ना मान जाये इसलिए उसके द्वारा मारे गये लोग मारे नहीं माने जाते थे बल्कि

उन्हें प्रतिष्ठित माना जाता था और किसी को भी उनके लिए रोने की हिम्मत नहीं थी । वह पड़ोसियों और गाँव वालों के बीच आना-जाना रोक देता था । वे कहते थे "किटिक्पा उस गाँव में है" और तुरन्त पड़ोसी उस गाँव से नाता तोड़ लेते थे ।

जूलियस दुखी और चिन्ता से भरपूर था क्योंकि उसे जैनेट को मिले हुए एक हफ़्ता हो गया था, जैनेट जिससे वह विवाह करने जा रहा था । मा ने उसे बहुत ही नम्रता से समझाया था कि वह तब तक उसे मिलने न जाये जब तक कि जिओवाह का यह प्रकोप खत्म नही हो जाता" । (मा एक अत्यन्त धार्मिक प्रकृत्ति वाली थीं जो धर्म परिवर्तन करके क्रिश्चियन बनी थीं और जिनके जूलियस को अपनी इकलौती बेटी के लिए पसन्द करने का एक कारण यह था कि वह सी एम एस चर्च के कॉयर में गाता था) । "तुम्हें अपने कमरे में ही रहना चाहिए" उन्होंने धीमे स्वर में कहा था क्योंकि किटिक्पा ने किसी भी प्रकार के शोर और तेज़ आवाज़ की मनाही कर रखी थी । "क्या पता, तुम्हें, सड़क पर कौन मिल जाये । उस परिवार में भी वह है ।" उन्होंने अपनी आवाज़ और भी धीमी करते हुए सड़क के पार उस मकान की ओर चुपके से इशारा किया जिसके दरवाज़े पर ताड़ के एक पीले पत्ते ने रास्ता रोक रखा था । "उसने उनमें से एक को पहले ही प्रतिष्ठित कर दिया है और बाकियों को आज बड़ी सरकारी लॉरी में ले जाया गया है ।"

जैनेट कुछ दूर जूलियस के साथ चली और फिर रुक गई, इसलिए वह भी रुक गया । उनके पास एक-दूसरे को कहने के लिए कुछ भी नहीं था फिर भी वे एक दूसरे के साथ चलते रहे । फिर उसने 'गुड नाइट' कहा और जूलियस ने भी 'गुड नाइट' कहा । फिर उन्होंने एक-दूसरे से हाथ मिलाया जो बहुत अजीब था जैसे कि रात भर के लिए अलग होना कोई नयी और गम्भीर बात हो ।

वह सीधे घर नहीं गया क्योंकि वह इस अजीबोग़रीब विदाई के साथ—चाहे अकेले ही—और देर रहना चाहता था । शिक्षित होने के कारण उसे डर नहीं था रास्ते में कौन मिल जायेगा और वह नदी के किनारे जाकर इधर-उधर चहलकदमी करता रहा । वह

वहाँ बहुत देर तक रहा होगा क्योंकि जब रात के मुखौटे का गजर बजा तो वह वहीं था । तब वह तुरन्त घर की ओर चल दिया—कुछ चलते हुए, कुछ भागते हुए—क्योंकि रात के मुखौटे अन्धविश्वास का विषय नहीं थे, वे तो असली थे । वे अपनी रंगरेलियों के लिए रात को ही चुनते थे क्योंकि चमगादड़ों की तरह उनकी बदसूरती बहुत ही भयावह थी ।

जल्दी में उसका पाँव किसी ऐसी ठोस चीज़ पर पड़ा जो 'पट्' जैसी आवाज़ से टूट गई । वह रुका और उसने नीचे फुटपाथ पर देखा । चाँद अभी निकला नहीं था लेकिन आसमान पर एक ऐसी हल्की रोशनी थी जिससे लगता था कि उसका निकलना अधिक दूर नहीं था । इस आधी रोशनी में उसने देखा कि उसने चढ़ावे में चढ़ाये हुए एक अण्डे पर पाँव रख दिया था । मुसीबत के मारे किसी ने साँझ के झुटपुटे में यह चढ़ावा चौराहे पर रख दिया था । और उसने उस पर पाँव रख दिया था । उसके चारों तरफ़ रस्मी ताड़ के पत्ते भी रखे थे । लेकिन जूलियस ने उसे एक भिन्न दृष्टि से देखा, एक ऐसे घर के रूप में जहाँ वह भयावह रचनाकार अपने काम में व्यस्त था । उसने अपने जूते के सोल को रेत पर पोंछा और तेज़ी से चलने लगा । उसके मन में एक अस्पष्ट-सी बेचैनी का भाव था । लेकिन तेज़ी से चलने का कोई फ़ायदा नहीं था, तेज़ चलनेवाला मुखौटा सभी जगह मौजूद था । शायद चाँद के जल्दी निकल आने की आशंका से मुखौटा भी जल्दी मचा रहा था । शान्त रात में उसकी आवाज़ एक लपटदार तलवार की तरह ऊँची उठ रही थी । हालाँकि वह काफ़ी दूर थी लेकिन जूलियस को पता था कि उसके सामने दूरियाँ बेकार थीं । इसलिए वह सड़क के किनारे कोकोयाम के फ़ार्म में घुस गया और चौड़ी पत्तियों के आश्रय में पेट के बल पड़ गया । उसने अभी ऐसा किया ही था कि उसे प्रेतात्मा के डंडे की आवाज़ और उसके अजीबोग़रीब भाषण की आवाज़ सुनाई दी । वह काँपने लगा । आवाज़ें उस पर हावी होने लगीं, उसके चेहरे को गीली धरती में लगभग गाड़ने लगीं । और अब उसे पैरों की आवाज़ भी सुनाई दी । लगता था कि बीसियों

प्रेतात्माएँ एक साथ भाग रही हों । डर के कारण उसके सारे शरीर में पसीना छूट पड़ा और उसे उठकर भाग खड़े होने की इच्छा होने लगी । सौभाग्य से उसने स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण रखा...जल्दी ही हवा और पृथ्वी में यह हलचल—बिजली का कड़कना, मूसलाधार बारिश, भूचाल और तूफ़ान—सभी ख़त्म हो गया और दूर सड़क के दूसरी ओर खो गया ।

अगले दिन, चीफ़ क्लर्क के दफ़्तर में एक स्थानीय निवासी गई रात में कुछ सिरफिरे नौजवानों द्वारा बुज़ुर्गों की सलाह के विरुद्ध शोर-शराबे और तेज़ रफ़्तार वाले मुखौटे को शुरू करने की प्रक्रिया द्वारा किटिक्पा को उत्तेजित करने के खिलाफ़ शिकायत कर रहा था क्योंकि बुज़ुर्ग जानते थे कि इससे किटिक्पा को ग़ुस्सा आयेगा और फिर...

मुश्किल तो यह थी कि इन अवज्ञा करनेवाले नौजवानों ने कभी भी स्वयं किटिक्पा की शक्ति का अनुभव नहीं किया था । उन्होंने तो सिर्फ़ सुना भर ही था । लेकिन जल्दी ही उन्हें भी पता लग गया ।

वहाँ खिड़की पर खड़े, खाली पड़े हाट को निहारते हुए जूलियस ने उस भयावह रात का अनुभव फिर किया । एक ही हफ़्ता तो गुज़रा था लेकिन ऐसा लगता था कि जैसे वह कोई और ही जीवन रहा हो जहाँ वर्तमान और उस जीवन के बीच एक लम्बी खाई हो, ख़ालीपन की । हर दिन के गुज़रने पर यह खाई गहरी होती जा रही थी । खाई के इस पार जूलियस खड़ा था और दूसरी ओर मा और जैनेट जिन्हें भयावह रचनाकार प्रतिष्ठित कर चुका था ।

चिके का बचपन

सराह की आख़िरी सन्तान एक लड़का था जिसके जन्म से उसके पिता आमोस के घर में ख़ुशी की लहर दौड़ गई । नामकरण के समय उसे तीन नाम दिये गये—जॉन, चिके तथा औबियाजूलू । आख़िरी नाम का अर्थ था "अन्ततः मन शान्त हो गया है ।" इस नाम को सुनकर सुननेवाले को तुरन्त स्पष्ट हो जाता था कि इस नाम वाला या तो अकेली सन्तान था या इकलौता बेटा । चिके इकलौता बेटा था । उससे पहले उसके माँ-बाप की पाँच बेटियाँ पैदा हुई थीं ।

अपनी बहनों ही की तरह चिके की परवरिश भी "गोरे लोगों की तरह हुई थी" जिसका अर्थ था परम्परागत का विलोम । कई वर्ष पहले आमोस ने एक छोटी-सी घण्टी ख़रीदी थी जिसकी सहायता से सुबह-सवेरे सारे परिवार को वह प्रार्थना और भजन-गान के लिए बुलाता था और रात को सोने से पहले । यह भी गोरे लोगों के तौर-तरीकों में से एक था । सराह ने अपने बच्चों को सिखाया था कि वे पड़ोसियों के यहाँ कुछ न खाया करें क्योंकि वे "अपना भोजन मूर्तियों को चढ़ाते हैं" इस प्रकार उसने स्वयं को उस प्राचीन रिवाज़ से अलग कर लिया था जिसके अनुसार बच्चे सभी की साझी ज़िम्मेदारी माने जाते थे । बच्चों के माँ-बाप में सम्बन्ध कैसे भी हों, लेकिन बच्चे इकट्ठे खेलते थे और खाना मिल-बाँटकर खाते थे ।

एक दिन एक पड़ोसी ने चिके को रतालू का एक टुकड़ा देना चाहा । चिके उस समय सिर्फ़ चार वर्ष का था । लड़के ने नकारात्मक ढंग से सिर हिलाते हुए घमण्डी स्वर में कहा, "हम मूर्ति-पूजकों का खाना नहीं खाते ।"

पड़ोसिन को गुस्सा तो बहुत आया लेकिन उसने ज़ब्त कर लिया

और हल्के से बुदबुदायी कि गोरों की कृपा से दलित भी घमण्डी हो गये थे ।

वह ठीक ही कह रही थी । पुराने दिनों में स्वतन्त्र पैदा हुए लोगों के सामने एक दलित अपना मुँडा हुआ सिर नहीं उठा सकता था । वह वंश के कई देवताओं में एक का गुलाम होता था । उसे तो एकदम अलग रखा जाता था । वह पूजनीय नहीं बल्कि लोगों की घृणा का पात्र होता था, उस पर तो लगभग थूका जाता था । वह न तो स्वतंत्र पैदा हुए लोगों में शादी कर सकता था और न ही वंश की कोई उपाधि प्राप्त कर सकता था । मरने पर उसे अपने जैसों के साथ उजाड़ जंगल में दफ़ना दिया जाता था ।

अब यह सब बदल गया था, या बदलने लगा था, यहाँ तक कि एक दलित बच्चा अब स्वतंत्र पैदा हुए पर भी नाक-भौं सिकोड़ सकता था और मूर्ति-पूजकों के भोजन पर फ़ब्ती कस सकता था । गोरों की वास्तव में बहुत-सी उपलबिधियाँ थीं ।

चिके का पिता शुरू से दलित नहीं था, लेकिन उसने ईसाई धर्म के नाम पर एक दलित महिला से शादी की थी । इस प्रकार आँखें खुली रखते हुए स्वयं को दलित बना लेने के उदाहरण शायद ही सुनाई पड़ते हों । लेकिन आमोस तो पागल था ही । नये धर्म ने उसका सिर फेर दिया था । वह तो ताड़ी की तरह था । कुछ लोग उसे पीकर भी होशो-हवास में रहते थे । औरों का हर होश गुम हो जाता था ।

आमोस के इस पागल विवाह का समर्थन सिर्फ़ एक ही आदमी ने किया था और वह था गोरा मिशनरी मिस्टर ब्राउन जो एक लाल मिट्टी की दीवारों वाली तथा फूस के छप्पर वाली झोंपड़ी—पादरी का घर—में रहता था । लोग उसका बहुत आदर करते थे, इसलिए नहीं कि वह उपदेश देता था बल्कि इसलिए कि अपने एक कमरे में उसने दवाख़ाना खोल रखा था । ब्राउन के पादरीपन के कारण आमोस की स्थिती काफी सुदृढ़ हो गई थी । विवाह का निश्चय

कर लेने के कुछ दिन बाद आमोस ने यह ख़बर अपनी विधवा माँ को दी जिसने कुछ समय पहले ही अपना धर्म-परिवर्तन करके एलिज़ाबेथ का नाम अपना लिया था । समाचार के शॉक से वह तो लगभग मर ही गई । जब उसे होश आया तो उसने आमोस के सामने घुटने टेक उससे ऐसा न करने का अनुरोध किया. लेकिन उसने एक नहीं सुनी; उसके कानों में तो पिघला सीसा भरा हुआ था । अन्त में तंग आकर एलिज़ाबेथ तांत्रिक के पास गई ।

तांत्रिक बहुत ही शक्तिशाली तथा बुद्धिमान व्यक्ति था । अपनी झोंपड़ी के फ़र्श पर बैठे हुए, आँखों के चारों ओर चाक मले हुए । कछुए के खोल को बजाते हुए वह न सिर्फ़ वर्तमान को बल्कि जो बीत गया था और जो होनेवाला था उसे भी देख सकता था । उसे "चतुदृष्टि वाला व्यक्ति" कहा जाता था । जैसे ही उसने एलिज़ाबेथ को देखा उसने लड़ी में पिरोई कौड़ियों को फेंका और उसे बता दिया कि वह उससे किस कारण मिलने आई थी । "तुम्हारे बेटे ने गोरों का धर्म अपना लिया है । और तुमने भी, जबकि इस बुढ़ापे में तुम्हें बेहतर सोचना चाहिए था । तुम्हें आश्चर्य क्यों है कि उस पर पागलपन सवार है ? जो लोग दीमक-लगी लकड़ियों के गट्ठर इकट्ठा करते हैं उन्हें छिपकलियों के आने की अपेक्षा करनी चाहिए।" उसने कई बार अपनी कौड़ियों को इधर-उधर फेंका और अंगुली से रेत के कटोरे पर कुछ लिख दिया । इस बीच उसका न्वीफुलु—बोलनेवाला तूम्बा—बुड़बुड़ करता रहा । 'चुप बे' वह चिल्लाया और तूम्बा शान्त हो गया । तान्त्रिक ने फिर कुछ मन्त्र पढ़े और तेज़ी से एक के बाद एक कई कहावतें ऐसे दोहरा दीं जैसे उसके जादुई धागे से पिरोई कौड़ियाँ हों ।

अन्त में उसने इलाज सुना दिया । पूर्वज नाराज़ थे और उन्हें बकरे से शान्त किया जाना चाहिए । एलिज़ाबेथ ने रस्में पूरी कर दीं लेकिन उसका बेटा पागल ही रहा और उसने एक दलित लड़की से शादी कर ली जिसका नाम सराह था । बूढ़ी एलिज़ाबेथ ने अपना नया धर्म त्याग दिया और अपने लोगों के धर्म में वापिस लौट आई ।

हम अपनी मुख्य कहानी से भटक गये हैं । लेकिन यह जानना भी आवश्यक है कि चिके के पिता कैसे दलित बने, क्योंकि आजकल के दिनों में भी जब सब कुछ उल्टा-पुल्टा है । ऐसी कहानी बहुत ही असाधारण है । चलिए अब वापिस चिके के पास चलें जिसने चार वर्ष की ही छोटी उम्र में—या पाँच की—मूर्ति-पूजक भोजन खाने से इन्कार कर दिया था ।

दो वर्ष बाद वह गाँव के स्कूल में जाने लगा । वह अब दायें हाथ से सिर के पार बायें कान को छू सकता था, जिसका अर्थ था कि अब वह इतना बड़ा हो गया था कि गोरे लोगों के ज्ञान के रहस्य की गुत्थी को सुलझा सके । उसे अपनी नई स्लेट और पेन्सिल की बड़ी ख़ुशी थी और विशेषकर सफ़ेद कमीज़ और ब्राउन-खाकी निकर वाली स्कूली वर्दी की भी । लेकिन जैसे ही नये सत्र का पहला दिन नज़दीक आने लगा, उसके मन में अध्यापकों तथा बेंत की कई कहानियाँ घर करने लगीं । और उसे अपनी बड़ी बहन का एक गीत याद आया, गीत जिसमें कुछ बेचैन-सा कर देनेवाला भाव था :— 'ओने न्कूज़ी एवेलू पियागबुसी उमुआका'

ईबो भाषा में किसी बात पर ज़ोर देने के तरीकों में से एक है अतिशयोक्ति, इसीलिए हो सकता है गीत के अध्यापक ने बच्चों को बेंत मारते-मारते जान से न मार डाला हो । लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि उसने उन्हें बेंत मारे थे । और चिके इसके बारे में बहुत-कुछ सोचता रहा ।

बहुत छोटा होने के कारण चिके को उस क्लास में भेजा गया जिसे आध्यात्मिक क्लास कहते हैं और जहाँ बच्चे प्रश्नोत्तर गा-गा कर और कभी-कभी नाच-नाचकर याद करते हैं । उसे शब्दों से लगाव था और लय से लगाव था । धार्मिक शिक्षा के पाठ के दौरान क्लास एक दायरे में नाचते-नाचते अध्यापक का प्रश्न दोहराती थी । 'सीज़र कौन था ?' वह पूछ सकते थे और पैर पटकते-पटकते बच्चे यूँ गाते थे ।

'सीज़र बू एज़े रोम
ओन्ये नाची एनू ऊवा डुम'

उनके नाच को इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था कि बीसवीं शताब्दी में सीज़र सारी दुनिया का बादशाह नहीं था ।

और कभी-कभी वे अंग्रेज़ी में भी गाते थे । चिके को 'टैन्न ग्रीन बॉटल्स' बहुत पसन्द था । उन्हें शब्द सिखाये गये थे लेकिन उन्हें सिर्फ़ पहली और आखिरी लाइनें याद थीं । बीच का हिस्सा गुनगुनाया, हुम-हुमाया और बुदबुदाया जाता था :

'टैन ग्रिन बोट्र ऐंगिन ओन डार वार,
टैन ग्रिन बोट्र ऐंगिन ओन डार वार,
हम् हम् हम् हम् हम्
हम् हम् हम्, हम्, हम्,
ऐन टैन ग्रिन बोट्र ऐंगिन औन डार वार'

इस तरह पहला साल बीत गया । चिके को 'शिशु स्कूल' में पदोन्नत कर दिया गया, जहाँ अधिक गम्भीर काम होता था ।

हमें 'शिशु स्कूल' के समय में उसकी सारी गतिविधियों के बारे में जानने की आवश्यकता नहीं । वह तो अपने-आप में एक पूर्ण कहानी है । लेकिन वह कहानी तो दूसरे बच्चों की कहानी से भिन्न नहीं है । लेकिन प्राइमरी स्कूल में उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व दिखलाई पड़ने लगा । उसे गणित से सख़्त नफ़रत हो गई । लेकिन उसे कहानियाँ और गीत अत्यन्त प्रिय थे । और उसे अंग्रेज़ी शब्दों की ध्वनियाँ बहुत पसन्द थीं। चाहे उसके लिए उनका कोई अर्थ न भी हो । कुछ को सुनकर तो वह पुलकित हो उठता था । 'पैरीविन्कल' ऐसा ही शब्द था । उसे अब याद नहीं था कि उसने इसे कैसे सीखा था और यह क्या था । उसके मन में इस शब्द का एक अस्पष्ट-सा निजी अर्थ था और उसका सम्बन्ध परियों के देश से था । 'कॉन्सटेलेशन' एक अन्य ऐसा ही शब्द था ।

चिके के अध्यापक को लम्बे-लम्बे शब्द पसन्द थे । वह अत्यन्त ज्ञानी व्यक्ति के रूप में जाना जाता था । उसका प्रिय मनोरंजन ही था अपनी 'चेम्बर्स इटीमलजिकिल डिक्शनरी' में से जबड़ा-तोड़ शब्दों को ढूँढ कर उनकी नक़ल करना । अभी उसी दिन उसने अपनी क्लास में एक लड़के द्वारा देर से आने के कारण को अपने

लाजवाब ज्ञान से ध्वस्त करके 'वाह-वाह' करवाई थी ।उसने कहा था — "दीर्घसूत्रता आलसी व्यक्ति का बहाना है ।" उस के द्वारा पढ़ाये जानेवाले हर विषय में उसका ज्ञान झलकता था । प्रकृति पर उसके पाठ तो स्मरणीय थे । चिके को बीजों के बिखराव के तरीक़ों पर उसका पाठ हमेशा याद रहा । अध्यापक के अनुसार ये पाँच तरीक़े थे, आदमी द्वारा, पशुओं द्वारा, पानी द्वारा, हवा द्वारा तथा 'विस्फोटक प्रक्रिया' द्वारा । उन बच्चों को भी जिन्हें अन्य तरीक़े भूल गये, 'विस्फोटक प्रक्रिया' याद रहा ।

स्वाभाविक है चिके अध्यापक की विस्फोटक शब्दावली से बहुत प्रभावित हुआ । लेकिन शब्दों का उसपर जो जादुई असर पड़ता था वह कुछ और ही था । उसके 'न्यू मैथड रीडर' में पहले वाक्य बहुत ही सीधे-सादे थे लेकिन वे उसे एक अस्पष्ट-से उल्लास से भर देते थे । "एक बार एक जादूगर था । वह अफ़्रीका में रहता था । वह एक लैम्प लेने चीन गया ।" चिके ने इसे घर पर बार-बार पढ़ा और फिर उसके बारे में एक गीत बनाया । वह निरर्थक गीत था । उसमें 'पैरीविन्कल' भी घुस गया था और 'दमिश्क' भी । लेकिन गीत एक खिड़की की तरह था जिसमें से वह दूर एक अजीब जादुई दुनिया को देख सकता था । और वह खुश था ।